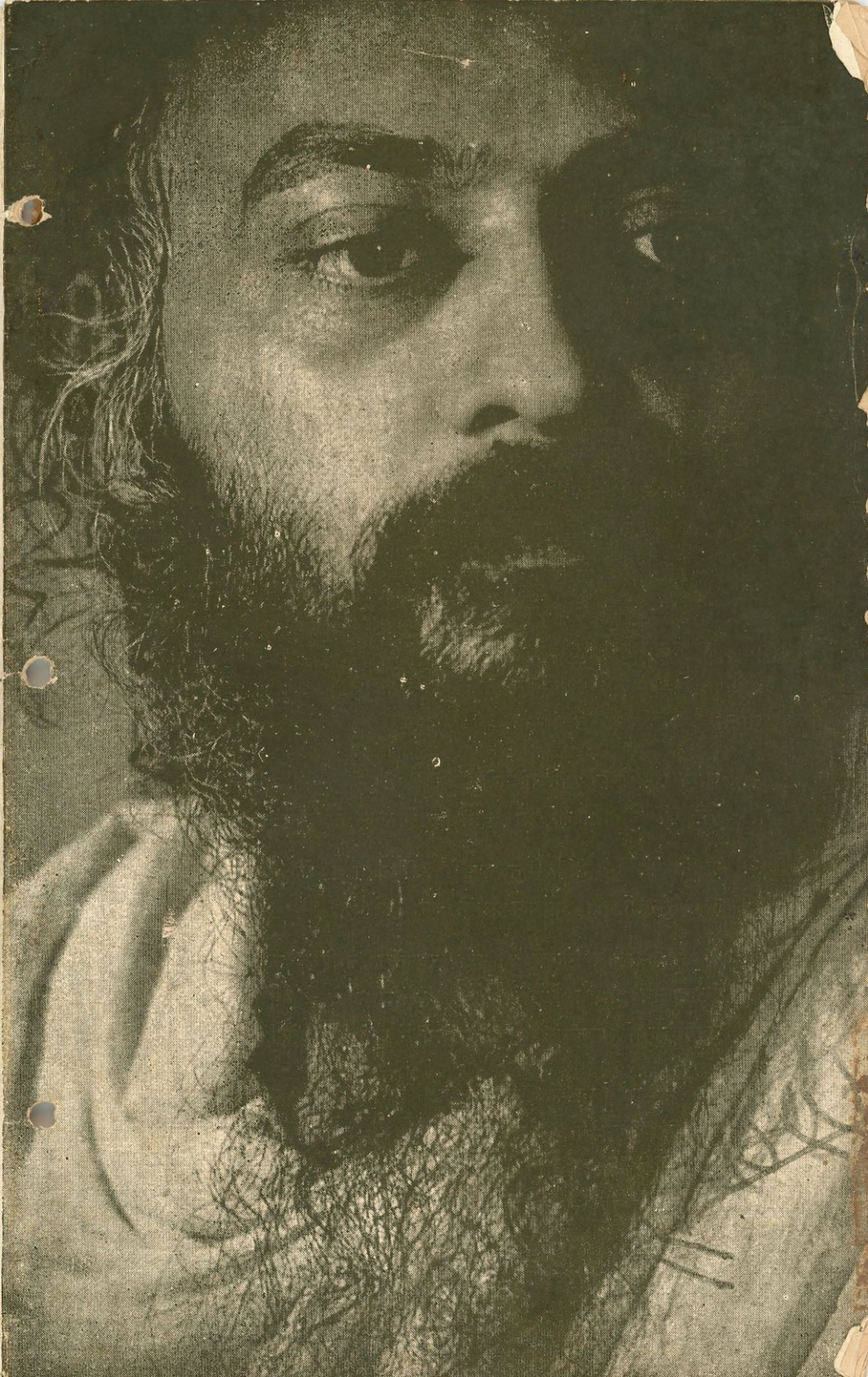

बहुजन हिताय बहुजन सुखाय

जीवन जागृति केन्द्र, अहमदाबाद द्वारा

अमृत प्रसारण

केन्द्र को सक्रिय करने के लिए आप क्या सहयोग दे सकते हैं? क्या आपको श्री रजनीश के विचारों एवं कार्यों को अग्रसर करने में आनन्द आता है? यदि हां, तो यह आनन्द सारे समाज में बांटने से अनेक गुना हो सकता है. आप भी उनके विचारों को देश के कोने-कोने में व घर-घर पहुंचाने में सहयोगी हो सकते हैं.

कई मित्र हमसे पूछते हैं कि केन्द्र का कार्य हमारे गांव अथवा मोहल्ले आदि में कैसे शुरू करें और आगे चलायें? हर व्यक्ति अपनी शक्ति, बुद्धि व समय के अनुसार योगदान दे सकता है. इसके लिए नित्य थोड़ा-सा समय देने से भी बहुत कुछ काम हो सकता है. निम्नलिखित प्रवृत्तियों से भी आप अपना कार्य शुरू कर सकते हैं:—

१. **ध्यान केन्द्र**-आप अपने मोहल्ले अथवा गांव में कुछ मित्र मिलकर ध्यान केन्द्र की शुरुआत करें और वहाँ नियमित ध्यान के लिए एकत्रित हों.

२. **अमृत टेप क्लब**-नियमित रूप श्री रजनीश जी की अमृतवाणी टेप द्वारा सुनवाने का कार्यक्रम प्रारंभ कर सकते हैं.

३. **अमृत पुस्तकालय**-केन्द्र का पूरा रजनीश साहित्य रखकर एक अमृत पुस्तकालय प्रारंभ कर के मित्रों को लाभ दे सकते हैं या फिर श्री रजनीश साहित्य खरीदकर पुस्तकालय में दान दे सकते हैं.

४. **पत्र–पत्रिकायें**-केन्द्र की ओर से प्रकाशित युक्रान्द, ज्योतिशिखा, ॐ, तथाता, योग-दीप, संन्यास आदि पत्रिकाओं के वार्षिक ग्राहक बनाकर केन्द्र को लाभ पहुंचाने में मदद कर सकते हैं. इनमें विज्ञापन देकर भी सहायता पहुंचाई जा सकती है.

शेष कव्हर तीन पर ▶

भगवान श्री रजनीश की सृजनात्मक जीवन दृष्टि की मासिक संकलन पत्रिका

अप्रेल १९७२

युक्रांद

वर्ष – ३ अंक – १९ : २०

मूल्य एक प्रति : १-०० रु.
,, वार्षिक : १२-०० रु.

युक्रान्द

अप्रेल
१९७२

मानसेवी--

सम्पादक :
अरविन्द कुमार

उप-सम्पादक :
आलोक पाण्डे
'आकुल' राजेन्द्र

सौज० सम्पादक :
कनु शेठ

व्यवस्थापक :
स्वामी धर्म सरस्वती

अनुक्रमणिका

पृष्ठ :

१. कण-कण अमृत — भगवान श्री के अमृत वचन
२. प्रेम-शक्ति — भगवान श्री की बोध कथाओं से
३. मेडीसिन और मेडीटेशन (एक प्रवचन) — संकलन : एन० जी० वखारिया
२५. My Journey Towards' Sannyas' — Swami Gurdayal Singh
३०. ज्योतिष-गणना (द्वितीय वार्ता) — संकलन : स्वामी योग चिन्मय
५९. नव-संन्यास अंतर्राष्ट्रीय के बढ़ते चरण — रजनीश-कीर्तन-मंडली : जबलपुर : एक झलक

गीत-काव्य

२७. उसके प्रति, जो है — स्वामी अगेह भारती
२८. मुक्त स्वर — प्रेमियों की काव्यानुभूतियां
५८. तुम बिन कौन उबारे ! — 'आकुल' राजेन्द्र

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक : अरविन्द कुमार, ७९०, राइट-टाउन, जबलपुर.
मुद्रण : अशेष प्रिंटर्स, ७८१, राइट-टाउन, जबलपुर. ☎ 2957

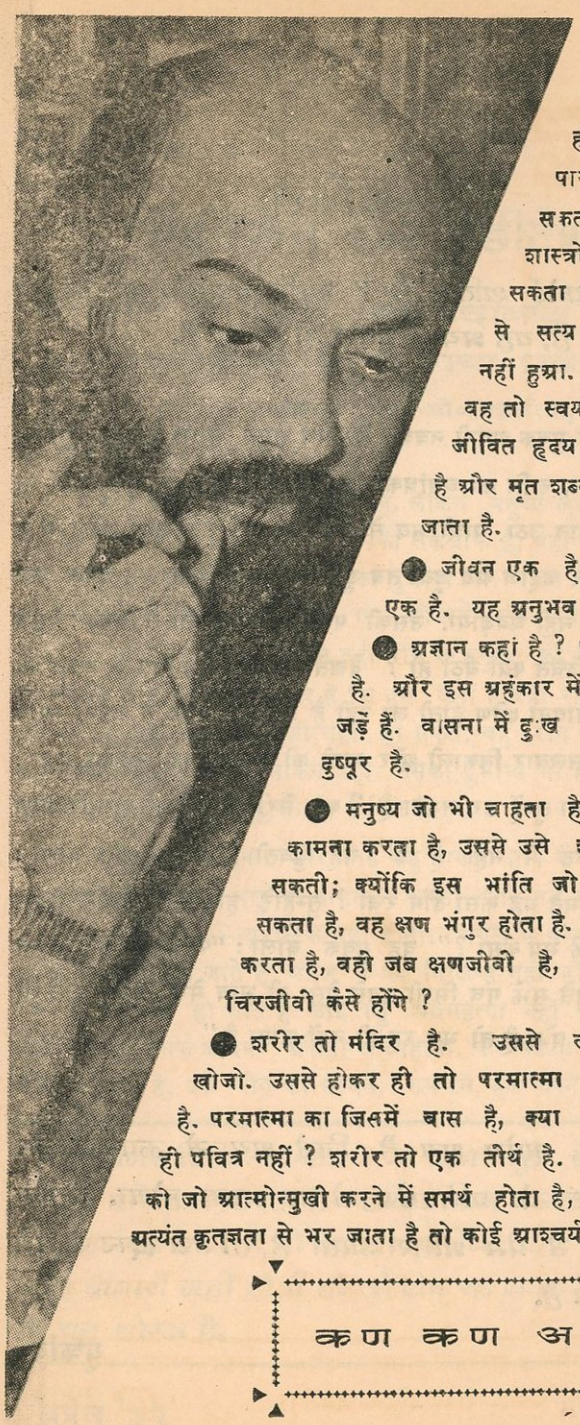

● सत्य को पाना है और शास्त्रों में खोजते हो ! इससे अधिक पागलपन और क्या हो सकता है ? सत्य से तो शास्त्रों का जन्म हो सकता है, किंतु शास्त्रों से सत्य का जन्म कभी नहीं हुआ. शास्त्रों में नहीं, वह तो स्वयं में है. लेकिन जीवित हृदय में तो अंधकार है और मृत शब्दों में उसे खोजा जाता है.

● जीवन एक है— समग्र जीवन एक है. यह अनुभव ही प्रेम है.

● अज्ञान कहां है ? अहंकार में अज्ञान है. और इस अहंकार में ही वासना की जड़ें हैं. वासना में दुःख है, क्योंकि वासना दुष्पूर है.

● मनुष्य जो भी चाहता है, और जिसकी कामना करता है, उससे उसे शांति नहीं मिल सकती; क्योंकि इस भांति जो भी पाया जा सकता है, वह क्षण भंगुर होता है. जो मन कामना करता है, वही जब क्षणजीवी है, तो उसके काम्य चिरजीवी कैसे होंगे ?

● शरीर तो मंदिर है. उससे लड़ो नहीं, उसमें खोजो. उससे होकर ही तो परमात्मा तक पहुंचा जाता है. परमात्मा का जिसमें वास है, क्या वह इस कारण ही पवित्र नहीं ? शरीर तो एक तीर्थ है. उसकी शक्तियों को जो आत्मोन्मुखी करने में समर्थ होता है, वह उसके प्रति अत्यंत कृतज्ञता से भर जाता है तो कोई आश्चर्य नहीं.

कण कण अमृत

प्रेम–शक्ति

प्रेम से बड़ी कोई शक्ति है ? नहीं, क्योंकि जो प्रेम को उपलब्ध होता है, वह भय से मुक्त हो जाता है।

● भगवान श्री की बोध कथाओं से ●

एक युवक अपनी नववधू के साथ समुद्र यात्रा पर था. सूर्यास्त हुआ, रात्रि का घनांधकार छा गया और फिर एकाएक जोरों का तूफान उठा. यात्री भय से व्याकुल हो उठे. प्राण संकट में थे और जहाज अब डूबा तब डूबा होने लगा किन्तु वह युवक जरा भी नहीं घबड़ाया. उसकी पत्नी ने आकुलता से पूछा : "तुम निश्चित क्यों बैठो हो ? देखते नहीं कि जीवन के बचने की संभावना क्षीण होती जा रही है ?" उस युवक ने अपनी म्यान से तलवार निकाली और पत्नी की गरदन पर रखकर कहा : "क्या तुम्हें डर लगता है ? क्या मेरी तलवार से तुम्हारे प्राण संकट में नहीं हैं ?" वह युवती हंसने लगी और बोली : "तुमने यह कैसा ढोंग रचा ? तुम्हारे हाथ में तलवार हो तो मुझे भय कैसा ?" वह युवक बोला : "परमात्मा के होने की जबसे मुझे गंध मिली तबसे ऐसा ही भाव मेरा उसके प्रति भी है. प्रेम है तो भय रह ही नहीं जाता है."

प्रेम अभय है। अप्रेम भय है। जिसे भय से ऊपर उठना हो उसे समस्त के प्रति प्रेम से भर जाना होगा। चेतना के इस द्वार से प्रेम भीतर आता है, तो उस द्वार से भय बाहर हो जाता है।

मेडीसिन और मेडीटेशन

भगवान श्री द्वारा अहमदाबाद मेडीकल कालेज में दिया गया प्रवचन

संकलन : एन० जी० वखारिया, केरा (गुज०)

मेरे प्रिय आत्मन्,

बीमारी तो मनुष्य पर आती है, लेकिन मनुष्य खुद भी एक बीमारी है. 'मैन इज़ ए डिस-ईज'. यही उसकी तकलीफ है, यही उसकी खूबी भी. यही उसका सौभाग्य है, यही उसका दुर्भाग्य भी. जिस अर्थों में मनुष्य एक परेशानी, एक चिंता, एक तनाव, एक बीमारी, एक रोग है—उन अर्थों में पृथ्वी पर कोई दूसरा पशु नहीं है.वही रोग ने मनुष्य को सारा विकास दिया है. क्योंकि रोग का मतलब यह है कि हम जहां हैं वहीं राजी नहीं हो सकते. हम जो हैं वही होने से राजी नहीं हो सकते. वह रोग ही मनुष्य की गति बना—रेस्टलेसनेस बना. लेकिन वही उसका दुर्भाग्य भी है, क्योंकि वह जैसा है परेशान है, अशांत है, दुःखी है, पीड़ित है.

मनुष्य को छोड़कर और कोई पशु पागल होने में समर्थ नहीं है. जब तक कि मनुष्य किसी पशु को पागल न करना चाहे तब तक कोई पशु अपने से पागल नहीं होता—न्यूरोटिक नहीं होता. जंगल में पशु पागल नहीं होते; सर्कस में पागल हो जाते हैं. जंगल में पशु विक्षिप्त नहीं होते. अजायबघर में, 'जू' में विक्षिप्त हो जाते हैं. कोई पशु आत्महत्या नहीं करता—'स्युसाइड' नहीं करता. सिर्फ आदमी अकेला आत्महत्या कर सकता है. यह जो मनुष्य नाम का रोग है, इस रोग को सोचने, समझने, हल करने के दो उपाय किये

अगर चिकित्सा-शास्त्र से हम पूछें बीमारी क्या है, तो वह परिभाषा करता है—डेफिनीशन करता है. उससे पूछें कि स्वास्थ्य क्या है तो वह धोखा देगा. वह कहता है जब कोई बीमारी नहीं होती तो जो शेष रह जाता है वह स्वास्थ्य है. यह धोखा है.

गये हैं. एक मेडिसन है उपाय—औषधिक और दूसरा ध्यान है उपाय—'मेडीटेशन'. ये दोनों एक ही रोग का इलाज हैं. इसे थोड़ा ऐसा समझना अच्छा होगा कि औषधिशास्त्र—मेडिसन मनुष्य के एक-एक रोग को अलग-अलग व्यवहार करता है. ध्यान मनुष्य को 'एज़ अ होल' बीमारी मानता है, एक-एक रोग को नहीं, ध्यान मनुष्य के व्यक्तित्व को बीमार मानता है, औषधिशास्त्र, मनुष्य के ऊपर बीमरियां आती हैं, चली जाती हैं—शारीरिक, ऐसा मानता है. लेकिन धीरे-धीरे यह दूरी कम होगी. और धीरे-धीरे 'मेडीकल' साइंस ने सोचना शुरू किया है कि 'डोंट ट्रीट दा डिज़ीज़, ट्रीट दा पेशेन्ट'. मत करो इलाज बीमारी का बीमार का इलाज करो. यह बड़ी कीमती बात है. क्योंकि इसका मतलब यह है कि बीमारी भी बीमार के जीने का एक ढंग है—'वे आफ लाइफ है.' हर आदमी एक-सा बीमार नहीं हो सकता. बीमारियां भी इन्डीवीजुएलिटी रखती हैं व्यक्तित्व रखती हैं. ऐसा नहीं है कि मैं क्षय रोग—टी० बी०—से बीमार पड़ूं, और आप भी पड़ें तो हम दोनों एक ही तरह बीमार होंगे. हमारी टी० बी० भी दो तरह की होगी; क्योंकि हम दो व्यक्ति हैं और हो सकता है कि जो इलाज मेरी टी० बी० को ठीक कर सके वह आपकी टी० बी० को ठीक न कर सके. इसलिये बात गहरे में बीमारी नहीं है, बहुत गहरे में बीमार है.

औषधिशास्त्र—मेडिसन—आदमी के ऊपर की बीमारियों को पकड़ता है. मेडीटेशन—ध्यान का शास्त्र—आदमी को गहराई से पकड़ता है. इसे ऐसा कह सकते हैं कि औषधि मनुष्य को ऊपर से स्वस्थ करने की चेष्टा करती है, ध्यान मनुष्य को भीतर से स्वस्थ करने की चेष्टा करता है. न तो ध्यान पूर्ण हो सकता है औषधिशास्त्र के बिना और न औषधिशास्त्र पूर्ण हो सकता है ध्यान के बिना. असल में आदमी चुंकि दोनों है—भाषा ठीक नहीं है यह कहना कि आदमी दोनों है. मनुष्य हजारों वर्षों से इस तरह सोचता रहा है कि आदमी का शरीर अलग है और आदमी की आत्मा अलग है. इस चिंतन के दो खतरनाक परिणाम हुए. एक परिणाम तो यह हुआ कि कुछ लोगों ने आत्मा को ही मनुष्य मान लिया, शरीर की उपेक्षा कर दी. जिन कौमों ने ऐसा किया उन्होंने ध्यान का तो विकास किया लेकिन औषधि का विकास नहीं किया. औषधि का विज्ञान न बना. शरीर की उपेक्षा कर दी गई. ठीक इसके विपरीत कुछ कौमों ने आदमी को शरीर ही मान लिया और उसकी आत्मा को इन्कार कर दिया. उन्होंने मेडीसन और औषधि का तो बहुत विकास किया, लेकिन ध्यान के संबंध में उनकी कोई गति न हो पायी. जबकि आदमी दोनों है एक साथ. कह रहा हूं कि भाषा में थोड़ी भूल हो रही है. जब हम कहते हैं कि दोनों है एक साथ तो ऐसा भ्रम जरा होता है कि दो चीजें हैं, जुड़ी हुई नहीं!

असल में आदमी का शरीर और आदमी की आत्मा एक ही चीज के दो छोर हैं. अगर ठीक से कहें तो हम यह नहीं कह सकते कि 'बॉडी प्लस सोल' ऐसा आदमी है. ऐसा नहीं, आदमी सायको-सोनेरीक है, या सोनेरी-सायकिक है. आदमी मनस्-शरीर है या शरीर- मनस् है, मेरी दृष्टि में आत्मा का जो हिस्सा हमारी इन्द्रियों की पकड़ में आ जाता है उसका नाम शरीर है और आत्मा का जो हिस्सा हमारी इन्द्रियों की पकड़ के बाहर रह जाता है उसका नाम आत्मा है. **अदृश्य शरीर का नाम आत्मा है, दृश्य आत्मा का नाम शरीर है.** ये दो चीजें नहीं हैं—ये दो अस्तित्व नहीं हैं. यह एक ही अस्तित्व की तरंग-अवस्थायें हैं. असल में दो—द्वैत, 'ड्यूएलिटी'—की धारणा ने मनुष्य जाति को बड़ी हानि पहुंचाई है. सदा हम दो की भाषा में सोचते रहे और मुसीबत हुई. पहले हम सोचते थे 'मैटर' और 'एनर्जी'. अब हम ऐसा नहीं सोचते. अब हम यह नहीं कहते कि पदार्थ अलग और शक्ति अलग अब हम कहते हैं 'मैटर इज़ एनर्जी'—अब हम कहते हैं, पदार्थ ही शक्ति. सच तो यह है कि यह पुरानी भाषा हमें दिक्कत दे रही है. पदार्थ ही शक्ति ऐसा कहना भी ठीक नहीं है. कुछ है, "एक्स" जो एक छोर पर पदार्थ दिखाई पड़ता है और दूसरी छोर पर एनर्जी, शक्ति दिखाई पड़ता है. ये दो नहीं हैं. यह एक ही ऊर्जा, एक अस्तित्व के दो छोर हैं.

ठीक वैसे ही **आदमी का शरीर और उसकी आत्मा एक ही अस्तित्व के दो छोर हैं.** बीमारी दोनों छोरों में से किसी भी छोर से शुरू हो सकती है. शरीर के छोर से शुरू हो सकती है और आत्मा के छोर तक पहुंच सकती है. असल में जो भी शरीर पर घटित होता है, उसकी 'वाइब्रेशन्स,' उसकी तरंगें आत्मा तक सुनी जाती हैं. इसलिये कई बार यह होता है कि शरीर से बीमारी ठीक हो जाती है और आदमी फिर भी बीमार बना रह जाता है. शरीर से बीमारी विदा हो जाती है और डॉक्टर कहता है कोई बीमारी नहीं है और आदमी फिर भी बीमार रह जाता है. और बीमार मानने को राजी नहीं होता है कि मैं बीमार नहीं हूं. चिकित्सक के जांच के सारे उपाय कह देते हैं कि अब सब ठीक है, लेकिन बीमार कहे चले जाता है कि सब ठीक नहीं है. इस तरह के बीमारों से डॉक्टर बहुत परेशान रहते हैं; क्योंकि उनके पास जो भी जांच के साधन हैं, वे कह देते हैं कि कोई बीमारी नहीं है. लेकिन कोई बीमारी न होने का मतलब स्वस्थ होना नहीं है. स्वास्थ्य की अपनी 'पॉज़िटिविटी' है. कोई बीमारी का न होना सिर्फ 'नेगेटिव' है. हम कह सकते हैं कि कोई कांटा नहीं है, लेकिन उसका यह मतलब नहीं है कि फूल है. कांटा नहीं है उससे सिर्फ इतना ही पता चलता है कि कांटा नहीं है, लेकिन फूल का होना कुछ बात और है. लेकिन चिकित्सा-शास्त्र अब तक

स्वास्थ्य क्या है इस दिशा में कुछ भी काम नहीं कर पाया. उसका सारा काम उस दिशा में है कि बीमारी क्या है ? तो अगर चिकित्सा-शास्त्र से हम पूछें, बीमारी क्या है, तो वह परिभाषा करता है—डेफिनीशन करता है. उससे पूछें कि स्वास्थ क्या है, तो वह धोखा देगा. वह कहता है, जब कोई बीमारी नहीं होती तो जो शेष रह जाता है, वह स्वास्थ है. यह धोखा है. यह परिभाषा नहीं है. क्योंकि बीमारी की स्वास्थ से परिभाषा कैसे की जा सकती है ? यह तो वैसे ही हुआ जैसे कांटों से कोई फूल की परिभाषा करे. यह तो वैसे ही हुआ जैसे कोई मृत्यु से जीवन की परिभाषा करे. यह तो वैसे ही हुआ जैसे कोई अंधेरे से प्रकाश की परिभाषा करे. यह तो वैसे ही हुआ जैसे कोई स्त्री से पुरुष की परिभाषा करे या तो पुरुष से स्त्री की परिभाषा करे.

नहीं चिकित्सा-शास्त्र अब तक नहीं कह पाया, 'व्हॉट इज हेल्थ ?'—स्वास्थ क्या है ? वह उतना ही कह सकता है, 'व्हॉट इज़ डिज़ीज ?'—बीमारी क्या है ? स्वभावत: ! उसका कारण है. उसका कारण यही है कि चिकित्सा-शास्त्र बाहर से पकड़ता है, बाहर से बीमारी ही पकड़ में आती है. वह जो भीतर है मनुष्य का, आंतरिक अस्तित्व—वह जो 'इनरमोस्ट बीइंग,' वह जो भीतरी आत्मा, स्वास्थ सदा वहीं से पकड़ा जा सकता है, इसलिये हिंदी का 'स्वास्थ' शब्द बहुत अद्भुत है. अंग्रेजी का 'हेल्थ' शब्द 'स्वास्थ' का पर्यायवाची नहीं है. 'हेल्थ' तो हीलिंग से बना है, उसमें बीमारी जुड़ी है. हेल्थ का तो मतलब है 'हील्ड'—जो बीमारी से छूट गया. स्वास्थ का मतलब नहीं है, जो बीमारी से छूट गया. स्वास्थ का मतलब है जो स्वयं में स्थित हो गया—'दैट वन हू हेज़ रीच्ड हिमसेल्फ'—वह जो अपने भीतर गहरे से गहरे में पहुंच गया. स्वस्थ का मतलब है, स्वयं में जो खड़ा हो गया. इसलिए स्वास्थ का मतलब हेल्थ नहीं है. असल में दुनिया की किसी भाषा में स्वास्थ के मुकाबले कोई शब्द नहीं है. दुनिया की सभी भाषाओं में जो शब्द है वह डिज़ीज वा नो-डिज़ीज है. स्वास्थ की धारणा ही हमारे मन में बीमारी न होने की है. लेकिन बीमार न होना जरूरी तो है पर स्वस्थ होने के लिए पर्याप्त नहीं है. 'इट इज़ नेसेसरी बट नॉट सफीशिएंट'—कुछ और भी चाहिए. दूसरे छोर पर वह जो भीतर हमारा अस्तित्व है वहां कुछ हो सकता है, बीमारी बाहर से शुरू हो तो भी भीतर तक उसकी प्रतिध्वनियां पहुँच जाती हैं. अगर मैं शांत झील में एक पत्थर फेंक दूं तो जहां पत्थर गिरता है, चोट वहीं पड़ती है, लेकिन तरंगे दूर झील के तट तक पहुँच जाती हैं, जहाँ पत्थर कभी नहीं पड़ा. ठीक जो हमारे शरीर पर घटना घटती है, तो तरंगें आत्मा तक पहुँच जाती हैं. और अगर चिकित्सा-शास्त्र सिर्फ शरीर का इलाज कर रहा है, तो उन तरंगों का क्या होगा जो दूर तट पर पहुंच गईं ? अगर हमने पत्थर फेंका है झील में

और हम उसी जगह पर केंद्रित हैं जहां पत्थर गिरा और पानी में गड्ढा बना, तो उन तरंगों का क्या होगा जो कि पत्थर से मुक्त हो गईं; जिनका अपना अस्तित्व शुरू हो गया ?

जब एक आदमी बीमार पड़ जाता है तो शरीर की चिकित्सा के बाद में बीमारी से पैदा हुई तरंगें उसकी आत्मा तक प्रवेश कर जाती हैं. इसलिए अक्सर बीमारी लौटने की ज़िद करती है. बीमारी लौटने की ज़िद उन तरंगों से पैदा होती है, जो उसकी आत्मा के अस्तित्व तक जुड़ जाती हैं और जिनका चिकित्सा शास्त्र के पास अब तक कोई उपाय नहीं है. इसलिए चिकित्सा शास्त्र बिना ध्यान के सदा ही अधूरा रहेगा. हम बीमारी ठीक कर देंगे, बीमार को ठीक न कर पायेंगे. वैसे डाक्टर के हित में है यह कि बीमार ठीक न हो ! बीमारी भर ठीक होती रहे, बीमार लौटता रहे !

दूसरा जो छोर है वहां से भी बीमारी पैदा हो सकती है. सच तो यह है कि मैंने कहा कि वहां बीमारी है ही, जैसा मनुष्य है. जैसा मनुष्य है वहां एक टेन्शन है ही भीतर. जैसा मैंने कहा, कोई पशु इस तरह डिज़ीज्ड नहीं है, इस तरह रेस्ट लैस नहीं है, इस तरह बेचैन और तनाव में नहीं है, उसका कारण है. किसी पशु के मस्तिष्क में कुछ और होने का ख्याल नहीं है. कुत्ता—कुत्ता है. उसे होना नहीं है. आदमी को आदमी होना है, है नहीं. इसलिए हम किसी कुत्ते को यह नहीं कह सकते कि तुम थोड़े कम कुत्ते हो. सब कुत्ते बराबर कुत्ते होते हैं. लेकिन किसी आदमी से स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि वह थोड़ा कम आदमी है. आदमी पूरा पैदा नहीं होता. आदमी का जन्म अधूरा है. सब जानवर पूरे पैदा होते हैं, आदमी अधूरा पैदा होता है. कुछ काम है जो उसे करना पड़ेगा तब वह पूरा हो सकता है. वह जो पूरा न होने की स्थिति है वह उसकी डिज़ीज है. इसलिए वह २४ घंटे परेशान है. ऐसा नहीं कि—आम तौर से हम सोचते हैं कि गरीब आदमी परेशान है. क्योंकि गरीबी है. लेकिन हमें पता नहीं है कि अमीर होने से परेशानी का तल बदलता है, परेशानी नहीं बदलती. सच तो यह है कि गरीब इतना परेशान कभी नहीं होता जितना अमीर परेशान हो जाता है. क्योंकि, गरीब को एक तो जस्टीफिकेशन होता है परेशानी का कि मैं गरीब हूं. अमीर को वह जस्टीफिकेशन भी नहीं रह जाता. वह कारण भी नहीं बता सकता कि वह परेशान क्यों है ? और जब परेशानी अकारण होती है, तब परेशानी भयंकर होती है. कारण से राहत मिलती है. कन्शोलेसन मिलता है. क्योंकि कारण से यह भरोसा होता है कि कल कारण को अलग भी कर सकेंगे. लेकिन जब कोई बीमारी अकारण खड़ी हो जाती है तब कठिनाई शुरू हो जाती है. इसलिए

गरीब मुल्कों ने बहुत दुख सहे हैं. जिस दिन ये अमीर होंगे उस दिन उन्हें पता चलेगा कि अमीर मुल्कों के अपने दुख हैं. हालाकि मैं पसंद करूंगा, गरीब के दुख की बजाय अमीर का दुख ही चुनने योग्य है. अगर दुख ही चुनना हो तो अमीर का ही दुख चुनना चाहिए. आज अमरीका जितना बेचैन और परेशान है, उतना आज पृथ्वी पर कोई भी नहीं है. जितनी सुविधा अमरीका के पास है, उतनी कभी किसी समाज के पास नहीं थी. असल में अमरीका में पहली दफे—'डिस-इल्यूज़नमेंट' हुआ. पहली दफे भ्रम टूट गया. अमरीका को पहली दफा पता चलना शुरू हुआ है कि कारण नहीं है. परेशानी कारण के वजह से नहीं है. आदमी परेशानी है. वह नई परेशानी खोज लेता है. वह जो उसके भीतर एक अस्तित्व है वह चौबीस घंटे मांग कर रहा है. उसकी जो मांग—जो है वह बेकार हो जाता है. जो मिल जाता है वह बेकार हो जाता है जो नहीं है वह आकर्षित करता है. वह जो नहीं है, उसकी पाने की निरंतर चेष्टा है.

नीत्से ने कहीं कहा है कि आदमी एक सेतु है. 'ए स्पेस बिटवीन टू इम्पासिबिलिटीज़.' दो असंभावनाओं के बीच में फैला हुआ पुल. निरंतर असंभव के लिए आतुर, पूरा होने के लिए आतुर. इस पूरे होने की आतुरता से सारे धर्म पैदा हुए और यह जानना उपयोगी होगा कि एक दिन धर्मगुरू और चिकित्सक पृथ्वी पर एक ही आदमी था. धर्मगुरू ही चिकित्सक था. पुरोहित ही चिकित्सक था. वह जो प्रीस्ट था वही डाक्टर था और आश्चर्य न होगा कि कल फिर स्थिति वही हो जाय. थोड़ा सा फर्क होगा. अब जो चिकित्सक होगा वही पुरोहित हो सकता है! अमरीका में वह घटना घटनी शुरू हो गई, क्योंकि पहली दफा यह बात अमरीका में साफ हो गई कि सवाल सिर्फ शरीर का नहीं है बल्कि यह भी साफ होना शुरू हो गया है कि अगर शरीर बिल्कुल स्वस्थ हुआ तो मुसीबतें और बढ़ जायेंगी—क्योंकि पहली दफे भीतर के स्तर पर जो रोग है, उसका बोध शुरू हो जाएगा. हमारे बोध के भी तो कारण होते हैं. अगर मेरे पैर में कांटा गड़ा होता है तो मुझे पैर का पता चलता है. जब तक कांटा पैर में नहीं गड़ता, पैर का पता नहीं चलता. और जब कांटा पैर में होता है, तो मेरी पूरी आत्मा 'ऐरो' हो जाती है—तीर बन जाती है पैर की तरफ. जैसे पैर को ही देखती है, कुछ और नहीं देखती. स्वाभाविक है. लेकिन पैर से कांटा निकल जाये, फिर यह आत्मा कुछ तो देखेगी. भूख तृप्त हो जाये, कपड़े ठीक मिल जायें, मकान व्यवस्थित हो जाये, जो पत्नि चाहिए,मिल जाये—हालांकि इससे बड़ा दुख नहीं है दुनिया में—जिनको चाही गई पत्नि मिल जाये, उनका दुख का अंत नहीं है. क्योंकि चाही गई पत्नि न मिलने से कम से कम आशा में एक सुख रहता है वह भी खो जाता है.

मैंने सुना है, एक पागलखाने के संबंध में. एक आदमी गया है उस पागलखाने को देखने. सुप्रिन्टेन्डेन्ट उसे घुमा रहा है, एक कटघरे में उसने पूछा कि इस आदमी को क्या हो गया है ? उस सुप्रिन्टेन्डेन्ट ने कहा : "यह पागल हुआ क्योंकि इस आदमी को जिस स्त्री से प्रेम था, वह उसे मिल नहीं पाई." दूसरे कटघरे में एक दूसरा आदमी सींकचे तोड़ने की कोशिश कर रहा है, छाती पीट रहा है, बाल नोंच रहा है. पूछा, इस आदमी को क्या हो गया है ? तो उस सुप्रिन्टेन्डेन्ट ने कहा कि इसको वही स्त्री मिल गई जो उसको (पहले को) नहीं मिल पाई ! यह इसलिए पागल हो गया है. पहला आदमी प्रेयसी न मिलने के कारण उसकी फोटो छाती से लगाकर आनंद में पागल था और दूसरा सिर फोड़ रहा था सीकचों में. धन्यभागी हैं वे प्रेमी जिनको उनकी प्रेयसियां नहीं मिल पाईं.

असल में जो हमें नहीं मिल पाता, उसके लिए हम सदा ही आशा बांधके जी पाते हैं. मिलते ही आशा टूट जाती है और हम खाली हो जाते हैं. जिस दिन चिकित्सक शरीर से आदमी को छुटकारा दिला देगा, उस दिन चिकित्सक को दूसरा काम पूरा करना ही पड़ेगा. जिस दिन हम आदमी को बीमारी से मुक्त करा देंगे उस दिन हम आदमी को पहिली दफे आध्यात्मिक बीमारी को पैदा करने की सिच्युएशन--स्थिति देंगे. वह पहली दफा भीतर परेशान होगा और सोचना शुरू करेगा कि अब सब ठीक हो गया...लेकिन कुछ भी ठीक नहीं है ? यह बहुत आश्चर्य की बात नहीं है कि हिन्दुस्तान के चौबीस तीर्थंकर राजाओं के बेटे हैं, बुद्ध राजा के बेटे हैं, राम, कृष्ण ये सब शाही परिवारों से आये हैं. इनकी बेचैनी शरीर के तल से समाप्त हो गई है, इनकी बेचैनी भीतर के तल से शुरू हो गई है.

मेडीसिन आदमी को ऊपर से ऐसी शरीर की व्यवस्था और बीमारी से मुक्त करने की चेष्टा है. लेकिन ध्यान रहे, **आदमी सब बीमारी से मुक्त होके भी आदमी होने की बीमारी से मुक्त नहीं होता.** वह जो आदमी होने की बीमारी है, वह असंभव की चाह है. वह जो आदमी होने की बीमारी है, वह किसी भी चीज से तृप्त न होना है. वह जो आदमी की बीमारी है, वह सदा जो मिल जाये उसे व्यर्थ कर देना है और जो नहीं मिला उसकी सार्थकता में लग जाना है.

वह आदमी होने की बीमारी का इलाज ध्यान है. बीमारियों का इलाज चिकित्सक के पास है, चिकित्सा के पास है—लेकिन वह जो आदमी होने की बीमारी है उस बीमारी का इलाज ध्यान के पास है. और उस दिन चिकित्सा शास्त्र पूरा हो सकेगा जिस दिन हम आदमी के भीतरी छोर को भी समझ लें

और उसके साथ भी काम शुरू कर दें. क्योंकि मेरी अपनी समझ ऐसी है कि भीतरी छोर पर वह जो बीमार आदमी बैठा हुआ है वह हजारों तरह की बीमारियां बाहर के छोर पर भी पैदा करता है. जैसा मैंने कहा, शरीर पर बीमारी पैदा हो तो उसके वाइब्रेशन्स, उसकी तरंगें अंतरात्मा तक पहुंच जाती हैं. अगर अंतरात्मा बीमार हो तो उसकी तरंगें भी शरीर के छोर तक आती हैं. इसीलिए तो दुनिया में हजारों तरह की चिकित्सायें चलती हैं. हजारों तरह की पैथीज हैं दुनिया में—यह हो नहीं सकता. यह होना नहीं चाहिए. अगर पैथोलाजी एक साइंस है, तो हजारों तरह की नहीं हो सकती. लेकिन हजारों तरह की हो सकती है क्योंकि आदमी की बीमारियां हजारों तरह की हैं. कुछ बीमारियों को ऐलोपैथी फायदा पहुंचा ही नहीं सकती. जो बीमारियां भीतर से बाहर की तरफ आती हों उनके लिए ऐलोपैथी एकदम बेमानी हो जाती है. जो बीमारियां बाहर से भीतर की तरफ जाती हैं, उनके लिए एलोपैथी बड़ी सार्थक हो जाती है. जो बीमारियां भीतर से बाहर की तरफ आती हों वे बीमारियां शारीरिक होती ही नहीं. शरीर पर केवल प्रगट होती हैं. उनके होने का तल सदा ही साइकिक या और गहरे में स्प्रिच्युअल होता है. या तो मानसिक होता है या आध्यात्मिक होता है. अब जिस आदमी को मानसिक बीमारी है, इसका अर्थ यह हुआ कि उसको शारीरिक चिकित्सा कोई फायदा नहीं पहुंचा सकेगी. शायद नुकसान पहुंचाए; क्योंकि चिकित्सा कुछ करेगी आदमी के साथ. और उसका कुछ करना अगर फायदा नहीं पहुंचाता तो नुकसान पहुंचायेगा. सिर्फ वही चिकित्सायें नुकसान नहीं पहुंचातीं जो फायदा भी नहीं पहुंचा सकतीं. जैसे होमियोपैथी कोई नुकसान नहीं पहुंचाती. लेकिन होमियोपैथी से फायदा होता है. नुकसान नहीं पहुंचा सकती, इसका यह मतलब नहीं कि होमियोपैथी से फायदा नहीं होता . फायदा होता है. फायदा होना दूसरी घटना है. ये दो चीजें हैं अलग-अलग. फायदा होता है. फायदा इसलिए होता है कि वह आदमी अगर बीमारी को मानसिक तल से पैदा कर रहा है, तो उस बीमारी के लिए फॉल्स मेडीसिन की जरूरत है. उसे झूठी मेडीसिन की जरूरत है, उसे सिर्फ भरोसा भर आ जाए. वह राख से भी आ सकता है. और अभी तो बहुत प्रयोग चलते हैं, जिसको आप "औषधि-आभास" कहते हैं. अगर दस मरीज एक ही तरह की बीमारी के मरीज हैं, उनमें तीन को एलोपैथी चिकित्सा दी जाय, तीन को होमियोपैथी दी जाय तीन को नेचरोपैथी दी जाय, तो बड़े मजे की बात यह है कि सब पैथियां बराबर ठीक करती हैं और बराबर मारती हैं. अनुपात में कोई बहुत फर्क नहीं पड़ता. तब थोड़ा सोचने जैसा मामला हो जाता है कि बात क्या है ?

मेरी दृष्टि में ऐलोपैथी अकेली वैज्ञानिक चिकित्सा है. लेकिन क्योंकि आदमी अवैज्ञानिक है, इसलिए वैज्ञानिक चिकित्सा अकेला काम नहीं करती. ऐलोपैथी अकेली विज्ञान के ढंग से आदमी के शरीर के साथ व्यवहार करती है. लेकिन आदमी चूंकि भीतर से काल्पनिक भी है, प्रोजेक्टिव भी है, प्रक्षेप भी करता है, इसलिए ऐलोपैथी पूरा काम नहीं कर पाती. सच तो यह है कि जिस मरीज पर ऐलोपैथी काम नहीं कर पाती, वह मरीज अवैज्ञानिक ढंग से बीमार है. बीमार होने का मतलब क्या है ? यह शब्द बड़ा अजीब सा लगेगा. क्योंकि वैज्ञानिक ढंग की चिकित्सा हो सकती है, अवैज्ञानिक ढंग की चिकित्सा हो सकती है. मैं आपसे कह रहा हूं कि अवैज्ञानिक ढंग से भी बीमार होना होता है. असल में जो बीमारी मनस् के तल से शुरू होती है और शरीर पर आती है वह वैज्ञानिक रूप से हल नहीं होती.

एक स्त्री को मैं जानता हूं. युवती है, उसकी आंखें अंधी हो गई हैं. लेकिन जो अंधापन था वह 'सायकोलाजिकल-ब्लाइन्डनेस' थी. उसकी आंखें सच में अंधी नहीं हो गई थीं. जानकारों ने कहा कि आंखें बिल्कुल ठीक हैं. लड़की धोखा दे रही है. लेकिन लड़की बिल्कुल धोखा नहीं दे रही थी. क्योंकि आप उसको आग की तरफ छोड़ दें, तो वह आग की तरफ भी चली जाती थी. वह दीवार से भी टकराती थी और सिर भी फोड़ लेती थी. वह लड़की धोखा नहीं दे रही थी. आंखें उसकी सच में ही अंधी हो गई थीं. लेकिन चिकित्सक की पकड़ के बाहर थी बीमारी. मेरे पास उसको लाये थे. मैंने उसको समझने की कोशिश की. पता चला कि किसी से उसका प्रेम है. और घर वालों ने उसके प्रेमी से उसका मिलना-जुलना बंद कर दिया था. जब मैं निरंतर पूछता रहा तो दो-चार दिन बाद उसने कहा कि मुझे तो सिवाय उसके, दूसरे किसी को देखने की इच्छा ही नहीं. यह संकल्प कि सिवाय उसके, अब देखना ही नहीं है किसी को, इतनी तीव्रता से अगर मन में उठे कि अब उसके सिवाय देखने का कोई अर्थ ही न रहा, तो आंखें 'साइकोलॉजीकली ब्लाइंड' हो जायंगी. आंखें अंधी हो जायंगी, आंखें देखना बंद कर देंगी. यह आंख की एनाटॉमी को देखके नहीं समझा जा सकेगा; क्योंकि आंख की एनॉटामी बिलकुल ही ठीक होगी, आंख का यंत्र बिलकुल ही ठीक होगा. सिर्फ आंख का देखने वाला जो परदा था, वह सरक गया. उसने हटा लिया अपना हाथ. पर हम रोज अनुभव करते हैं, लेकिन हमारे खयाल में नहीं है. हमारे शरीर का यंत्र तभी तक काम करता है, जब तक हम पीछे मौजूद होते हैं.

अब एक युवक खेल रहा है—हॉकी या फुटबाल के मैदान पर. उसके पैर में चोट लग गयी है. खून बह रहा है. उसे कोई पता नहीं है. सबको

दिखाई पड़ रहा है देखने वालों को, उसको भर दिखाई नहीं पड़ रहा है. फिर खेल बंद हो गया आधे घंटे बाद, वह पैर पकड़के बैठ गया. और चिल्ला रहा है कि मुझे चोट कब लग गयी ? बहुत दर्द है. पर आधा घंटा हो गया चोट लगे. हुआ क्या? इसके पैर में चोट लगी. इसके पैर का यंत्र बिल्कुल ठीक है; क्योंकि आधे घंटे बाद उसने खबर दी. आधे घंटे पहले खबर क्यों न मिल सकी ? उसकी अटेन्शन वहां मौजूद नहीं थी. उसका ध्यान खेल में था. और ध्यान इतना था खेल में कि पैर को होने लायक कोई ध्यान की मात्रा न बची थी जो पैर में दौड़ जाय. पैर खबर देता रहा होगा. पैर के स्नायुओं ने झटके दिये होंगे. पैर ने खटखटाये होंगे अपने तार. पैर ने अपने एक्स्चेंज को खबर दी होगी. लेकिन वह जो एक्स्चेंज पर आदमी था, वह सोया हुआ था. वह गहरी नींद में था या वह कहीं और मौजूद था. वह एब्सेंट था, वह उपस्थित नहीं था. आधे घंटे बाद जब वह आया वापस तब पता चल सका कि पैर में चोट है.

मैंने उनके घर के लोगों को कहा कि आप एक काम करें. मैं समझता हूं, उसने सोचा था कि उसकी आंख जिसे देखने के लिए है अगर आपने उसे देखने नहीं दिया तो उसने 'पासबिल स्यूसाइड' कर ली हैं—आंखों की आत्महत्या कर ली है. और कुछ नहीं हो गया है, आंशिक आत्महत्या में गुजर गई है यह लड़की. आप उसके प्रेमी को मिलने दें. उन्होंने कहा : इससे आंख का क्या सम्बन्ध ? मैंने कहा, एक कोशिश करके तो देखो. और जैसे ही उसको खबर कर दी गई कि उसके प्रेमी से मिलने की उसको आज्ञा है. और उसे खबर की गई कि पांच बजे उसका प्रेमी मिलने आयेगा. वह दरवाजे के बाहर आके खड़ी हो गई. उसकी आंख ठीक थी ! नहीं, यह धोखा नहीं है, डिसेप्शन नहीं है.

अब तो हिप्नोटिज्म ने प्रयोग किए हैं कि हम समझ सकते हैं कि धोखे का कोई उपाय नहीं है. यह मैं अपने किए हुए प्रयोग की बात कह रहा हूं. अगर ठीक से सम्मोहित व्यक्ति के हाथ में, गहरे सम्मोहन में गए व्यक्ति के हाथ में साधारण कंकड़ उठाके रख दिया जाए और कहा जाय कि अंगारा है, तो वह ठीक वैसा ही व्यवहार करेगा जो अंगारा के साथ करता है—फेंकेगा, चिल्लायेगा, चीखेगा कि मैं जल गया. यहां तक ठीक है, लेकिन हाथ पर फफोला भी आ जायगा तब दिक्कत शुरू होगी. अगर हाथ पर, मन में एक खयाल से कि अंगारा रख दिया है, फफोला आ सकता है, तो फिर उस फफोले का इलाज आपके शरीर से शुरू करना खतरनाक है. इस फफोले का इलाज मन की तरफ से शुरू करना पड़ेगा.

आदमी का एक ही छोर हमारे खयाल में है और इसलिए हमने धीरे-धीरे शरीर की बीमारियां तो कम कर लीं लेकिन मन की बीमारियां बढ़ती चली गयी हैं. अब तो, जो बहुत वैज्ञानिक भाषा में सोचते हैं, वे भी एक बात में राजी हैं कि कम-से-कम फिफ्टी-फिफ्टी का अनुमान हो गया है कि पचास प्रतिशत बीमारियां मानसिक हैं. हिन्दुस्तान में नहीं, क्योंकि मानसिक बीमारी के लिए मन का होना भी जरूरी है. हिन्दुस्तान में अभी भी पंचान्नवे प्रतिशत बीमारियां शारीरिक हैं. लेकिन अमरीका में अनुपात बढ़ता जा रहा है.

मानसिक बीमारी का मतलब यह है कि उसका जन्म होता है भीतर और वह फैलती है बाहर की तरफ. मानसिक बीमारी 'आउट-गोइंग' है, शारीरिक बीमारी 'इन गोइंग' है. अगर मानसिक बीमारी का आपने शारीरिक इलाज किया तो मानसिक बीमारी दूसरा रास्ता तत्काल खोजेगी. इसलिए मानसिक बीमारी के सिर्फ हम झरने बन्द कर सकते हैं एक जगह से, दूसरी जगह से, तीसरी जगह से; पर चौथी जगह से निकलेगी, पांचवीं जगह से निकलेगी. और जहां भी कमजोर हिस्सा होगा व्यक्तित्व का वहां से निकलनी शुरू हो जायगी. इसलिए चिकित्सक कई दफे बीमारी ठीक करने में सहयोगी नहीं होता; एक बीमारी की जगह हजार बीमारी बना देने में सहयोगी होता है. जो एक धारा में निकल सकती है बात, वह अनेक धाराओं से निकलने लगती है; क्योंकि जगह-जगह हम रुकावट लगा देते हैं.

ध्यान मेरे लिए दूसरे छोर की चिकित्सा है. स्वभावतः औषधि निर्भर करेगी पदार्थ पर, ध्यान निर्भर करेगा चेतना पर. ध्यान की कोई गोली नहीं हो सकती, हालांकि कोशिश चलती है. एल० एस० डी० है, मेस्कलीन है मरीजुआना है. हजारों उपाय चलते हैं कि ध्यान की भी हम कोई गोली बना लें. लेकिन ध्यान की कोई गोली हो नहीं सकती. असल में ध्यान की गोली बनाने की कोशिश वही पुरानी जिद है कि हम इलाज बाहर ही से करेंगे. सब इलाज हम बाहर ही से करेंगे. अगर भीतर चित्त भी रुग्ण होगा तो भी हम इलाज बाहर से ही करेंगे; इलाज हम भीतर से नहीं करेंगे. लेकिन मेस्कलीन हो, एल० एस० डी० हो, और-और तरह के ड्रग्स हों जो धोखा दे सकते हैं स्वास्थ्य का—आंतरिक स्वास्थ्य का, लेकिन वह आंतरिक स्वास्थ्य बना नहीं सकते. कोई रासायनिक ढंग से मनुष्य के अंतिम छोर पर पहुंच नहीं सकते. जितने हम भीतर जाते हैं, उतनी ही रासायनिक गति-विधि क्षीण होती चली जाती है. जितने ही हम मनुष्य के भीतर जाते हैं उतना ही 'फिजीकल, मेटीरियल एप्रोच' कम अर्थ के रह जाते हैं. 'नान-मेटीरियल एप्रोच' कहना चाहिए कि एक सायकिक—मानसिक—एप्रोच, लेकिन अभी तक नहीं हो पाया, कुछ 'प्रीज्युडिसिस' के कारण—कुछ पक्षपातों के कारण. और मजे

की बात है कि डॉक्टर दुनिया के दो-तीन 'मोस्ट आर्थोडाक्स प्रोफेशंस' में से एक हैं. जो लोग दुनिया में बहुत आर्थोडाक्स हैं, उनमें प्रोफेसर्स और डॉक्टर्स अग्रणी हैं. ये जल्दी पुरानी धारणायें नहीं छोड़ते. इसका कारण भी है, सर्व-स्वाभाविक कारण है. बड़ा स्वाभाविक कारण तो यह है कि डॉक्टर और प्रोफेसर्स अगर जल्दी पुरानी धारणायें छोड़ें, बहुत फ्लेक्सीबिल हों तो प्रोफे-सर्स बच्चों को सिखाने में मुश्किल में पड़ जायेंगे. चीजें सिद्ध होना चाहिए तो वे ठीक से सिखा पाते हैं. तय होना चाहिए, अनिश्चित नहीं होना चाहिए, तरल नहीं होना चाहिए, लिक्विड नहीं होना चाहिए, ठोस होना चाहिए—तो उनको सिखाते वक्त कान्फीडेंस होता है. और प्रोफेसर्स को जितनी कान्फीडेन्स की जरूरत होती है, उतनी चोर और डाकुओं को नहीं होती ! उसे आत्म विश्वास होना चाहिए कि जो वह कह रहा है, वह एब्सोल्यूटली ठीक है. और जिसको भी ऐसी प्रोफेशनल जरूरत है कि वह पूर्णरूप से ठीक है, वह आर्थोडाक्स हो जाते हैं. इससे भारी नुकसान पहुंचता है. क्योंकि शिक्षा सबसे कम आर्थोडाक्स होनी चाहिए नहीं तो विकास में बाधा डालेगी. इस-लिए दुनिया में कोई शिक्षक आम तौर से आविष्कारक नहीं होते. सारी युनिवर्सिटीज में इतने प्रोफेसर्स हैं, लेकिन आविष्कार युनिवर्सिटी के बाहर के लोग करते हैं; भीतर के नहीं. नोबल प्राइज पाने वाले सत्तर प्रतिशत के ऊपर लोग युनिवर्सिटी के बाहर के लोग हैं.

दूसरा धंधा जो बहुत ही आर्थोडाक्स भरा है, वह डाक्टर का है. उसका भी प्रोफेशनल कारण है; क्योंकि उसे बहुत जल्दी निर्णय लेने पड़ते हैं. मरीज अभी मर रहा है, अगर बहुत सोच-विचार करें, तो सोच-विचार तो हो जायगा, लेकिन मरीज नहीं बचेगा. अगर वह बहुत 'अन-आर्थोडाक्स' हो और बहुत नये-नये प्रयोग करता हो तो खतरा है. तत्काल जिसे उत्तर खोजने हैं, वह हमेशा पुराने ज्ञान पर निर्भर होते हैं, नये ज्ञान की झंझट में नहीं पड़ता. जिसे तत्काल रेडीमेड उत्तर चाहिए चौबीस घंटे, उसे हमेशा पुराने ज्ञान पर निर्भर रहना पड़ता है. इसलिये मेडीकल साइंस मेडीकल टीचर्स से करीब-करीब तीस साल पीछे चलता है. और इसलिए बहुत से मरीजों को बेकार मरना पड़ता है और परेशानी में पड़ना पड़ता है; क्योंकि सच में जो अब नहीं होना चाहिए वह होता चला जाता है. पर यह प्रोफेशनल दिक्कत है. और इसलिए एक मान्यता उसकी औषधि पर भरोसा है, केमिकल पर ज्यादा भरोसा है—बजाय चेतना के. कान्शसनेस से ज्यादा केमिस्ट्री महत्व-पूर्ण है. इसका बड़ा घातक परिणाम हो रहा है. क्योंकि जब तक केमिस्ट्री महत्वपूर्ण है, तब तक कान्शसनेस पर प्रयोग नहीं किये जा सकते.

इधर कुछ दो-चार प्रयोग की बात मैं करना चाहूंगा जिनसे खयाल आ सके. अब जैसे, मां से बच्चा पैदा हो तो 'पेनलेस चाइल्ड-बर्थ' पुरानी समस्या है. पुरानी समस्या है कि मां से बच्चा बिना दर्द के कैसे पैदा हो जाय? हालांकि धर्म-गुरु इसके खिलाफ हैं कि बिना दर्द के बच्चा पैदा हो. **असल में धर्म-गुरु इसके ही खिलाफ हैं कि दुनिया बिना दर्द की हो जाय.** क्योंकि दुनिया जितना बिना दर्द की होगी, धर्म-गुरु एकदम 'आउट आफ प्रोफेशन' हो जायगा—उसका कोई भी मतलब नहीं रह जायगा. दर्द है, दुःख है, पीड़ा है—तो पुकार है. शायद भगवान भी एक दिन निगलेक्टेड हो जाय, अगर दुनिया में दुख न हो. शायद ही कोई जाके प्रार्थना करे; क्योंकि हम दुःख में ही उसका स्मरण करते हैं. धर्मगुरु निरंतर खिलाफत में है. वह कहता है—मां को जो दर्द होता है बच्चे की प्रसव-पीड़ा में, वह नेचरल है, वह होना ही चाहिये—यह भगवान की व्यवस्था है, यह बात जुड़ी है. कोई भगवान की व्यवस्था बच्चे के जन्म के समय दर्द को नहीं है. चिकित्सक विश्वास करता है कि कोई दवा दे दी जाय, कोई केमीकल व्यवस्था की जाय, अनेस्थेशिया हो जिससे कि पेनलेस बर्थ हो. ऐसी चिकित्सा के जो उपाय हैं, वे शरीर से शुरू होते हैं, याने कि हम शरीर को ऐसी हालत में ला दें कि मां को पता न चले कि दर्द हो रहा है. स्वभावतः स्त्रियां खुद भी इसका प्रयोग कर रही हैं—हजारों साल से. इसलिए दुनिया में पचहत्तर प्रतिशत के करीब बच्चों को रात में पैदा होना पड़ता है, दिन में मुश्किल है पैदा होना; क्योंकि दिन में स्त्री बहुत सचेतन होती है. रात में नींद में सो जाती है—रिलेक्स हो जाती है, इसलिए सत्तर-पचहत्तर प्रतिशत बच्चों को सूरज की रोशनी में पैदा होने का मौका नहीं मिलता—उनको अंधेरे में ही पैदा होना पड़ता है. स्त्री नींद में होती है तो थोड़ी रिलेक्स हो जाती है तो बच्चे को जन्म देने में थोड़ी आसानी पड़ती है. मां बच्चे को जन्म के साथ ही बाधा देना शुरू कर देती है. बाद में तो बहुत बाधायें देती है. लेकिन जन्म के पहले क्षण से ही बाधायें देनी शुरू कर देती है. अब एक उपाय तो यह है कि हम एक केमिकल प्रयोग करें और शरीर को ऐसा शिथिल कर दें जैसा वह नींद में हो जाता है. यह उपाय काम में लाया जा रहा है, इसके अपने खतरे हैं. सबसे बड़ा खतरा तो यह है कि हम आदमी की चेतना पर जरा भी भरोसा नहीं करते. और धीरे-धीरे जब आदमी की चेतना पर भरोसा कम किया जाता है तो आदमी की चेतना खोती चली जाती है.

लोजिम नाम के एक चिकित्सक ने आदमी की चेतना पर भरोसा किया. और हजारों स्त्रियों को दुःख और दर्द से रहित बच्चे पैदा करवाने की व्यवस्था की है. यह 'कान्शस को-आपरेशन' की मेथड है कि जब बच्चा पैदा हो

तो मां मेडीटेटिवली—ध्यान पूर्ण ढंग से—बच्चे को जन्म देने में सहयोगी बने. वह राजी हो जाय—लड़े न, रेज़िस्ट न करे. जो दर्द है वह बच्चे के पैदा होने से नहीं होता; वह मां की लड़ाई से पैदा होता है. वह पूरे वक्त जन्म देने के यंत्र को सिकोड़ रही है. वह डर रही है कि दर्द होगा. भयभीत है कि बच्चा पैदा न हो जाय. यह 'फियर-सेन्टर्ड-रेजिस्टेंस' उसको—बच्चे को—पैदा होने से रोक रहा है और बच्चा पैदा होना चाह रहा है. इन दोनों के बीच लड़ाई चल रही है—मां और बेटे के बीच लड़ाई चल रही है. उस लड़ाई में दर्द है. दर्द स्वाभाविक नहीं है, सिर्फ संघर्ष है— रेजिस्टेंस है. इस रेजिस्टेंस को हम दो तरह से कम कर सकते हैं. शरीर की तरफ से हम मां को बेहोश कर दें. लेकिन ध्यान रहे, जो मां बेहोशी में अपने बच्चे को जन्म देगी वह पूरे अर्थों में मां कभी न होने पायेगी; क्योंकि उसका कारण है. **बच्चा जब पैदा होता है तो बच्चा ही पैदा नहीं होता, उसके साथ मां भी पैदा होती है—बच्चे का पैदा होना दोहरा जन्म है.** एक तरफ बच्चा पैदा होता है, तो दूसरी तरफ एक साधारण स्त्री मां बन जाती है, जो उसके पहले वह नहीं थी. अगर बेहोशी में बच्चा पैदा हुआ तो मां और उसके बच्चे के बीच का बुनियादी संबंध हमने विकृत किया है. **मां पैदा नहीं हो जायगी, नर्स रह जायगी पीछे.**

मैं राजी नहीं हूं कि केमीकल ढंग से या शारीरिक ढंग से मां की बेहोशी में बच्चे को जन्म दिया जाय. मां पूरी कांन्शस होनी चाहिए, अपने बच्चे के जन्म के क्षण में; क्योंकि उसी कांन्शसनेस में मां का भी जन्म होगा. अगर यह दूसरी बात सही मालूम पड़े, तो इसका मतलब यह हुआ कि मां की चेतना की ट्रेनिंग होनी चाहिए, बच्चे के जन्म के वक्त. मां को सोच लेना चाहिए कि जन्म के क्षण को वह ध्यानपूर्ण ढंग से ले. ध्यान के अर्थ मां के लिए दो होंगे. एक तो वह रेजिस्ट न करे, विरोध न करे. जो हो रहा है उसके होने में सहभागी हो. जैसे नदी बह रही है, जहाँ गड्ढा मिल जाता है, वहीं बह जाती है. जैसे हवायें बह रही हैं, जैसे वृक्ष के सूखे पत्ते गिर रहे हैं. कहीं कुछ खबर नहीं होती. वृक्ष से सूखा पत्ता नीचे गिर रहा है. ऐसे पूरी तरह जो घटना घट रही है, उसमें सहभागी हो—टोटल को-आपरेशन, पूर्ण सहयोगी. अगर माँ अपने बच्चे को जन्म देते वक्त पूरी तरह सहयोगी हो जाये, कोई विरोध न करे, कोई भय न करे और जन्म की जो घटना घट रही है, उसमें पूरे ध्यानपूर्ण होके रसलीन हो जाय तो पेनलेस बर्थ हो जायगी. दर्द उससे विदा हो जायगा. और यह मैं वैज्ञानिक आधारों पर कह रहा हूँ. हजारों प्रयोग किए गये हैं उस आधार के ऊपर. यह दर्दमुक्त हो जाएगी. और ध्यान रहे, इसके बड़े व्यापक परिणाम होंगे.

पहला तो जिससे हमें दर्द मिले, पहले ही क्षण में उसके प्रति हमारा दुर्भाव बनना शुरू हो जाता है. जिससे हमारा संघर्ष हो पहले ही क्षण में उससे हमारी दुश्मनी की यात्रा शुरू हो जाती है—उससे हमारी मैत्री के संबंध में बाधा पड़ जाती है. जिससे हमारा पहले ही कॉन्फ्लिक्ट शुरू हो गया हो, उसके साथ ऊपरी 'को-आपरेशन' बांधना बहुत मुश्किल हो जायगा. लेकिन जिस क्षण हम सहयोग से और सचेतन रूप से बच्चे को जन्म दे पायें—यह बड़े मजे की बात है, अब तक हमने 'प्रसव-पीड़ा' शब्द सुना है, 'प्रसव-आनंद' शब्द नहीं; क्योंकि आनंद कभी हुआ नहीं—लेकिन अगर पूर्ण सहयोग हो तो प्रसव-आनंद भी शुरू हो जायगा. तो मैं 'पेनलेस बर्थ' के पक्ष में नहीं हूं; ब्लिसफुल बर्थ के पक्ष में हूं. अगर हम चिकित्सा का उपयोग करें तो ज्यादा-से-ज्यादा—'एट द मोस्ट'—पेनलेस बर्थ हो सकता है, लेकिन ब्लिसफुल बर्थ नहीं. लेकिन अगर चेतना की तरफ से हम शुरू करें तो एक आनंदपूर्ण जन्म हो सकता है. और हम पहली ही घड़ी से मां और बेटे के बीच एक अन्तरसंबंध बांध सकें.

यह मैंने सिर्फ एक उदाहरण के लिये बात कही कि भीतर से भी कुछ किया जा सकता है. जब भी हम बीमार हैं तब हम सिर्फ बाहर से लड़ रहे हैं. भीतर से वह आदमी सच में बीमारी से लड़ने को राजी है या नहीं ? उसकी भी हमें कोई चिंता नहीं है. हो सकता है यह बीमारी निमंत्रित हो. निमंत्रित बीमारियां बड़ी संख्या में हैं. असल में बहुत कम बीमारियां हैं जो आती हैं. बहुत अधिक बीमारियां हैं जो बुलायी जाती हैं. लेकिन हमने निमंत्रण बहुत पहले दिया होता है—आती हैं बहुत देर से, इसलिए हम संबंध नहीं जोड़ पाते. हजारों साल तक हजारों कौमें दुनिया में ऐसी थी जिनको यह खयाल नहीं था कि काम-संभोग से बच्चे के पैदा होने का कोई भी संबंध है; क्योंकि नौ महीने का फासला था. कार्य-कारण को कार्य के असर से इतनी दूर रखना मुश्किल था. तो काम-संभोग से बच्चे के पैदा होने का खयाल बहुत कम कौमों को था. फिर सभी काम-संभोग बच्चे के पैदा होने में फलित नहीं होते, इसलिये भी कोई वजह नहीं थी सोचने की. यह तो बहुत बाद में खयाल आया कि वह जो नौ महीने पहले घटना घटी है, वह नौ महीने बाद फलित हो रही है. उसके साथ 'काज़ एण्ड इफेक्ट' का संबंध जोड़ा जाता है. हम भी अपनी बीमारियों को कभी बुलाते हैं, कभी वे आती हैं. इसमें फर्क पड़ जाता है, इसलिये हम संबंध जोड़ नहीं पाते.

अब एक आदमी के सम्बन्ध में मैंने सुना है कि वह 'बेन्करप्ट' होने की हालत में है. उसकी हालत दिवाला निकल जाने की है. वह बाजार

जाने से डरता है, दुकान जाने से डरता है, रास्ते से निकलने से डरता है. अचानक एक दिन सुबह अपने बाथरूम से निकल रहा है और गिर पड़ा और पैरेलाइज्ड हो गया. उसको लकवा लग गया. अब उसकी सब चिकित्सा चल रही है, लेकिन हम यह सोच नहीं पा रहे हैं कि यह आदमी पैरेलाइज्ड होना चाहता था. इसने कान्शसली ऐसा सोचा या नहीं यह सवाल नहीं है. इसने ऐसी धारणा बनाई या नहीं यह सवाल नहीं है कि लकवा उसे लग जाय. शायद ऐसी कोई धारणा नहीं बनाई. लेकिन कहीं चित्त में, गहरे में—अनकान्शस में, यह चाहता था कि बाजार न जाना पड़े, दुकान न जाना पड़े, रास्ते पर न निकलना पड़े.

दूसरे वह यह भी चाहता था कि किसी तरह उस पर आक्रमण बन्द हो और सहानुभूति शुरू हो—यह उसकी गहरी चाह थी. अब इसका शरीर उसको सहयोग देगा. शरीर सदा हमारे मन के पीछे छाया की तरह चल रहा है. वह सहयोग देगा. मन इंतजाम कर देगा. असल में मन के इंतजाम का हमें पता नहीं. अगर आप दिन भर उपवास करें तो आप रात भोजन करेंगे. मन रात में इंतजाम कर देगा सपने में. वह कहेगा—दिन भर भूखे रहे बहुत परेशान हुए, चलो राजा के घर निमंत्रण करवा देता हूं. तो रात आप भोजन कर लेंगे. मन इंतजाम कर देगा. वह कहेगा जो शरीर से नहीं हो पाया वह मन से किये देते हैं. रात सपने में हम अधिकतम ऐसे ही देख रहे हैं, जो सब्स्टीट्यूट हैं. जो हम दिन में नहीं कर पाये वह हम रात कर रहे हैं. मन इंतजाम कर रहा है. अगर रात में आपको जोर से खयाल उठा है कि पेशाब कर आऊं तो मन घंटी बजा रहा है. वह कुछ इंतजाम करेगा. वह आपको बाथरूम भेज देगा सपने में. और आपके जो ब्लेडर पर जोर पड़ना शुरू हुआ है, खयाल में आ जायगा कि ठीक है बाथरूम हो आये हैं, ठीक हो गया. नींद न टूटे, इसलिए मन इंतजाम कर देगा. मन चौबीस घंटे आपकी जाने-अनजाने इच्छाओं के लिए इंतजाम कर रहा है.

अब यह आदमी लकवा खाके गिर गया. अब हम उसका इलाज करने को लगे हुए हैं. हमारी सब दवाईयों के इसे नुकसान पहुंचाने की पूरी संभावना है, क्योंकि उसको लकवा है ही नहीं. यह निमंत्रित बीमारी है. अगर हम लकवा किसी तरह ठीक भी कर दें तो यह दूसरी बीमारी पैदा करेगा, यह तीसरी बीमारी पैदा करेगा, यह चौथी बीमारी पैदा करेगा. असल में जब तक यह बाजार जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाता है तब तक उसकी बीमारियां पैदा होती चली जायेंगी. और बीमार होते ही यह पायेगा कि सारी स्थिति बदल गई. अब वह कहता है कि बेन्करप्ट होने के लिए जस्टीफाइड है.

मैं क्या कर सकता हूं ? लकवा लग गया है. अब यह कह सकता है किसी कर्ज़दार को, भाई कैसे चुका सकता हूं ? देखिए यह मेरी हालत ! सच तो यह है जब लेने वाला उसके सामने आयेगा तो खुद ही शर्म अनुभव करेगा कि उससे कैसे मांगे ? उसकी पत्नी उसकी ज्यादा सेवा करेगी, बेटे ज्यादा पैर दबायेंगे, मित्र देखने आने लगेंगे, उसकी खाट के पास लोग बैठेंगे.

असल में जब तक कोई बीमार न पड़े, हम कभी उसे प्रेम करते ही नहीं. तो जिसको भी प्रेम पाने की इच्छा हो, उसे बीमार बनना पड़ता है. स्त्रियां अक्सर बीमार पड़ी रहती हैं, उसका कुल कारण इतना है कि बीमारी उनके लिये प्रेम पाने का रास्ता है. वे जानती हैं कि पति को रोकने का और कोई उपाय नहीं है. पत्नी नहीं रोक पाती है, बीमारी रोक पाती है. तो एक दफे पता चल जाय और इसका खयाल मन में बैठ जाय तो जब भी सहानुभूति चाहिये होगी, हम बीमार रहने लगेंगे. असल में बीमार के साथ सहानुभूति बताना खतरनाक है. बीमार का इलाज करना ठीक है. **सहानुभूति बताना खतरनाक है; क्योंकि सहानुभूति से आप उसकी बीमारी में रस पैदा कर रहें हैं, जो कि खतरनाक सिद्ध होता है.**

अब यह आदमी लकवा खाके गिर पड़ा है. इसका कोई इलाज उसको ठीक नहीं कर सकता; दूसरी बीमारियां बदल लेगा, बस; क्योंकि लकवा इसकी बीमारी नहीं है, लकवा इसका भाव है. पक्षाघात मानसिक है. इस संबंध में घटनायें है कि ऐसे लकवा वाले लोग के घर में आग लग गई. वे दो साल से लकवे में पड़े थे—उठ नहीं सकते थे. घर में आग लगी, सारे घर के लोग बाहर पहुंच गये तब घर के लोगों को पता चला कि अरे ! उनका क्या होगा—लेकिन देखा कि वह चले आ रहे हैं ! वे भागे चले आ रहें हैं जो कि उठ भी नहीं सकते थे. और जब घर के लोगों ने कहा कि आप और चल रहे हैं ! तो उस आदमी ने कहा—"मैं चल कैसे सकता हूं ?" वह वापस गिर गया.

इसको ऐसा क्यों हुआ ? नहीं, ऐसा नहीं कि यह धोखा दे रहा है. यह धोखा नहीं दे रहा है. बीमारी 'माइंड-ओरिएन्टेड' है; 'बॉडी-ओरिएन्टेड' नहीं है. बस, इतना ही फर्क है. इसलिए जब भी कोई चिकित्सक मरीज को कहता है कि तुम्हारी मानसिक बीमारी है, तो मरीज को अच्छा नहीं लगता; क्योंकि मानसिक बीमारी में ऐसा भाव जो लगता है कि तुम नाहक ही बीमारी दिखला रहे हो. यह बात गलत है. कोई आदमी नाहक बीमारी नहीं दिखला रहा है. बीमारी के कारण भी हैं. और बीमारी के मानसिक कारण उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने महत्वपूर्ण शारीरिक कारण हैं; बल्कि शायद ज्यादा महत्वपूर्ण हैं. इसलिए किसी मरीज को भूलके भी यह कहना कि

तुम्हें मानसिक बीमारी है—तुम 'मेंटली इल' हो, चिकित्सक का दुर्व्यवहार है. इससे वह बीमार ठीक नहीं होता. इससे सिर्फ चिकित्सक के खिलाफ होगा; क्योंकि अब तक हम मानसिक बीमारी के सम्बन्ध में सद्भाव पैदा नहीं कर पाये. अगर मेरे पैर में चोट है तो सब सहानुभूति दिखायेंगे. लेकिन अगर मेरे मन में चोट है तो लोग कहते हैं कि यह तो मानसिक बीमारी है, जैसे कि मैंने कोई गलती की है. पैर में चोट होती तो सहानुभूति भी मिलती, लेकिन मानसिक बीमारी की जैसे मेरी कोई भूल है. नहीं, भूल नहीं है.

मानसिक बीमारी का अपना तल है. लेकिन चिकित्सक उसको स्वीकार नहीं करता है. नहीं कहता है, इसलिये कि उसके पास सिर्फ शारीरिक चिकिसा का उपाय है और कोई कारण नहीं है. वह कहता है, यह बीमारी नहीं है. असल में उसे कहना चाहिये कि मेरे हाथ के भीतर नहीं है. तुम और तरह का चिकित्सक खोजो या मुझे और तरह का चिकित्सक बनना पड़ेगा.

इस आदमी को भीतर से बाहर की तरफ आने वाला इजाज चाहिये. और हो सकता है बहुत छोटी-सी बात इसकी भीतर की जिंदगी बदल दे.

ध्यान मेरे लिये भीतर से बाहर की तरफ आने वाली चिकित्सका है. बुद्ध से किसी ने जाके कहा है एक दिन— "आप कौन हैं—दार्शनिक हैं, विचारक हैं, संत हैं, योगी हैं, कौन है ?" बुद्ध ने कहा— "मैं सिर्फ एक वैद्य हूं. मैं एक चिकित्सक हूं— 'जस्ट अ फिज़ीशियन' !" बुद्ध का उत्तर बहुत अद्भुत है. सिर्फ एक चिकित्सक—भीतर की बीमारियों के संबंध में कुछ मुझे पता है वह मैं तुमसे कहता हूं.

जिस दिन हमें यह खयाल आ जाय कि भीतर की बीमारियों के संबंध में कुछ करना ही पड़ेगा, अन्यथा बाहर की बीमारी न तो हम मिटा सकते हैं पूरी तरह, न समाप्त कर सकते हैं, उसी दिन हम पायेंगे कि रिलीजन और साइंस करीब आने शुरू हो गये—उसी दिन हम पायेंगे कि चिकित्सा और ध्यान करीब आने शुरू हो गये. और मेरी अपनी समझ यह है कि इस सेतु को बनाने में चिकित्सा जितना बड़ा काम कर सकती है उतना दूसरी कोई साइंस नहीं करेगी. केमिस्ट्री को रिलीजन के पास आने की अभी कोई वजह नहीं है, इसी तरह फिजिक्स को, गणित को रिलीजन के पास आने की कोई वजह नहीं है. अभी गणित बिना धर्म के रह सकता है. मैं सोचता हूं सदा रह सकेगा; क्योंकि गणित कभी भी ऐसी स्थिति में पहुंचे जहाँ उसको धर्म की जरूरत पड़ जाय ऐसा मुझे दिखाई नहीं पड़ता या ऐसा कोई क्षण आ जाय जहाँ गणित को ऐसा लगे कि बिना धर्म के गणित विकसित नहीं होगा, ऐसा मैं कन्सीव नहीं कर पाता. कभी नहीं आयेगा. गणित अपने खेल को जारी रख

सकता है अनन्त तक; क्योंकि गणित एक खेल है. गणित जिंदगी नहीं है. लेकिन चिकित्सक खेल में नहीं है, जिंदगी के साथ है. चिकित्सक ही शायद पहला ब्रिज बनेगा रिलीजन और साइंस के बीच. बन रहा है, विकसित समझदार मनुष्यों में बनना शुरू हो गया. क्योंकि चिकित्सक को आदमी के साथ व्यवहार करना है. जैसा कि कार्ल मुस्ताफ जुंग ने मरने के पहले कहा कि मैं एक चिकित्सक की हैसियत से कह सकता हूं कि चालीस साल की उम्र के बाद जितने मरीज मेरे पास आये, बुनियादी रूप से उनकी बीमारी धर्म का अभाव था . बहुत तकनीकी बात है. अगर उनको किसी तरह का धर्म दिया जा सके तो वे स्वस्थ हो जायं. यह कुछ समझाने जैसा है. जैसे ही व्यक्ति की जिंदगी ढलनी शुरू होती है—पैंतीस साल तक उम्र चढ़ती है, उसके बाद उम्र ढलनी शुरू हो जाती है, तो हो सकता हैं पैंतीस साल तक ध्यान की कोई जरूरत मालूम न पड़े; क्योंकि आदमी 'बॉडी-ओरिएन्टेड' है, अभी चढ़ रहा है शरीर. अभी हो सकता सब बीमारियां शरीर की हों. लेकिन पैंतीस साल के बाद बीमारियाँ नया रुख लेंगी; क्योंकि अब जिंदगी मौत की तरफ चलनी शुरू हो गयी. और जब जिंदगी बढ़ती है तो बाहर की तरफ फैलती है और जब आदमी मरता है तो भीतर की तरफ सिकुड़ता है. बुढ़ापा भीतर की तरफ सिकुड़ जाता है. सच तो यह है कि बूढ़े आदमियों की सारी बीमारियों में बहुत गहरे में मृत्यु होती है. आम तौर पर लोग कहते हैं कि फलां आदमी बीमारी के कारण मर गया. मैं मानता हूं इससे ज्यादा उचित होगा कि **फलां आदमी मरने के कारण बीमार हो गया.** असल में मरने की संभावना हजार तरह की बीमारियों के लिये 'वल्नरेबिलिटी' पैदा कर देती है. जैसे मुझे लगता है कि मैं मर जाऊंगा मेरे सब द्वार खुल जाते हैं बीमारियों के लिये—मैं उनको पकड़ लेता हूं. अगर एक आदमी को पक्का हो जाय कि वह कल मर जायगा, तो बिल्कुल स्वस्थ आदमी बीमार पड़ जायगा. सब तरह ठीक था, सब तरह की रिपोर्ट ठीक थी, ऐक्स-रे ठीक था, उसका ब्लडप्रेशर ठीक था, उसकी हृदय-गति ठीक थी. स्टेथेस्कोप सब ठीक कहते थे. लेकिन इसे पक्का बता दिया जाय कि वह चौबीस घन्टे बाद मर जायगा, आप अचानक पायेंगे कि उसने हजारों बीमारियां पकड़नी शुरू कर दीं. चौबीस घन्टे में इतनी बीमारियां पकड़ लेगा जितनी कि चौबीस जिंदगी में पकड़ना मुश्किल था. क्या हो गया इस आदमी को ? वह ओपन हो गया बीमारी के लिये—अब उसने रेजिस्टेंस छोड़ दिया, जब मरना ही है. तो उसके भीतर जो चेतना की दीवार, वह जो चेतना परिधि थी बीमारी के प्रति, उससे लौट गया—**अब वह मरने के लिये राजी हो गया, तो बीमारी आनी शुरू हो गयी. इसलिये रिटायर्ड आदमी जल्दी मर जाता है.**

और रिटायर्ड आदमी को रिटायर्ड होने के पहले ठीक से समझ लेना चाहिये. पांच-छः साल उम्र का फर्क पड़ता है. जो आदमी सत्तर साल में मरता है वह पैंसठ में मरेगा, जो अस्सी में मरता हो वह पचहत्तर में मर जायगा. और बाकी वक्त रिटायरमेंट के जो दस-पन्द्रह वर्ष गुजारेगा वह मरने की तैयारी है. वह और कोई काम नहीं करेगा; क्योंकि जैसे ही एक दफा उसे पता चलेगा कि वह जिंदगी के लिये बेकार हो गया है—अब उसका कोई काम न रहा. सड़क पर कोई नमस्कार नहीं करता; क्योंकि जब तक वह सेक्रेटेरियट में था बात और थी. अब कोई नमस्कार नहीं करता—कोई देखता नहीं; क्योंकि अब नमस्कार भी लोग दूसरों को करेंगे. सब चीज की एकॉनामी है. सेक्रेटेरियट में दूसरे लोग पहुंच गये हैं, इनको नमस्कार करें कि अब अगर आपको भी नमस्कार बजाते रहें, तो बहुत मुश्किल हो जायगी. लोग आपको भूल जायेंगे. अब उस आदमी को अचानक लगता है कि वह बेकार हो गया —'अपसेट' हो गया—किसी को उसकी कोई जरूरत नहीं. घर में बच्चे अपनी पत्नियों के साथ चित्र देखने जाने लगेंगे. पुराने जिनके लिये वह काम का था, अब उनके लिये वह बेकाम हो गया. अचानक वल्नरेबिलिटी पैदा हो गयी—अब वह मौत के लिये चारों तरफ से खुल गया.

मनुष्य की चेतना भीतर से कब स्वस्थ होती है ? एक, उसे भीतर की चेतना का अहसास शुरू हो जाय—भीतर की चेतना की फीलिंग्स शुरू हो जायं. हमें आम-तौर से भीतर की कोई फीलिंग नहीं होती; हमारी सब फीलिंग्स शरीर की होती हैं—हाथ की होती है, पैर की होती हैं, सिर की होती है, हृदय की होती है. उसके लिए होती है जो नहीं है. हमारा सारा बोध, हमारी सारी अवेयरनेस घर की होती है; घर में रहने वाले मालिक की नहीं होती. **यह बड़ी खतरनाक स्थिति है; क्योंकि कल अगर मकान गिरने लगेगा, तो मैं समझूंगा कि मैं गिर रहा हूं, यही मेरी बीमारी बनेगी.** नहीं, अगर मैं यह भी मान लूं कि मैं मकान से अलग हूं, मकान के भीतर हूं, मकान गिर जायगा फिर भी मैं हो सकता हूं, तो बहुत फर्क पड़ेगा—बहुत बुनियादी फर्क पड़ जायगा. तब मृत्यु का भय क्षीण हो जायगा.

ध्यान के अतिरिक्त मृत्यु का भय कभी भी नहीं घटता. तो ध्यान का पहला अर्थ है—'अवेयरनेस आफ वन सेल्फ'. हम जब भी होश में होते हैं, तो हमारा होश जो है वह 'अवेयरनेस अबाउट'—किसी चीज के बाबत है सदा. वह अभी अपने बाबत नहीं है. इसीलिए तो हम अकेले बैठें, तो हमें नींद आनी शुरू हो जाती है. क्योंकि वहां क्या करें ? अखबार पढ़ें, रेडियो खोलें तो जरा जागने-सा मालूम पड़ता है. अगर एक आदमी को हम बिल्कुल अकेले में छोड़

दें, अंधेरा कर दें कमरे में. अंधेरे में इसलिए नींद आ जाती है; क्योंकि आपको चीजें कोई दिखाई नहीं पड़तीं तो कान्शसनेस की कोई जरूरत नहीं रह जाती. कुछ चीज दिखाई नहीं पड़ती तब क्या करे सिवाय सोने के कोई उपाय नहीं मालूम पड़ता. अकेले पड़ जायं, अंधेरा हो, कोई बात करने को न हो, कुछ सोचने को न हो, तो बस आप आ गये नींद में. और कोई उपाय नहीं है.

ध्यान रहे, नींद और ध्यान एक अर्थ में समान हैं, एक अर्थ में भिन्न हैं. नींद का मतलब है—आप अकेले हैं लेकिन सो गये हैं. ध्यान का मतलब है आप अकेले हैं लेकिन जागे हैं. इतना ही फर्क है अगर आप अपने अकेलेपन में और अपने भीतर जाग सकते हैं अपने प्रति. एक आदमी बुद्ध के सामने बैठा है एक दिन और अपने पैर का अंगूठा हिला रहा है. बुद्ध ने कहा कि अंगूठा क्यों हिला रहे हो. उस आदमी ने कहा, छोड़िये ऐसे ही हिलाता था, मुझे कुछ पता न था. बुद्ध ने कहा, तुम्हारा अंगूठा हिले और तुम्हें पता न हो ! अंगूठा किसका है यह ? तुम्हारा है यह ? उसने कहा कि मेरा है यह लेकिन आप भी कहां की बातें करते हैं ! आप जो बात करते थे, वह जारी रखिये. बुद्ध ने कहा, वह मैं नहीं कहूंगा अब; क्योंकि जिस आदमी से मैं बात कर रहा हूं वह बेहोश है, तो अपने अंगूठे के हिलाने का आगे से होश रखो.

'अवेयरनेस इज आलवेज़ डबल एरोड'. अगर हम उसका प्रयोग करें तो उसका एक ऐरो तो बाहर की तरफ रह जायगा और दूसरा तीर भीतर की तरफ हो जायेगा. तो ध्यान का पहला अर्थ है कि हम अपने शरीर और स्वयं के प्रति जागना शुरू करें. यह जागरण अगर बढ़ सके तो आपका मृत्यु भय क्षीण हो जाएगा. और जो चिकित्सा शास्त्र मनुष्य को मृत्यु के भय से मुक्त नहीं कर सकता है, वह चिकित्सा शास्त्र मनुष्य नाम की बीमारी को कभी भी स्वस्थ नहीं कर सकता. तो चिकित्सा शास्त्र कोशिश करता है, उम्र लम्बी करके. उम्र लम्बी करने से सिर्फ मृत्यु की प्रतीक्षा लम्बी होती है. और कोई फर्क नहीं पड़ता. और लम्बी प्रतीक्षा से छोटी प्रतीक्षा अच्छी है. उम्र लंबी करने से सिर्फ मौत और भी दुखदायी होती चली जाती है. क्या आपको अंदाज है कि जिन मुल्कों में चिकित्सा शास्त्र ने लोगों की उम्र ज्यादा बढ़ा दी, वहां एक नया आंदोलन चल रहा है. वह आंदोलन यह है कि बूढ़े कह रहे हैं कि हमें मरने का अधिकार होना चाहिए कॉन्स्टीट्यूशन में. क्योंकि आप हमको लटकाए चले जा रहे हैं. हमको जिंदा रहना बहुत कठिन हो गया है. आप तो लटका सकते हैं. एक आदमी को ऑक्सीजन का सिलेन्डर रखके और न मालूम कितनी देर तक लटका सकते हैं. उसको जिंदा रख सकते हैं. लेकिन

उसकी जिंदगी मरने से बदतर हो जायगी. आज न मालूम कितने लोग यूरोप-अमरीका के अस्पतालों में उल्टे-सीधे शीर्षासन की हालत मे हैं. आक्सीजन के सिलेन्डरों से बंधे हुए पड़े हैं. उनको मरने का हक नहीं है ! वे मरने के हक की मांगें कर रहे हैं. मैं मानता हूं कि इस सदी के पूरे होते-होते दुनिया के सभी सुशिक्षित राष्ट्रों के कॉन्स्टीट्यूशन में जन्म-सिद्ध अधिकारों में मरने का अधिकार जुड जायगा. क्योंकि चिकित्सक को यह हक नहीं हो सकता कि वह किसी आदमी को उसकी इच्छा के खिलाफ जिंदा रखे. अब तक तो हक यह नहीं था कि उसकी इच्छा के खिलाफ मारें लेकिन अभी तक जिंदा रखने का उपाय नहीं था. अब है.

आदमी की उम्र बढ़ाने से मृत्यु का भय कम नहीं होगा, आदमी को स्वस्थ कर देने से आदमी ज्यादा सुखी हो जायगा लेकिन ज्यादा अभय नहीं होगा. अभय—फीयरलेसनेस तो सिर्फ एक ही स्थिति में आती है कि मुझे भीतर पता चल जाय कि कुछ है जो मरता ही नहीं. उसके बिना कभी नहीं होता. तो ध्यान उस अमरत्व का बोध है. वह जो मेरे भीतर है, वह कभी नहीं मरता और वह जो मेरे बाहर है वह मरता ही है. इसलिए जो बाहर है उसकी चिकित्सा करो, कि वह जितने दिन जिये, सुख से जिए और वह जो भीतर है उसका स्मरण करो, कि मृत्यु भी द्वार पर खड़ी हो जाय तो भय न सतावे. यह आंतरिक बोध ही अभय है. **भीतर ध्यान, बाहर चिकित्सा.** तो चिकित्सा शास्त्र को परिपूर्ण शास्त्र बना सकते हैं. मेडीसिन और मेडीटेशन को मैं एक ही शास्त्र के दो छोर मानता हूँ जिनके बीच भी अभी कड़ियां नहीं जुड़ पाई. लेकिन धीरे-धीरे करीब आ रही हैं. आज तो अमेरिका के सभी चिकित्सा अस्पतालों में एक हिप्नोटिस्ट का होना जरूरी हो गया है. लेकिन हिप्नोटिज्म मेडीटेशन नहीं है. पर यह अच्छा कदम है. यह इस बात की स्वीकृति है कि आदमी की चेतना के साथ--भी कुछ करने की जरूरत है. सिर्फ शरीर के साथ करना पर्याप्त नहीं है. अगर हिप्नोटिस्ट आयेगा, तो मैं मानता हूं कल अस्पताल में मंदिर भी आयगा, वह पीछे आयेगा. थोड़ा वक्त लगेगा. हिप्नोटिस्ट के बाद एक डिपार्टमेंट योगी का भी हर अस्पताल में आ ही जायगा. आ ही जाना चाहिए. तब हम पूरे व्यक्ति को ट्रीट कर पायेंगे शरीर की चिकित्सक फिक्र कर ले, उसके चित्त की साइकोलाजिस्ट फिक्र कर ले, उसकी आत्मा की फिक्र योग कर ले. जिस दिन अस्पताल इस तरह पूरे मनुष्य के व्यक्तित्व को--'एज ए होल'--'एज ए टोटेलिटी'--स्वीकार करके चिकित्सा करेगा, मैं मानता हूं कि मनुष्य के जीवन में बड़े मंगल का क्षण होगा. ऐसा मंगल का क्षण करीब आए, इस दिशा में सोचने की प्रार्थना करता हूं.

● एक्जीक्यूटिव इन्जीनियर, **खेरा** (गुज०)

My journey towards 'SANNYAS'

Swami Sardar Gurudayal Singh.

The most precious and auspicious moment of my life came on the afternoon of 19th March, 1971. I had been visiting Bombay for the last twelve years periodically, for holidays on the sea-shore. This was remniscent of my younger days spent on the shores of Malaysia and Malacca, Singapore in Army service.

After leaving the Army, I again undertook a trip to visit Malaysia and Singapore and was happy to meet friends of my boyhood days. On my return to Punjab my home, I felt very restless. One day,on the spur of a moment, I again came to Bombay. To make my two ends meet, I took a job as a Security Supervisor at the Woodlands building, and one would be surprised to know that for two months, I did not know anybody at Apartment A-1 (Bhagwan Shree Rajneesh's residence.) I used to watch many saffron-robed persons going in and out. Perhaps, for me, the time was not yet ripe.

One evening, I was sitting in the office on duty, when I was approached by a young lady, from Apartment A-1, who asked me whether, I could make some arrangements to set right the boiler which was faulty. I responded to the call. Much to my surprise, not only did the boiler came under control very quickly, but so did I.

I saw a vast collection of books on all subjects under the sun. I asked Ma Yoga Laxmi, the Secretary, for information about the owner (Bhagwan Shree) and for details about the Neo Sannyas International Organisation. Then I requested to see Bhagwan. I was asked to come the next day, having been accorded the privilege to have the 'Darshan' (spiritual encounter) of Bhagwan Shree. That was to be my first meeting. It was followed by many more. The following afternoon, I was ushered into his room before HIS DIVINE PRESENCE, where I felt much serenity, quietitude and tranquility. I told Bhagwan Shree about my spiritual thirst, and he very graciously said, "Sab thik Ho Jayega" (Everything will turn all right). I was given a small booklet, entitled, "Flight of the Alone to the Alone," and thus, the pace was set for my journey.

Then came discourses on the Gita in March, 1971 by Bhagwan Shree. On the 6th day of the discourses, I was filled to the brim with joy and all my isms were shattered. I made a request for Sannyas initiation and immediately had made a dhoti of saffron-coloured cloth, and an upper cloth to cover the body. At 2.30 p. m. on 19th March, 1971, I was again ENCOUNTERING THE DIVINE PRESENCE OF BHAGWAN SHREE RAJNEESH. He put the Mala on me and said, "Bahut Badhia Lagate Ho" (You are looking fine) and "Sub thik Ho Jayega" (everythiug will be all right). He showered his blessings upon me, and in a moment, my whole life was changed.

Thus, I became a Sannyasi, and the new name given me was "Swami Sardar Gurudayal Singh".

Ever since that day, since the journey has commenced, things are happening, things will happen and are bound to happen. I have learnt to accept momet-to-moment living in the here and now. I enjoy real inner freedom and meditative bliss. The old order has changed and has yielded to the new.

119/2281, Group VI, Tagore Nagar
Vikroli,
Bombay–83

●

उसके प्रति, जो है

तू दुनिया की सारी मधुरिमा
घोर वीभत्सता में बदल दे
मेरे हृदय की धड़कन तेज कर दे
और मुझे मृत्यु की देहली पर खड़ा कर दे
परीक्षा की चाहे जितनी गहरी घाटियों से चाहे उतार दे
वैसे तेरे समक्ष परीक्षा में
खरा हो भी कौन सकता है !
पर एक झलक जो तेरी
मैंने पाली है—उसके प्रति
एकदम अविश्वास कैसे हो सकता है !

— स्वामी अगेह भारती

मुक्त स्वर

● ओ मीत !
व्यर्थ ही इसको
अपनी सम्पदा मान लिया था
अच्छा ही हुआ—तूने दी उधार माँग ली
कुछ संभालना भी मुश्किल हो चला था
आज—घोड़े बेच सोऊंगा
फिर भी मुझे लगता रहा
कि लौटा के तेरा धन
तेरा अपमान कर रहा हूं
हाय रे !

इतना भी न सह सका
लेकिन करूं क्या ?
एक तरफ खाई है—एक तरफ कुआं
और "मैं" है कि मरना नहीं चाहता
—मिटना नहीं चाहता
लेकिन, "तू" प्रतिक्रिया न करना
तू "मैं" को बचाना नहीं
अन्यथा मेरे "मैं" को
और लगेगी गहरी चोट
—जो वह सहना नहीं चाहता

●● प्रिय मित्र
क्या तुम मेरे सुख के लिये
कर सकते हो कुछ ?
यदि हो स्वीकार—

मुझे दो अपना प्यार
लेकिन, बेशर्त—क्योंकि भिखारी हूं मैं
बदले में—कुछ दे न सकूंगा !

— *स्वामी चैतन्य भारती, दिल्ली*

● मेरे प्रभु !
कैसे करते हो स्वीकार
किसी की नफरत—किसी का प्यार
क्यूं ... ... बार-बार होता है
'सत्य' का बहिष्कार ?
ये पाखंडी—धर्म के दावेदार
कब तक करते रहेंगे धर्म के साथ बलात्कार ?

और···

कब खत्म होगा—इनका यह भीषण दुराचार ?
कब आयेगा— 'धर्म' का विचार ?

और···

हम हो सकेंगे 'निर्विचार' !

●● मेरे गुनाहों का कोई हिसाब नहीं
सखावत का भी तेरी जवाब नहीं

तू तो रजनीश बस ला-जवाब है
इस जहां में तेरा जवाब नहीं !

— *दिनेश 'शाही'*,
७१/२, ईस्ट आजाद नगर,
दिल्ली-५१

ज्योतिष-गणना

[भगवान श्री की ज्योतिष गणना पर द्वितीय वार्ता]

संकलन :

स्वामी योग चिन्मय, बम्बई

कुछ बातें जान लेनी जरूरी हैं. सबसे पहले तो यह बात जान लेनी जरूरी है कि वैज्ञानिक दृष्टि से सूर्य से समस्त सौर-परिवार का--मंगल का, बृहस्पति का, चन्द्र का, जन्म हुआ है. ये सब सूर्य के ही अंग हैं. फिर पृथ्वी पर जीवन का जन्म हुआ. पौधों से लेकर मनुष्य तक. मनुष्य पृथ्वी का अंग है, पृथ्वी सूरज का अंग है. अगर हम इसे ऐसा समझें—एक मां है, उसकी एक बेटी है और उसकी एक बेटी है—. उन तीनों के शरीर में एक ही रक्त प्रवाहित होता है, उन तीनों के शरीर का निर्माण एक ही तरह के सेल्स से, एक ही तरह के कोष्ठों से होता है. और वैज्ञानिक एक शब्द का प्रयोग करते हैं 'एम्पैथी' का. जो चीजें एक से ही पैदा होती हैं उनके भीतर एक अन्तर समानुभूति होती है. सूर्य से पृथ्वी पैदा होती है, पृथ्वी से हम सबके शरीर निर्मित होते हैं. थोड़ा ही दूर फासले पर सूर्य हमारा महा पिता है. सूर्य पर जो भी घटित होता है वह हमारे रोम-रोम में स्पंदित होता है. होगा ही. क्योंकि हमारा रोम-रोम भी सूर्य से ही निर्मित है. सूर्य इतनी दूर दिखाई पड़ता है, इतनी दूर नहीं है. हमारे रक्त के एक-एक कण में और हड्डी के एक-एक टुकड़े में सूर्य के ही अणुओं का वास है, हम सूर्य के ही टुकड़े हैं. और यदि सूर्य से हम प्रभावित होते हों तो इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है. एम्पैथी है, समानुभूति है. समानुभूति को भी थोड़ा समझ लेना जरूरी है. तो ज्योतिष के एक आयाम में प्रवेश हो सकेगा.

कल मैंने जुड़वां की बात आपसे की. अगर एक ही अण्डे से पैदा हुए दो बच्चों को दो कमरों में बन्द कर दिया जाय और इस तरह के बहुत से प्रयोग पिछले पचास वर्षों में किये गये हैं. एक ही अण्डज जुड़वां बच्चों को दो कमरों में बंद कर दिया गया, फिर दोनों कमरों में एक साथ घंटी बजायी गयी है और दोनों बच्चों को कहा गया है, उनको जो पहला ख्याल आता हो वह उसे कागज पर लिख लें. या जो पहला चित्र उनके दिमाग में आता हो उसे कागज पर बना

लें. और बड़ी हैरानी की बात है कि अगर बीस चित्र बनवाये गये हैं दोनों बच्चों से, तो उसमें नब्बे प्रतिशत दोनों बच्चों के चित्र एक जैसे हैं. उनके मन में जो पहली विचारधारा पैदा होती है, जो पहला शब्द बनता है या जो पहला चित्र बनता है, ठीक उसके ही करीब वैसा ही विचार दूसरे जुड़वां बच्चे के भीतर भी बनता और निर्मित होता है.

इसे वैज्ञानिक कहते हैं—एम्पैथी. इन दोनों के बीच इतनी समानता है कि ये एक से प्रतिध्वनित होते हैं. इन दोनों के भीतर अनजाने मार्गों से जैसे जोड़ है, कोई कम्युनिकेशन है. सूर्य और पृथ्वी के बीच ऐसा ही कम्युनिकेशन है, ऐसा ही संवाद है, प्रतिपल. और पृथ्वी और मनुष्य के बीच भी इसी तरह का संवाद है प्रतिपल. सूर्य पृथ्वी और मनुष्य उन तीनों के बीच निरन्तर संवाद है, एक निरन्तर डायलाग है. लेकिन वह जो संवाद है, डायलाग है वह बहुत गुह्य है और बहुत आंतिरिक है और बहुत सूक्ष्म है. उसके संबंध में थोड़ी -सी बातें समझेंगे तो ख्याल में आयेगा.

अमरीका में, एक रिसर्च सेन्टर है—'ट्री रिंग रिसर्च सेन्टर.' वृक्षों में जो वृक्ष आप काटें तो वृक्ष के तने में आपको बहुत से रिंग, बहुत से वर्तुल दिखायी पड़ेंगे. फर्नीचर पर जो सौंदर्य मालूम पड़ता है, वह उन्हीं वर्तुलों के कारण है. पचास वर्ष से यह रिसर्च-केन्द्र, वृक्षों में जो वर्तुल बनते हैं उन पर काम कर रहा है. प्रो० डगलस अब उसके डायरेक्टर हैं, जिन्होंने अपने जीवन का अधिकांश हिस्सा, वृक्षों में जो वर्तुल बनते हैं, चक्र बन जाते हैं—उन पर ही पूरा व्यय किया है. बहुत से तथ्य हाथ लगे हैं. पहला तथ्य तो सभी को ज्ञात है साधारणतः, कि वृक्ष की उम्र उसमें बने हुए रिंग्स के द्वारा जानी जा सकती है, जानी जाती है. क्योंकि प्रतिवर्ष एक रिंग वृक्ष में निर्मित होता है. एक छाल वृक्ष छोड़ देता है, अपनी चमड़ी छोड़ देता है और एक रिंग निर्मित हो जाता है. वृक्ष की कितनी उम्र है, उसके भीतर कितने रिंग बने हैं इनसे तय हो जाता है. अगर पचास साल पुराना है, उसने पचास पतझड़ देखे हैं, तो पचास रिंग उसके तने में निर्मित हो जाते हैं. और हैरानी की बात यह है कि इन तनों पर जो रिंग निर्मित होते हैं वह मौसम की भी खबर देते हैं. अगर मौसम बहुत गर्म और गीला रहा हो तो जो रिंग है वह चौड़ा निर्मित होता है. अगर मौसम बहुत सर्द और सूखा रहा हो तो जो रिंग है वह बहुत सकरा निर्मित होता है. हजारों साल पुरानी लकड़ी को काटकर पता लगाया जा सकता है कि उस वर्ष जब यह रिंग बना था तो मौसम कैसा था. बहुत वर्षा हुई थी या नहीं हुई थी. सूखा पड़ा था या नहीं पड़ा था. अगर बुद्ध ने कहा है कि इस वर्ष बहुत वर्षा हुई तो जिस बोधि वृक्ष के नीचे वह बैठे थे वह भी

खबर देगा कि वर्षा हुई कि नहीं हुई. बुद्ध से भूल-चूक हो जाय, वह जो वृक्ष है—बोधिवृक्ष, उससे भूल-चूक नहीं होती. उसका रिंग बड़ा होगा, छोटा होगा. डगलस इन वर्तुलों की खोज करते-करते एक ऐसी जगह पहुंच गया है, जिसकी उसे कल्पना भी नहीं थी. उसने अनुभव किया कि प्रत्येक ग्यारहवें वर्ष पर रिंग जितना बड़ा होता है उतना फिर कभी बड़ा नहीं होता. और वह ग्यारहवां वर्ष वही वर्ष है जब सूर्य पर सर्वाधिक गतिविधि होती है. हर ग्यारहवें वर्ष पर सूर्य में एक रिदिम, एक लयबद्धता है, हर ग्यारहवें वर्ष पर सूर्य बहुत सक्रिय हो जाता है. उस पर रेडियो एक्टीविटी बहुत सक्रिय, तीव्र होती है. सारी पृथ्वी पर उस वर्ष सभी वृक्ष मोटा रिंग बनाते हैं. एकाध जगह नहीं, एकाध जंगल में नहीं सारी पृथ्वी पर सारे वृक्ष उस वर्ष उस रेडियो एक्टीविटी से अपनी रक्षा करने के लिए मोटा रिंग बनाते हैं. वह जो सूर्य पर तीव्र घटना घटती है ऊर्जा की, उससे बचाव के लिए उनको मोटी चमड़ी बनानी पड़ती है—हर ग्यारहवें वर्ष. इससे वैज्ञानिकों में एक नया शब्द और एक नई बात शुरू हुई.

लेकिन वह महाशक्तियां जब पृथ्वी के पास से गुजरती हैं तो हमारे पास से भी गुजरती हैं। और ऐसा नहीं हो सकता है कि जब पृथ्वी कंपित होती है तो उस पर लगे हुए वृक्ष कंपित न हों। और ऐसा भी नहीं हो सकता है कि जब पृथ्वी कंपित होती है तो उस पर जीता और चलता हुआ मनुष्य कंपित न हो।

मौसम सब जगह अलग होते हैं. यहां सर्दी है, कहीं गर्मी है, कहीं वर्षा है, कहीं शीत है. सब जगह मौसम अलग हैं. इसलिए अब तक कभी पृथ्वी का मौसम—'क्लाइमेट आफ दी अर्थ' ऐसा कोई शब्द प्रयोग नहीं होता था. लेकिन अब डगलस ने इस शब्द का प्रयोग करना शुरू किया है—'क्लाइमेट आफ द अर्थ' ये सब छोटे-मोटे फर्क तो हैं ही लेकिन पूरी पृथ्वी पर भी सूर्य के कारण एक विशेष मौसम चलता है. जो हम नहीं पकड़ पाते, लेकिन वृक्ष पकड़ते हैं. हर ग्यारहवें वर्ष पर वृक्ष मोटा रिंग बनाते हैं, फिर रिंग छोटे होते जाते हैं. फिर पांच साल के बाद बड़े होने शुरू होते हैं, फिर ग्यारहवें साल पर जाकर पूरे बड़े हो जाते हैं.

अगर वृक्ष इतने संवेदनशील हैं और सूर्य पर होती हुई कोई भी घटना को इतनी व्यवस्था से अंकित करते हैं, तो क्या आदमी के चित्त में भी कोई पर्त होगी, क्या आदमी के शरीर में भी कोई संवेदन का सूक्ष्म रूप होगा, क्या आदमी भी कोई रिंग और वर्तुल निर्मित करता होगा अपने व्यक्तित्व में ?

अब तक साफ नहीं हो सका. अभी तक वैज्ञानिकों को साफ नहीं है कोई बात, कि आदमी के भीतर क्या होता है. लेकिन यह असंभव मालूम होता है कि जब वृक्ष भी सूर्य पर घटती घटनाओं को संवेदित करते हों, तो आदमी किसी भांति संवेदित न करता हो. ज्योतिष—जो जगत में कहीं भी घटित होता है वह मनुष्य के चित्त में भी घटित होता है—इसकी ही खोज है. इस पर हम पीछे बात करेंगे कि मनुष्य भी वृक्षों जैसी खबरें अपने भीतर लिये चलता है, लेकिन उसे खोलने का ढंग उतना आसान नहीं है जितना वृक्ष को खोलने का ढंग आसान है. वृक्ष को काटकर जितनी सुविधा से हम पता लगा लेते हैं, उतनी सुविधा से आदमी को काटकर पता नहीं लगा सकते हैं. आदमी को काटना सूक्ष्म मामला है और आदमी के पास चित्त है, इसलिए आदमी का शरीर उन घटनाओं को नहीं रिकार्ड करता, चित्त रिकार्ड करता है. वृक्षों के पास चित्त नहीं है. इसलिए शरीर ही उन घटनाओं को रिकार्ड करता है.

एक और बात इस सम्बन्ध में ख्याल में ले लेने जैसी है. जैसा मैंने कहा, प्रति ग्यारह वर्ष पर सूर्य पर तीव्र रेडियो एक्टीविटी, तीव्र वैद्युतिक तूफान चलते हैं ऐसा प्रति ग्यारह वर्ष पर एक रिदिम, ठीक ऐसा ही एक दूसरा बड़ा रिदिम भी पता चलना शुरू हुआ है और वह है नब्बे वर्ष का सूर्य के ऊपर. और वह और हैरान करने वाला है. और यह जो मैं कह रहा हूं ये सब वैज्ञानिक तथ्य हैं. ज्योतिषी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहते हैं. लेकिन मैं इसलिए यह कह रहा हूं कि उनके आधार पर ज्योतिष को वैज्ञानिक ढंग से समझना आपके लिए आसान हो सकेगा. नब्बे वर्ष का एक दूसरा वर्तुल है जो कि अनुभव किया गया है. उसके अनुभव की कथा बड़ी अद्भुत है.

फैरोय ने इजिप्त में आज से चार हजार साल पहले अपने वैज्ञानिकों को कहा कि नील नदी में जबकि पानी घटता है, बढ़ता है, उसका पूरा ब्यौरा रखा जाय. अकेली नील एक ऐसी नदी है जिसकी चार हजार वर्ष की बायोग्राफी है. और किसी नदी की कोई बायोग्राफी नहीं है. उसकी जीवन कथा है पूरी. कब उसमें इंच भर पानी बढ़ा है, उसका पूरा रिकार्ड है चार हजार वर्ष का, फैरोय के जमाने से लेकर आज तक. फैरोय का अर्थ होता है—सूर्य, इजिप्त भाषा में. फैरोय, जो इजिप्त का सम्राट अपना नाम रखता था, वह सूर्य के आधार पर और इजिप्त में ऐसा ख्याल था कि सूर्य और नदी के बीच निरन्तर संवाद है. और फैरोय, जो कि सूर्य का भक्त था उसने कहा कि नील का पूरा रिकार्ड रखा जाय. सूर्य के सम्बन्ध में तो हमें अभी कुछ पता नहीं है लेकिन कभी तो सूर्य के सम्बन्ध में पता हो जायेगा तब यह रिकार्ड काम दे सकता है. तो चार हजार साल की पूरी कथा है नील नदी की. उसमें इंच भर पानी कब बढ़ा, इंच भर कब कम हुआ, कब उसमें पूर आया, कब पूर नहीं

आया. कब नदी बहुत तेजी से बही और कब नदी बहुत धीमी बही, इसका चार हजार वर्ष का लम्बा इतिहास इंच-इंच उपलब्ध है. इजिप्त के एक विद्वान तस्मान ने पूरे नील की कथा लिखी और अब सूर्य के सम्बन्ध में वे बातें ज्ञात हो गयीं जो फैरोय के वक्त ज्ञात नहीं थीं और जिसके लिए फैरोय ने कहा था, प्रतीक्षा करना.

इन चार हजार साल में जो कुछ भी नील नदी में घटित हुआ है वह सूर्य से सम्बन्धित है, और नब्बे वर्ष की रिदिम का पता चलता है, हर नब्बे वर्ष में सूर्य पर एक अभूतपूर्व घटना घटती है. वह घटना ठीक वैसी ही है जिसे हम मृत्यु कहते हैं. या जन्म कह सकते हैं. ऐसा समझ लें, सूर्य नब्बे वर्ष में पैंतालीस वर्ष तक जवान होता है और पैंतालीस वर्ष तक बूढ़ा होता है. उसके भीतर जो ऊर्जा के प्रवाह बहते हैं वह पैंतालीस वर्ष तक तो जवानी की तरफ बढ़ते हैं, क्लाइमेक्स की तरफ जाते हैं. सूर्य जैसे जवान होता चला जाता है, और पैंतालीस साल के बाद ढलना शुरू हो जाता है, उसकी उम्र जैसे नीचे ढलने गिरने लगती है और नब्बे वर्ष में सूर्य बिल्कुल बूढ़ा हो जाता है. नब्बे वर्ष में जब सूर्य बूढ़ा होता है तब सारी पृथ्वी भूकम्पों से भर जाती है. भूकम्पों का सम्बन्ध नब्बे वर्ष के वर्तुल से है. सूर्य उसके बाद फिर जवान होता है. वह बड़ी भारी घटना है. क्योंकि सूर्य पर इतना परिवर्तन होता है कि पृथ्वी उसकी कंपित हो जाय, यह बिल्कुल स्वाभाविक है. लेकिन जब पृथ्वी जैसी महाकाय वस्तु भूकम्पों से भर जाती है तो आदमी जैसी छोटी-सी काया में कुछ नहीं होता होगा ? पृथ्वी जैसी महाकाय वस्तु, जब सूर्य पर परिवर्तन होते हैं कंपित हो जाती है, भूकम्पों से भर जाती है तो आदमी जैसी छोटी-सी काया में कुछ भी न होता होगा ? ज्योतिषी सिर्फ यही पूछते रहे हैं. वह कहते हैं. यह असंभव है. पता हो तुम्हें या न पता हो लेकिन आदमी की काया भी अछूती नहीं रह सकती. पैंतालीस वर्ष जब सूरज जवान होता है उस वक्त जो बच्चे पैदा होते हैं, उनका स्वास्थ्य अद्‌भुत रूप से अच्छा होगा. और जब पैंतालीस वर्ष सूर्य बूढ़ा होता है, उस वक्त जो बच्चे पैदा होंगे उनका स्वास्थ्य कभी भी अच्छा नहीं हो पाता. जब सूर्य खुद ही ढलाव पर होता है तब जो बच्चे पैदा होते हैं उनकी हालत ठीक वैसी है जैसे पूरब को नाव ले जानी हो और पश्चिम को हवा बहती हो. तो फिर बहुत डांड़ चलाने पड़ते हैं. फिर पतवार बहुत चलानी पड़ती है और पाल काम नहीं करते. फिर पाल खोलकर नाव नहीं ले जायी जा सकती. क्योंकि उल्टे बहना पड़ता है.

जब सूर्य ही बूढ़ा होता है, सूर्य जो कि प्राण है सारे सौर परिवार का तब, तब जिसको भी जवान होना है उसको उल्टी धारा में तैरना पड़ता है

हवा के खिलाफ. उसके लिए संघर्ष भारी है. जब सूर्य ही जवान हो रहा होता है तो पूरा सौर परिवार शक्तियों से भरा होगा और उठान की तरफ होगा। तब जो पैदा होता है, वह जैसे पाल वाली नाव में बैठ गया. पूरब की तरफ हवाएं बह रहीं हैं, उसे डांड भी नहीं चलानी है, पतवार भी नहीं चलानी है, श्रम भी नहीं करना है नाव खुद बह जायेगी. पाल खोल देना है, हवाएं नाव को ले जायेंगी. इस सम्बन्ध में अब वैज्ञानिकों को भी शक होने लगा है कि सूरज जब अपनी चरम अवस्था में जाता है तब पृथ्वी पर कम से कम बीमारियां होती हैं. और जब सूरज अपने उतार पर होता है तब पृथ्वी पर सर्वाधिक बीमारियां होती हैं. पृथ्वी पर पैंतालीस साल बीमारियों के होते हैं और पैंतालीस साल कम बीमारियों के होते हैं. नील ठीक चार हजार वर्षों में हर नब्बे वर्ष में इसी तरह जवान और बूढ़ी होती रही है. जब सूरज जवान होता है तब नील में सर्वाधिक पानी होता है. वह पैंतालीस वर्ष तक उसमें पानी बढ़ता चला जाता है. और जब सूरज ढलने लगता है, बूढ़ा होने लगता है तो नील का पानी नीचे गिरता चला जाता है, फिर वह शिथिल होने लगती है और बूढ़ी हो जाती है.

आदमी इस विराट जगत में कुछ अलग-थलग नहीं है. इस सबका इकट्ठा जोड़ है. अब तक हमने जो भी श्रेष्ठतम घड़ियां बनायी हैं वह कोई भी उतनी 'टू द टाइम', इतना ठीक से समय नहीं बतातीं जितनी पृथ्वी बताती है. पृथ्वी अपनी कील पर तेईस घण्टे छप्पन मिनट में एक चक्कर पूरा करती है. उसी के आधार पर हमने चौबीस घण्टे का हिसाब तैयार किया हुआ है. और हमने घड़ी बनायी है. और पृथ्वी काफी बड़ी है. अपनी कील पर वह ठीक तेईस घण्टे छप्पन मिनट में एक चक्र पूरा करती है. और अब तक कभी भी ऐसा नहीं समझा गया था कि पृथ्वी कभी भी भूल करती है एक सेकण्ड की भी. लेकिन कारण कुल इतना था कि हमारे पास जांचने के ठीक उपाय नहीं थे. और हमने साधारण जांच की थी. लेकिन जब नब्बे वर्ष का वर्तुल पूरा होता है सूर्य का, तो पृथ्वी की घड़ी एकदम डगमगा जाती है उस क्षण में पृथ्वी ठीक अपना वर्तुल पूरा नहीं कर पाती. ग्यारह वर्ष में जब सूरज पर उत्पात होता है तब भी पृथ्वी डगमगा जाती है, उसकी घड़ी गड़बड़ हो जाती है. जब भी पृथ्वी अपनी यात्रा में नये-नये प्रभावों के अन्तर्गत आती है, जब भी कोई नया प्रभाव, कोई नया 'काज्मिक इन्फ्लुएंस', कोई महातारा करीब हो जाता हो—करीब का मतलब, इस महाकाश में बहुत दूर होने पर भी चीजें बहुत करीब हैं, जरा-सी करीब आ जाती हैं. हमारी भाषा बहुत समर्थ नहीं है, क्योंकि जब हम कहते हैं,

जरा-सी करीब आ जाय तो हम सोचते हैं जैसे हमारे पास कोई आदमी आ गया. नहीं, फासले बहुत बड़े हैं. उन फासलों में जरा-सा भी अन्तर पड़ जाता है, जो कि हमें कहीं पता भी नहीं चलेगा तो भी पृथ्वी की कील डगमगा जाती है. पृथ्वी को हिलाने के लिए बड़ी शक्ति की जरूरत है. इंच भर हिलाने के लिए भी. तो महाशक्तियां जब गुजरती हैं पृथ्वी के पास से, तभी वह हिल पाती है. **लेकिन वह महाशक्तियां जब पृथ्वी के पास से गुजरती हैं तो हमारे पास से भी गुजरती हैं. और ऐसा नहीं हो सकता है कि जब पृथ्वी कंपित होती है तो उस पर लगे हुए वृक्ष कंपित न हों. और ऐसा भी नहीं हो सकता है कि जब पृथ्वी कंपती होती है तो उस पर जीता और चलता हुआ मनुष्य कंपित न हो.** सब कंप जाता है. लेकिन कंपन इतने सूक्ष्म हैं कि हमारे पास कोई उपकरण नहीं थे अब तक कि हम जांच करते कि पृथ्वी कंप जाती है. लेकिन अब तो उपकरण हैं. सेकेंड के हजारवें हिस्से में भी कंपन होता है, तो हम पकड़ लेते हैं. लेकिन आदमी के कंपन को पकड़ने के उपकरण अभी भी हमारे पास नहीं हैं. वह मामला और भी सूक्ष्म है. आदमी इतना सूक्ष्म है और होना जरूरी है, अन्यथा जीना मुश्किल हो जायगा. अगर चौबीस घंटे आपको चारों ओर के प्रभावों का पता चलता रहे तो आप जी न पायेंगे. आप जी सकते हैं तभी, जब कि आपको आस-पास के प्रभावों का कोई पता नहीं चलता. एक और नियम है. वह नियम यह कि न तो हमें अपनी शक्ति से छोटे प्रभावों का पता चलता है और न अपनी शक्ति से बड़े प्रभावों का पता चलता है. हमारे प्रभाव के पता चलने का दायरा है. जैसे समझ लें कि बुखार चढ़ता है तो ९८ डिग्री हमारी एक सीमा है. और ११० डिग्री हमारी दूसरी सीमा है. १२ डिग्री के बीच हम जीते हैं. ९० डिग्री पर गिरके आ जाय, तो हम समाप्त हो जाते हैं. उधर ११० डिग्री के बाद चला जाय तो हम समाप्त हो जाते हैं. लेकिन क्या आप समझते हैं, दुनिया में गर्मी १२ डिग्री होती है ?

आदमी बारह डिग्री के भीतर जीता है. दोनों सीमाओं के इधर-उधर गया कि खो जायेगा. उसको एक बैलेंस है—९८ और ११० के बीच उसको अपने को सम्हाले रखना है. ठीक ऐसा बैलेंस, सब जगह है. मैं आपसे बोल रहा हूं आप सुन रहे हैं. अगर मैं बहुत धीमे बोलूं तो ऐसी जगह आ सकती है कि मैं बोलूं और आप न सुन पायें. लेकिन यह आपको खयाल में आ जायगा कि बहुत धीमे बोला जाय तो सुनाई नहीं पड़ेगा, लेकिन आपको यह खयाल में न आयेगा कि इतने जोर से बोला जाय कि आप न सुन पायें—आपको कठिन लगेगा; क्योंकि जोर से बोलेंगे तो सुनाई पड़ेगा ही. नहीं, वैज्ञानिक कहते हैं, हमारे सुनने की भी डिग्री है. उससे नीचे भी नहीं सुन पाते, उसके

अगर पुरुष स्त्री से जीत जाता है, तो उसका कुल कारण इतना है कि लड़के और लड़कियां दोनों ही मां के पास बड़े होते हैं. लड़के का एक्सपोजर तो बिल्कुल ठीक होता है स्त्री के प्रति, लेकिन लड़की का एक्सपोजर बिल्कुल ठीक नहीं होता. इसलिए जब तक दुनिया में लड़की को पिता का एक्सपोजर नहीं मिलता, तब तक स्त्रियां कभी भी पुरुष के समकक्ष खड़ी नहीं हो सकेंगी.

ऊपर भी नहीं सुन पाते. हमारे आस-पास भयंकर आवाजें गुजर रही हैं. लेकिन हम सुन नहीं पाते. एक तारा टूटता है आकाश में, कोई नया ग्रह निर्मित होता है या बिखरता है, तो भयंकर गर्जना वाली आवाजें हमारे चारों तरफ से गुजरती हैं. अगर हम उनको सुन पायें तो हम तत्काल बहरे हो जायं. लेकिन हम सुरक्षित हैं, क्योंकि हमारे कान सीमा में ही सुनते हैं. जो सूक्ष्म है उसको भी नहीं सुनते, जो विराट है उसको भी नहीं सुनते. एक दायरा है. बस उतने को सुन लेते हैं. देखने के मामले में भी हमारी वही सीमा है.हमारी सभी इंद्रियां एक दायरे के भीतर, न उसके ऊपर, न उसके नीचे. इसीलिए आपका कुत्ता है, वह आपसे ज्यादा सूंघ लेता है. उसका दायरा सूंघने का आपसे बड़ा है. जो आप नहीं सूंघ पाते, कुत्ता सूंघ लेता है. जो आप नहीं सुन पाते, आपका घोड़ा सुन लेता है. उसके सुनने का दायरा आपसे बड़ा है. एक डेढ़ मील दूर सिंह आ जाय तो घोड़ा चौंककर खड़ा हो जाता है. डेढ़ मील के फासले पर उसे गंध आती है. आपको कुछ पता नहीं चलता. अगर आपको सारी गंध आने लगे, जितनी गंध आपके चारों तरफ चल रही हैं, तो आप विक्षिप्त हो जायेंगे. **मनुष्य एक कैप्सूल में बन्द है, उसकी सीमान्त है, उसकी बाउन्ड्री है.** आप रेडियो लगाते हैं और आवाज सुनाई पड़नी शुरू हो जाती है. क्या आप सोचते हैं, जब रेडियो लगाते हैं तब आवाज आनी शुरू होती है ? आवाज तो पूरे समय बहती ही रहती है. आप रेडियो लगायें या न लगायें. लगाते हैं तब रेडियो पकड़ लेता है बहती तो पूरे वक्त रहती है. दुनिया में जितने रेडियो स्टेशन हैं, सबकी आवाजें अभी इस कमरे से गुजर रही हैं.आप रेडियो लगायेंगे तो पकड़ लेंगे. आप रेडियो नहीं लगाते हैं, तब भी गुजर रही हैं. लेकिन आपको सुनाई नहीं पड़ रही हैं. आपको सुनाई नहीं पड़ रही हैं.

जगत में न मालूम कितनी ध्वनियां हैं जो चारों तरफ हमारे गुजर रही हैं. भयंकर कोलाहल. वह पूरा कोलाहल हमें सुनायी नहीं पड़ता, लेकिन उससे हम प्रभावित तो होते ही हैं. ध्यान रहे, वह हमें सुनाई नहीं पड़ता,

लेकिन उससे हम प्रभावित तो होते ही हैं. वह हमारे रोएं-रोएं को स्पर्श करता है, हमारे हृदय की धड़कन-धड़कन को छूता है. हमारे स्नायु-स्नायु को कंपा जाता है. वह अपना काम तो कर ही रहा है. उसका काम तो जारी है. जिस सुगंध को आप नहीं सूंघ पाते उसके अणु आपके चारों तरफ अपना काम तो कर ही जाते हैं. और अगर उसके अणु किसी बीमारी को लाये हैं तो आपको दे जाते हैं. आपकी जानकारी आवश्यक नहीं है किसी वस्तु के होने के लिए.

ज्योतिष का कहना है कि हमारे चारों तरफ ऊर्जाओं के क्षेत्र हैं, 'इनर्जी फील्ड्स' हैं और वह पूरे समय हमें प्रभावित कर रहे हैं. जैसा मैंने कल कहा कि जैसे ही बच्चा जन्म लेता है, तो जन्म को वैज्ञानिक भाषा में हम कहें—एक्सपोजर, जैसे कि फिल्म को हम एक्सपोज करते हैं कैमरे में. जरा-सी शटर आप दबाते हैं एक क्षण के लिए, कैमरे की खिड़की खुलती है और बन्द हो जाती है. उस क्षण में जो भी कैमरे के समक्ष आ जाता है वह फिल्म पर अंकित हो जाता है. फिल्म एक्सपोज हो गई. अब दुबारा उस पर कुछ अंकित न होगा. अंकित हो गया. और अब यह फिल्म उस आकार को सदा अपने भीतर लिए रहेगी. जिस दिन मां के पेट में पहली दफे गर्भाधान होता है, तो पहला एक्सपोजर होता है. जिस दिन मां के पेट से बच्चा बाहर आता है, जन्म लेता है, उस दिन दूसरा एक्सपोजर होता है. और यह दोनों एक्सपोजर, संवेदन उस चित्त पर फिल्म की भांति अंकित हो जाते हैं—पूरा जगत, उस क्षण में बच्चा अपने भीतर अंकित कर लेता है. और उसकी सिम्पेथीज़ निर्मित हो जाती हैं. ज्योतिष इतना ही कहता है कि यदि वह बच्चा जब पैदा हुआ है तब अगर रात है, और जानकर आप हैरान होंगे कि सत्तर ले लेकर नब्बे प्रतिशत बच्चे रात में पैदा होते हैं. यह थोड़ा हैरानी का है. क्योंकि आमतौर से पचास प्रतिशत होने चाहिए. चौबीस घन्टे का हिसाब, इसमें कोई हिसाब भी न हो, बेहिसाब भी बच्चे पैदा हों तो बारह घंटे रात, बारह घंटे दिन, साधारण संयोग और कांबिनेशन से—ठीक है, पचास-पचास प्रतिशत हो जायं, कभी भूल-चूक दो चार प्रतिशत इधर-उधर हो, लेकिन नब्बे प्रतिशत तक बच्चे रात में जन्म लेते हैं. दस प्रतिशत बच्चे मुश्किल से जन्म दिन में लेते हैं. अकारण नहीं हो सकती यह बात. इसके पीछे बहुत कारण हैं. समझें, एक बच्चा रात में जन्म लेता है, तो उसका एक्सपोजर है, उसके चित्त की जो पहली घटना है जगत में अवतरण की—वह अंधेरे से संयुक्त होती है, प्रकाश से संयुक्त नहीं होती. यह तो सिर्फ उदाहरण के लिए कह रहा हूं, क्योंकि बात तो और विस्तीर्ण है. सिर्फ उदाहरण के लिए कह रहा हूं—उसके चित्त पर जो पहली घटना है वह अंधकार है. सूर्य अनुपस्थित है. सूर्य की ऊर्जा

अनुपस्थित है. चारों तरफ जगत सोया हुआ है. पौधे अपनी पत्तियों को बन्द किये हुए हैं. पक्षी अपने पंखों को सिकोड़ कर आंखें बन्द किए हुए अपने घोंसलों में छिप गए हैं. सारी पृथ्वी पर निन्द्रा है. हवा के कण-कण में चारों तरफ नींद है. सब सोया हुआ है. जागा हुआ कुछ भी नहीं है. यह पहला इम्पैक्ट है बच्चे का. अगर हम बुद्ध और महावीर से पूछें तो वह कहेंगे कि अधिक बच्चे इसलिए रात में जन्म लेते हैं, क्योंकि अधिक आत्माएं सोई हुई हैं— 'एस्लीप' हैं. दिन को वे नहीं चुन सकते पैदा होने के लिए. दिन को चुनना कठिन है. और हजार कारण हैं, और हजार कारण हैं. एक कारण महत्वपूर्ण है यह भी. अधिकतम लोग सोये हुए हैं, अधिकतम लोग तंद्रित हैं, अधिकतम लोग निद्रा में हैं, अधिकतम लोग आलस्य में, प्रमाद में हैं. सूर्य के जागने के साथ उनका जन्म ऊर्जा का जन्म होगा, सूर्य के डूबे हुए अंधेरे की आड़ में उनका जन्म नींद का जन्म होगा. रात में एक बच्चा पैदा हो रहा है, तो एक्सपोजर एक तरह का होने वाला है. जैसे कि हमने अंधेरे में एक फिल्म खोली हो या प्रकाश में एक फिल्म खोली हो, तो एक्सपोजर भिन्न होने वाले हैं. एक्सपोजर की बात थोड़ी और समझ लेनी चाहिए; क्योंकि वह ज्योतिष के बहुत गहराइयों से सम्बन्धित है.

जो वैज्ञानिक एक्सपोजर के सम्बन्ध में खोज करते हैं कि एक्सपोजर की घटना बहुत बड़ी है, छोटी घटना नहीं है. क्योंकि जिंदगी भर वह आपका पीछा करेगी. एक मुर्गी का बच्चा पैदा होता है. पैदा हुआ भागने लगता है मुर्गी के पीछे. हम कहते हैं कि माँ के पीछे भाग रहा है. वैज्ञानिक कहते हैं, नहीं. मां से कोई सम्बन्ध नहीं है; एक्सपोजर है. हम कहते अपनी मां के पीछे भाग रहा है, लेकिन वैज्ञानिक कहते हैं—नहीं, पहले हम भी ऐसे सोचते थे कि मां के पीछे भाग रहा है, लेकिन बात ऐसी नहीं है. और अब सैकड़ों प्रयोग किये गये तो बात सही हो गयी है, वैज्ञानिकों ने सैकड़ों प्रयोग किये. मुर्गी का बच्चा टूट रहा है—अण्डा फूट रहा है, चूजा बाहर निकल रहा है, तो उन्होंने मुर्गी को हटा लिया और उसकी जगह एक रबर का गुब्बारा रख दिया. बच्चे ने जिस चीज को पहली दफा देखा वह रबर का गुब्बारा था, मां नहीं थी. आप चकित होंगे यह जानकर कि वह बच्चा एक्सपोज्ड हो गया. इसके बाद वह रबर के गुब्बारे को ही मां की तरह प्रेम कर सका. फिर वह अपनी मां को प्रेम नहीं कर सका. रबर का गुब्बारा, हवा में जायगा तो वह पीछे भागेगा. उसकी मां भागती रहेगी तो उसकी फिक्र ही नहीं करेगा. रबर के गुब्बारे के प्रति वह आश्चर्यजनक रूप से संवेदनशील हो गया. जब थक जायेगा तो गुब्बारे के पास टिककर बैठ जायगा. गुब्बारे को प्रेम करने की

कोशिश करेगा, गुब्बारे से चोंचे लड़ाने की कोशिश करेगा; लेकिन मां से नहीं. इस संबंध में बहुत काम लारेंज नाम के एक वैज्ञानिक ने किया है और उसका कहना है कि वह जो 'फर्स्ट मोमेंट एक्सपोजर' है, बड़ा महत्वपूर्ण है. वह मां से इसीलिए संबंधित हो जाता है. मां होने की वजह से नहीं, फर्स्ट एक्सपोजर की वजह से. इसलिये नहीं कि वह मां है इसलिये उसके पीछे दौड़ता है. इसलिए कि वही सबसे पहले उसको उपलब्ध होती है, इसलिये उसके पीछे दौड़ता है. अभी इस पर और काम चला है.

जिन बच्चों को मां के पास बड़ा न किया जाय वह किसी स्त्री को जीवन में कभी प्रेम करने को समर्थ नहीं हो पाते. एक्सपोजर ही नहीं हो पाता. अगर एक बच्चे को उसको मां के पास बड़ा न किया जाय तो स्त्री का जो प्रतिबिम्ब उसके मन में बनना चाहिये वह बनता ही नहीं. और अगर पश्चिम में आज होमोसेक्सुअलिटी बढ़ती हुई है तो उसके एक बुनियादी कारणों में वह कारण है. हेट्रो सेक्सुअल, विजातीय यौन के प्रति जो प्रेम है वह पश्चिम में कम होता चला जा रहा है. और सजातीय यौन के प्रति प्रेम बढ़ता चला जाता है—जो विकृति है. लेकिन वह विकृति होगी; क्योंकि दूसरे यौन के प्रति प्रेम है, पुरुष का स्त्री के प्रति और स्त्री का पुरुष के प्रति, वह बहुत-सी शर्तों के साथ है. पहला तो एक्सपोजर जरूरी है. बच्चा पैदा हुआ है, तो उसके मन पर क्या एक्सपोज हो. यह बहुत सोचने-जैसी बात है. दुनियां में स्त्रियां तब तक सुखी न हो पायेंगी जब तक उनका एक्सपोजर पिता के साथ नहीं होता. मां के साथ हो रहा है— उनका एक्सपोजर, पिता के साथ होना चाहिए. पहला इम्पैक्ट लड़की के मन पर पिता का पड़ना चाहिए, तो ही वह किसी पुरुष को भरपूर मन से प्रेम करने में समर्थ हो पायेगी. **अगर पुरुष स्त्री से जीत जाता है, तो उसका कुल कारण इतना है कि लड़के और लड़कियां दोनों ही मां के पास बड़े होते हैं. लड़के का एक्सपोजर तो बिलकुल ठीक होता है स्त्री के प्रति, लेकिन लड़की का एक्सपोजर बिलकुल ठीक नहीं होता. इसलिए जब तक दुनिया में लड़की को पिता का एक्सपोजर नहीं मिलता, तब तक स्त्रियां कभी भी पुरुष के समकक्ष खड़ी नहीं हो सकेंगी;** न राजनीति के द्वारा, न नौकरी के द्वारा न आर्थिक स्वतन्त्रता के द्वारा. क्योंकि मनोवैज्ञानिक अर्थों में एक कमी उनमें रह जाती है. वह अब तक की पूरी संस्कृति उस कमी को पूरी नहीं कर पायी. अगर एक छोटा सा गुब्बारा या मुर्गी या मां, इनका एक्सपोजर प्रभावित करता है इतना ज्यादा कि व्यक्ति का चित्त सदा के लिए उससे निर्मित हो जाता है तो ज्योतिष कहता है—जो भी चारों तरफ मौजूद है, 'द होल युनिवर्स,' वह सभी का सभी उस

एक्सपोजर के क्षण में, उस चित्त के खुलने के क्षण में भीतर प्रवेश कर जाता है. और जीवन भर की सिम्पथीज और एन्टीपैथीज निर्मित हो जाती हैं. उस क्षण जो नक्षत्र पृथ्वी को चारों तरफ से घेरे हुए हैं—उसका कुल मतलब इतना है कि उस क्षण पृथ्वी के ऊपर उन नक्षत्रों की 'रेडियो एक्टीविटी' का प्रभाव पड़ रहा है. अब वैज्ञानिक मानते है कि प्रत्येक ग्रह की रेडियो एक्टीविटी अलग है. जैसे वीनस—उससे जो रेडियो सक्रियता हमारी तरफ आती है, वह चांद के रेडियो सक्रिय तत्वों से भिन्न है. जैसे ज्युपिटर—उससे जो रेडियो सक्रियता हम तक आती है, वह सूर्य के रेडियो तत्वों से भिन्न है. क्योंकि इन प्रत्येक ग्रहों के पास अलग तरह की गैसों और अलग तरह के तत्वों का वातावरण है. उन सबसे अलग-अलग प्रभाव पृथ्वी की तरफ आते हैं. और जब एक बच्चा पैदा हो रहा है, तो पृथ्वी के चारों तरफ क्षितिज को घेरकर खड़े हुए जो भी नक्षत्र हैं, ग्रह हैं, उपग्रह हैं, दूर आकाश में महातारे हैं—वे सबके सब उस एक्सपोजर के क्षण में बच्चे के चित्त पर गहराइयों तक प्रवेश कर जाते हैं. फिर उसकी कमजोरियां, उसकी ताकतें, उसकी सामर्थ्य, सब सदा के लिए प्रभावित हो जाता है.

अब जैसे हिरोशिमा में एटम बम के गिरने के बाद पता चला; हिरोशिमा में एटम बम जब तक नहीं गिरा था तब तक इतना ख्याल था, कि एटम गिरेगा तो लाखों लोग मरेंगे. लेकिन यह पता नहीं था कि पीढ़ियों तक आने वाले प्रभावित हो जायेंगे. हिरोशिमा, नागासाकी में जो लोग मर गये, मर गये. वह तो एक क्षण की बात थी, समाप्त हो गयी. लेकिन हिरोशिमा में जो वृक्ष बच गये, जो जानवर बच गये, जो पक्षी बच गये, जो मछलियां बच गयीं, जो आदमी बच गये वे सदा के लिए प्रभावित हो गये. अब वैज्ञानिक कहते हैं कि दस पीढ़ियों में हमें पूरा अन्दाज लग पायेगा कि क्या-क्या परिणाम हुए. क्योंकि इनका सब कुछ रेडियो एक्टीविटीज से प्रभावित हो गया. अब जो स्त्री बच गयी है उसके शरीर में जो अण्डे हैं वह प्रभावित हो गये हैं. अब वह अण्डे, कल उनमें से एक अण्डा बच्चा बनेगा. वह बच्चा वैसा ही बच्चा नहीं होगा जैसा साधारणतः होता है; क्योंकि एक विशेष तरह की रेडियो सक्रियता उस अण्डे में प्रवेश कर गयी. वह लंगड़ा हो सकता है, लूला हो सकता है, अंधा हो सकता हैं, उसकी चार आंख भी हो सकती हैं, आठ आंख भी हो सकती हैं—कुछ भी हो सकता है. अभी हम कुछ भी नहीं कह सकते, वह कैसा होगा, उसका मस्तिष्क बिल्कुल रुग्ण भी हो सकता है, प्रतिभाशाली भी हो सकता है, वह जीनियस भी पैदा हो सकता है. जैसा जीनियस कभी पैदा न हुआ हो. अभी हमें कुछ भी पता नहीं कि वह क्या

होगा. इतना पक्का पता है कि जैसा होना चाहिए साधारण आदमी वैसा वह नहीं होगा.

अगर एटम, एटम बहुत छोटी ताकत है. हमारे लिए बहुत बड़ी ताकत है. एक एटम एक लाख बीस हजार आदमियों को मार पाया हिरोशिमा और नागासाकी में—वह बहुत छोटी ताकत है. सूर्य के ऊपर जो ताकत है उसका हम इससे कोई हिसाब लगा सकते हैं. जैसे अरबों एटम बम एक साथ फूट रहे हों. उतनी रेडियो एक्टीविटीज सूरज के ऊपर है. और असाधारण है यह; क्योंकि सूरज चार अरब वर्षों से तो पृथ्वी को ही गर्मी दे रहा है और उससे पहले से. और अभी वैज्ञानिक कहते हैं कि कम से कम चार हजार वर्ष तक तो ठण्डे होने की कोई भी संभावना नहीं. प्रतिदिन इतनी गर्मी, सूर्य करोड़ मील दूर है पृथ्वी से. हिरोशिमा में जो घटना घटी है उसका प्रभाव दस मील से ज्यादा दूर नहीं पड़ता. दस करोड़ मील दूर सूरज है चार अरब वर्षों से तो वह हमें सब, सारी गर्मी दे रहा, फिर भी अभी रिक्त नहीं हुआ है. पर यह सूरज कुछ भी नहीं है. इससे भी बड़े महासूर्य हैं—ये सब जो तारे हैं आकाश में और इन प्रत्येक तारों से अपनी व्यक्तिगत और निजी क्षमता की सक्रियता हम तक प्रवाहित होती है.

एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक, जो अंतरिक्ष में फैलती ऊर्जाओं के सम्बन्ध में अध्ययन कर रहा है—गाकलिन—उसका कहना है कि जितनी ऊर्जाएं हमें अनुभव में आ रही हैं, उनमें से हम एक प्रतिशत के सम्बन्ध में भी पूरा नहीं जानते. जब से हमने कृत्रिम उपग्रह छोड़े हैं पृथ्वी के बाहर, तब से उन्होंने हमें इतनी खबरें दी हैं कि हमारे पास न शब्द हैं उन खबरों को समझने के लिए, न हमारे पास विज्ञान है. और इतनी ऊर्जाएं, इतनी इनर्जी चारों तरफ बह रही होंगी इसकी हमें कल्पना ही नहीं है. इस सम्बन्ध में एक बात और ख्याल में ले लेनी जरूरी है.

इस जगत में, जैसा मैंने कल कहा, लोग सोचते हैं कि ज्योतिष कोई विकसित होता हुआ विज्ञान है. मैंने आपसे कहा, हालत उल्टी है. ताजमहल अगर आपने देखा हो जमुना के उस पार कुछ दीवालें आपको उठी हुई दिखायी पड़ी होंगी. कहानी यह है कि शाहजहां ने मुमताज के लिए तो ताजमहल बनवाया और अपने लिए, जैसा संगमरमर का ताजमहल है ऐसी अपनी कब्र के लिए संगमूसा का, काले पत्थर का महल वह यमुना के उस पार बना रहा था. लेकिन वह पूरा नहीं हो पाया. ऐसी कथा सदा से प्रचलित थी, लेकिन अभी इतिहासज्ञों ने खोज की है तो पता चला कि वह जो उस तरफ दीवालें उठी खड़ी हैं वह किसी बनने वाले महल की दीवालें नहीं हैं, वह किसी

बहुत बड़े महल की हैं, जो गिर चुका खण्डहर है. पर उठती दीवालें और खण्डहर एक-से मालूम पड़ सकते हैं. एक नये मकान की दीवाल उठ रही है, अधूरी है, मकान बना नहीं. हजारों साल बाद तय करना मुश्किल हो जायेगा कि नये मकान की बनती दीवाल है या किसी बने बनाये मकान की, जो गिर चुका उसकी बची खुची अवशेष है, खण्डहर है. पिछले तीन-चार-पांच सौ सालों से यही समझा जाता था कि वह जो दूसरी तरफ महल खड़ा हुआ है, वह शाहजहां बनवा रहा था, वह पूरा नहीं हो पाया. लेकिन अभी जो खोज-बीन हुई है उससे पता चलता है कि वह महल पूरा था. और न केवल यह पता चलता है कि वह महल पूरा था; बल्कि यह भी पता चलता है कि ताजमहल शाहजहां ने खुद कभी नहीं बनवाया. वह भी हिन्दुओं का बहुत पुराना महल है, जिसको सिर्फ 'कनवर्ट' किया—जिसको सिर्फ थोड़ा-सा फर्क किया. और कई दफा इतनी हैरानी होती है कि जिन बातों को हम सुनने के आदी हो जाते हैं, फिर उससे भिन्न बात को हम सोचते भी नहीं. ताजमहल जैसी एक भी कब्र दुनिया में किसी ने नहीं बनायी. कब्र ऐसी बनायी भी नहीं जाती, ऐसी कब्र बनायी ही नहीं जाती. ताजमहल के चारों तरफ सिपाहियों के खड़े होने के स्थान हैं. बन्दूकें और तोपें लगाने के स्थान हैं, कब्रों की बन्दूकें और तोपें लगाकर कोई रक्षा नहीं करनी पड़ती. वह महल है पुराना, उसको सिर्फ कन्वर्ट किया गया है. वह दूसरी तरफ भी एक पुराना महल है जो गिर गया, जिसके खण्डहर शेष रह गये.

ज्योतिष भी खण्डहर की तरह है. एक बहुत बड़ा महल था, पूरा विज्ञान था, जो ढह गया. कोई नयी चीज नहीं है, कोई नया उठता हुआ मकान नहीं है. लेकिन जो दीवालें रह गयी हैं उनसे कुछ पता नहीं चलता कि कितना बड़ा महल उसकी जगह रहा होगा. बहुत बार सत्य मिलते हैं और खो जाते हैं. अरिस्टीकारस नाम के एक यूनानी ने जीसस से दो सौ-तीन सौ वर्ष पूर्व यह सत्य खोज निकाला था कि सूर्य केन्द्र है, पृथ्वी केन्द्र नहीं है. अरिस्टीकारस का यह सूत्र 'हेलियो सेन्ट्रिक,' सूरज केन्द्र पर है, जीसस से तीन सौ वर्ष पहले खोज निकाला. लेकिन जीसस के सौ वर्ष बाद टोलिनी ने इस सूत्र को उलट दिया और पृथ्वी को फिर केन्द्र बना दिया. और फिर दो हजार साल लग गये केपलर और कोपर्नीकस को खोजने में वापस, कि सूर्य केन्द्र है; पृथ्वी केन्द्र नहीं. दो हजार साल तक अरिस्टीकारस का सत्य दबा पड़ा रहा. दो हजार साल बाद जब कोपर्नीकस ने फिर से कहा तब अरस्टिकारस की किताबें खोजी गयीं. लोगों ने कहा, यह तो हैरानी की बात है. अमरीका कोलम्बस ने खोजा, ऐसा पश्चिम के लोग कहते हैं. एक बहुत प्रसिद्ध मजाक प्रचलित

है. आस्कर वायल अमरीका गया हुआ था. उसकी मान्यता थी कि अमरीका और भी बहुत पहले खोजा जा चुका है. और यह सच है. यह सचाई है कि अमरीका बहुत दफे खोजा जा चुका है और पुनः पुनः खो गया. उससे सम्बन्ध सूत्र टूट गये. एक व्यक्ति ने आस्कर वायल को पूछा कि हम सुनते हैं कि आप कहते हैं, अमरीका पहले भी खोजा जा चुका है. तो क्या आप नहीं मानते कि कोलम्बस ने पहली खोज की ? और अगर कोलम्बस ने पहली खोज नहीं की तो अमरीका बार-बार क्यों खो गया ? तो आस्कर वायल ने मजाक में कहा कि कोलम्बस ने पुनः खोज की है, 'ही रीडिस्कवर्ड अमेरिका, इट वाज डिस्कवर्ड सो मैनी टाइम्स, बट एवरी टाइम हश्ड अप.' हर बार इसको दबाकर चुप रखना पड़ा. महाभारत अमरीका की चर्चा करता है. अर्जुन की एक पत्नी मैक्सिको की लड़की है. मैक्सिको में जो मंदिर है वह हिन्दू मंदिर है जिस पर गणेश की मूर्ति तक खुदी हुई है.

बहुत बार सत्य खोज लिये जाते हैं, खो जाते हैं. बहुत बार हमें सत्य पकड़ में आ जाता है फिर खो जाता है. ज्योतिष उन बड़े से बड़े सत्यों में से एक है जो पूरा का पूरा ख्याल में आ चुका और खो गया. उसे फिर से खयाल में लाने के लिए बड़ी कठिनाई है, इसलिए मैं बहुत-सी दिशाओं से आपसे बात कर रहा हूं. क्योंकि ज्योतिष पर सीधी बात करने का अर्थ होता है कि वह जो सड़क पर ज्योतिषी बैठा है, शायद मैं उसके सम्बन्ध में कुछ कह रहा हूं. जिसको आप चार आने देकर और अपना भविष्य फल निकलवा आते हैं. शायद उसके सम्बन्ध में या उसके समर्थन में कुछ कह रहा हूं. नहीं ज्योतिष के नाम पर सौ में से निन्यानवे धोखाधड़ी है. और वह जो सौवां आदमी है, निन्यानवे को छोड़कर उसे समझना बहुत मुश्किल है. क्योंकि वह कभी इतना डागमेटिक नहीं हो सकता कि कह दे कि ऐसा होगा ही, क्योंकि वह जानता है कि ज्योतिष बहुत बड़ी घटना है. इतनी बड़ी घटना है कि आदमी बहुत झिझककर ही वहां पैर रख सकता है. जब मैं ज्योतिष के सम्बन्ध में कुछ कह रहा हूं तो मेरा प्रयोजन है कि मैं उस पूरे-पूरे विज्ञान को बहुत तरफ से आपको उसके दर्शन करा दूं, उस महल के. तो फिर आप भीतर बहुत आश्वस्त होकर प्रवेश कर सकें. और मैं जब ज्योतिष की बात कर रहा हूं तो ज्योतिषी की बात नहीं कर रहा हूं, वह उतनी छोटी बात नहीं है. पर आदमी की उत्सुकता उसी में है कि उसको पता चल जाय कि उसकी लड़की की शादी होगी कि नहीं होगी. इस सम्बन्ध में यह भी आपको कह दूं कि ज्योतिष के तीन हिस्से हैं.

एक, जिसे हम कहें अनिवार्य — एसेंशियल-- जिसमें रत्ती भर फर्क नहीं होता. वही सर्वाधिक कठिन है उसे जानना. फिर उसके बाहर की परिधि है-- नान एसेंशियल, जिसमें सब परिवर्तन हो सकते हैं. मगर हम उसी को जानने को उत्सुक होते हैं और उन दोनों के बीच में एक परिधि है, सेमी एसेंशियल—अर्द्ध अनिवार्य—जिसमें जानने से परिवर्तन हो सकते हैं. न जानने से कभी परिवर्तन नहीं होंगे. तीन हिस्से करने हैं. एसेंशियल जो बिलकुल गहरा है—अनिवार्य है, जिसमें कोई अन्तर नहीं हो सकता है, उसे जानने के बाद उसके साथ सहयोग करने के सिवाय कोई उपाय नहीं है. धर्मों ने इस अनिवार्य तथ्य की खोज के लिए ही ज्योतिष की ईजाद की, उस तरफ गये. उसके बाद दूसरा हिस्सा है— सेमी एसेंशियल — अर्द्ध अनिवार्य. अगर जान लेंगे तो बदल सकते हैं, अगर नहीं जानेंगे तो नहीं बदल पायेंगे. अज्ञान रहेगा तो जो होना है, वही होगा. ज्ञान होगा तो आल्टरनेटिव्स हैं, विकल्प हैं. बदलाहट हो सकती है. और तीसरा सबसे ऊपर का सरफेस, वह है नान-एसेंशियल. उसमें कुछ भी जरूरी नहीं है— सब सांयोगिक है.

लेकिन हम जिस ज्योतिषी की बात समझते हैं, वह नान एसेंशियल का ही मामला है. एक आदमी कहता है, मेरी नौकरी लग जायेगी या नहीं लग जायेगी. चांद-तारों के प्रभाव से आपकी नौकरी लगने न लगने का कोई भी गहरा सम्बन्ध नहीं है. एक आदमी पूछता है, मेरी शादी हो जायेगी या नहीं हो जायेगी. शादी के बिना भी समाज हो सकता है. एक आदमी पूछता है कि मैं गरीब रहूंगा या अमीर रहूंगा. एक समाज कम्युनिस्ट हो सकता है, कोई गरीब और अमीर नहीं होगा. ये नानएसेंशियल हिस्से हैं, जो हम पूछते हैं. एक आदमी पूछता है कि अस्सी साल में मैं सड़क पर से गुजर रहा था और एक संतरे के छिलके पर पैर पड़कर गिर पड़ा तो मेरे चांद-तारों का इसमें कोई हाथ है या नहीं. अब कोई चांद-तारे से तय नहीं किया जा सकता कि फलां-फलां नाम के संतरे से और फलां-फलां सड़क पर आपका पैर फिसले. यह निपट गंवारी है. लेकिन हमारी उत्सुकता इसमें है कि आज हम निकलेंगे सड़क पर, छिलके पर पैर पड़कर फिसल तो नहीं जायेगा. यह नान-एसेंशियल है. यह हजारों कारणों पर निर्भर है; लेकिन इसके होने की कोई अनिवार्यता नहीं है— इसका बीइंग से, आत्मा से कोई सम्बन्ध नहीं है. यह घटनाओं की सतह है. ज्योतिष से इसका कोई लेना-देना नहीं है और चूंकि ज्योतिषी इसी तरह की बात-चीत में लगे रहते हैं इसलिए ज्योतिष का भवन गिर गया. ज्योतिष के भवन के गिर जाने का कारण यह हुआ कि ये बातें बेवकूफी की हैं. कोई भी बुद्धिमान आदमी इस बात को मानने को राजी नहीं हो सकता

कि मैं जिस दिन पैदा हुआ उस दिन लिखा था कि मरीन ड्राइव पर फलां-फलां दिन एक छिलके पर मेरा पैर पड़ जायगा और मैं फिसल जाऊंगा. न तो मेरे फिसलने का चांद-तारों से कोई प्रयोजन है, न उस छिलके का कोई प्रयोजन है. इन बातों से संबंधित होने के कारण ज्योतिष बदनाम हुआ. और हम सबकी उत्सुकता यही है कि ऐसा पता चल जाय. इससे कोई सम्बन्ध नहीं है. सेमी एसेंशियल हैं, कुछ बातें हैं. जैसे—जन्म, मृत्यु सेमी एसेंशियल हैं. अगर आप इसके बाबत पूरा जान लें तो इसमें फर्क हो सकता है. और न जानें तो फर्क नहीं होगा. चिकित्सा की हमारी जानकारी बढ़ जायेगी, तो हम आदमी की उम्र लम्बी कर लेंगे, कर रहे हैं. अगर हमारी एटम बम की खोजबीन और बढ़ती चली गई तो हम लाखों लोगों को एकसाथ मार डालेंगे—मारा है, यह सेमी एसेंशियल, अर्द्ध अनिवार्य जगत है, जहां कुछ चीजें हो सकती हैं, नहीं भी हो सकती हैं. अगर जान लेंगे तो अच्छा है, क्योंकि विकल्प चुने जा सकते हैं. इसके बाद एसेंशियल अनिवार्य का जगत है. वहां कोई बदलाहट नहीं होती.

लेकिन हमारी उत्सुकता पहले तो नान-एसेंशियल में रहती है. कभी शायद किसी की सेमी-एसेंशियल तक जाती है. वह जो एसेंशियल है, अनिवार्य है, अपरिहार्य है, जिसमें कोई फर्क होता ही नहीं, उस केन्द्र तक हमारी पकड़ नहीं जाती, न हमारी इच्छा जाती है. महावीर एक गांव के पास गुजर रहे हैं. और महावीर का एक शिष्य घोषालक उनके साथ है, जो बाद में उनका विरोधी हो गया. एक पौधे के पास से दोनों गुजरते हैं. घोषालक महावीर से कहता है कि सुनिए, यह पौधा लगा हुआ है. क्या सोचते हैं आप, यह फूल तक पहुंचेगा या नहीं पहुंचेगा, इसमें फूल लगेंगे या नहीं लगेंगे, यह पौधा बचेगा या नहीं बचेगा, इसका भविष्य है या नहीं. महावीर आंख बन्द करके उसी पौधे के पास खड़े हो जाते हैं. घोषालक पूछता है, कहिये आंख बन्द करने से क्या होगा, टालिये मत, उसे पता भी नहीं कि महावीर आँख बन्द करके क्यों खड़े हो गए हैं ? वह एसेंशियल खोज रहे हैं. इस पौधे के बीइंग में उतरना जरूरी है, इस पौधे की आत्मा में उतरना जरूरी है. बिना इसके नहीं कहा जा सकता कि क्या होगा ? आंख खोलकर महावीर कहते हैं कि यह पौधा फूल तक पहुंचेगा. घोषालक उनके सामने ही पौधे को उखाड़कर फेंक देता है. और खिलखिलाकर हंसता है; क्योंकि इससे ज्यादा और अतर्क्य प्रमाण क्या होगा ? महावीर के लिए अब कुछ और कहने की जरूरत क्या है ? उसने पौधे को उखाड़कर फेंक दिया, उसने कहा कि देख लें. वह हंसता है, महावीर मुस्कराते हैं. वे दोनों अपने रास्ते चले जाते हैं. और सात दिन

बाद वापस उसी रास्ते पर लौट रहे हैं. जैसे ही महावीर और वे दोनों अपने आश्रम में पहुंचे, जहां उन्हें ठहर जाना है, बड़ी भयंकर वर्षा हुई, सात दिन तक मूसलाधार पानी पड़ता रहा. सात दिन तक निकल नहीं सके. फिर सात दिन बाद लौट रहे हैं. जब लौटते हैं तो ठीक जगह आकर महावीर खड़े हो गये हैं, जहां वे सात दिन पहले आंख बन्द करके खड़े थे. देखा कि वह पौधा खड़ा है. जोर से वर्षा हुई, उसकी जड़ें वापस गीली जमीन को पकड़ गयीं और पौधा खड़ा हो गया. महावीर फिर आंख बन्द करके पास खड़े हो गये, घोशालक बहुत परेशान हुआ. महावीर ने आंख खोली, घोशालक ने पूछा कि हैरान हूं, आश्चर्य ! इस पौधे को हम उखाड़कर फेंक गये, फिर खड़ा हो गया. महावीर ने कहा, यह फूल तक पहुंचेगा. और इसीलिए मैंने आंख बन्द करके और खड़े होके इसे देखा. इसकी आंतरिक पोटेंशियलिटी, इसकी आंतरिक संभावना क्या है ? इसके भीतर की स्थिति क्या है ? तुम इसे बाहर से फेंक दोगे उखाड़कर तो भी यह अपने पैर जमाकर खड़ा हो सकेगा ? यह कहीं आत्मघाती तो नहीं है, सुसाइडल इंस्टिंक्ट तो नहीं है इस पौधे में, कहीं यह मरने को उत्सुक तो नहीं है, अन्यथा यह तुम्हारा सहारा लेकर मर जायेगा. यह जीने को तत्पर है ? अगर यह जीने को तत्पर है, तो मैं जानता था कि तुम इसे उखाड़कर फेंक दोगे. घोषालक ने कहा, आप क्या कहते हैं ?

● एक काज्मिक, जागतिक अन्तर-संबंध का नाम ज्योतिष है.

महावीर ने कहा, जब मैं इस पौधे को देख रहा था तब तुम भी पास खड़े थे, तुम भी दिखाई पड़ रहे थे. और मैं जानता था कि तुम इसे उखाड़कर फेंकोगे. **इसलिए ठीक से जान लेना जरूरी है कि पौधे की खड़े रहने की आंतरिक क्षमता कितनी है ? इसके पास आत्मबल कितना है,** यह कहीं मरने को तो उत्सुक नहीं है कि कोई बहाना लेकर मर जाय, तो तुम्हारा बहाना लेकर भी मर सकता है; अन्यथा तुम्हारा उखाड़कर फेंका गया पौधा पुनः जड़ें पकड़ सकता है. घोषालक को दुबारा उस पौधे को उखाड़ फेंकने की हिम्मत न पड़ी—डरा. पिछली बार घोषालक हंसता हुआ गया था, इस बार महावीर हंसते हुए आगे बढ़े. घोषालक रास्ते में पूछने लगा, आप हंसते क्यों हैं ? महावीर ने कहा, मैं सोचता था कि देखें, तुम्हारी सामर्थ्य कितनी है. तुम दुबारा इसे उखाड़कर फेंकते हो या नहीं ? घोषालक ने पूछा कि आपको तो पता चल जाना चाहिए कि मैं उखाड़कर फेंकूंगा या नहीं. तब महावीर ने कहा वह गैर अनिवार्य है. उखाड़कर फेंक भी सकते हो, नहीं भी फेंक सकते हो. अनिवार्य यह था कि पौधा अभी जीना चाहता था. उसके पूरे प्राण जीना चाहते थे, वह अनिवार्य था—वह एसेंशियल था. यह तो गैर अनिवार्य है—

तुम फेंक भी सकते हो, नहीं भी फेंक सकते हो— तुम पर निर्भर है. लेकिन तुम पौधे से कमजोर सिद्ध हुए हो—हार गये. महावीर से घोषालक के नाराज हो जाने के कुछ कारणों में से एक कारण यह पौधा भी था—महावीर को छोड़कर चले जाने में.

जिस ज्योतिष की मैं बात कर रहा हूं उसका सम्बन्ध अनिवार्य से, एसेंशियल से, फाउण्डेशनल से है. आपकी उत्सुकता ज्यादा-से-ज्यादा सेमी–एसेंशियल तक जाती है. **पता लगाना चाहते हैं कि कितने दिन जिऊंगा, मर तो नहीं जाऊंगा. जीकर क्या करूंगा— जी ही लूंगा तो क्या करूंगा, इस तक आपकी उत्सुकता नहीं पहुंचती. मरूंगा, तो मर के मैं क्या करूंगा, इस तक आपकी उत्सुकता नहीं पहुंचती. घटनाओं तक पहुंचती है, आत्माओं तक नहीं पहुंचती.** जब मैं जी रहा हूं तो यह घटना है सिर्फ. जीकर मैं क्या कर रहा हूं ? जीकर मैं क्या हूं ? वह मेरी आत्मा है. जब मैं मरूंगा वह तो मेरी घटना होगी. लेकिन मरते क्षण में, मैं क्या होऊंगा, क्या करूंगा, वह मेरी आत्मा होगी. हम सब मरेंगे. मरने के मामले में सबकी घटना एक-सी घटेगी. लेकिन मरने के सम्बन्ध में, मरने के क्षण में हमारी स्थिति सबकी भिन्न होगी. कोई मुस्कराते हुए मर सकता है, तो कोई रोते हुए.

मुल्ला नसरुद्दीन से कोई पूछता है, जब वह मरने के करीब है. उससे कोई पूछ रहा है कि आपका क्या ख्याल है मुल्ला. लोग जब पैदा होते हैं तो कहां से आते हैं, मरते हैं तो कहां जाते हैं ? मुल्ला ने कहा, जहां तक अनुभव की बात है, मैंने लोगों को पैदा होते वक्त रोते ही पैदा होते देखा है, और मरते वक्त रोते ही जाते देखा है. अच्छी जगह से न आते हैं, न अच्छी जगह जाते हैं. इनको देखकर जो अन्दाज लगता है. न अच्छी जगह से आते हैं, न अच्छी जगह जाते हैं. आते हैं तब भी रोते हुए मालूम पड़ते हैं, जाते हैं तब भी रोते हुए मालूम पड़ते हैं. लेकिन नसरुद्दीन जैसा आदमी हंसता हुआ मरता है.

मौत तो घटना है, लेकिन हंसते हुए मरना आत्मा है. तो आप कभी ज्योतिषी से पूछिये कि मैं हंसते हुए मरूंगा कि रोते हुए मरूंगा. पूरी पृथ्वी पर एक आदमी ने नहीं पूछा ज्योतिषी से जाकर कि मैं मरते वक्त हंसते हुए मरूंगा कि रोते हुए मरूंगा. यह पूछने जैसी बात है, लेकिन यह 'एसेंशियल एस्ट्रोलाजी' से जुड़ी हुई बात है. आप पूछते हैं, कब मरूंगा ? जैसे मरना अपने आप में मूल्यवान है बहुत. कब तक जिऊंगा ? जैसे बस जी लेना काफी है. किसलिये जिऊंगा, क्यों जिऊंगा, जीकर क्या करूंगा, जीकर क्या हो जाऊंगा, कोई पूछने नहीं जाता, इसलिये महल गिर गया ज्योतिष का. क्योंकि वह महल गिर जायेगा, जिसके आधार नानएसेंशियल पर रखे हैं गैर जरूरी चीजों

पर जिसकी हमने दीवारें खड़ी कर दी हों, वह कैसे टिकेगा. आधार शिलायें चाहिये. मैं जिस ज्योतिष की बात कर रहा हूं वह जिसे ज्योतिष समझते रहे हैं, उससे गहरी है—उससे भिन्न, उसके आयाम और हैं. मैं इस बात की चर्चा कर रहा हूं कि कुछ आपके जीवन में अनिवार्य है और जगत के जीवन में संयुक्त है, लयबद्ध है; अलग-अलग नहीं है. उसमें पूरा जगत भागीदार है. उसमें आप अकेले नहीं हैं.

लेकिन बुद्ध कहते हैं कि अगर भविष्य में भी जो होने वाला है, वह न हो, तो मैं न हो सकूंगा; क्योंकि भविष्य और अतीत दोनों के बीच की मैं कड़ी हूं. कहीं भी कोई बदलाहट होगी, तो मैं वैसे नहीं हो सकूंगा--जैसा हूं. कल ने भी मुझे बनाया, आने वाला कल भी मुझे बनाता है--यही ज्योतिष है.

जब बुद्ध को ज्ञान हुआ, तब बुद्ध ने दोनों हाथ जोड़कर पृथ्वी पर सिर टेक दिया. कथा है कि आकाश से देवता बुद्ध को नमस्कार करने आये थे कि वह परम ज्ञान को उपलब्ध हुए हैं. बुद्ध को पृथ्वी पर हाथ टेके सिर रखे देखकर वे चकित हुए. उन्होंने पूछा— तुम, और किसको नमस्कार कर रहे हो ? क्योंकि हम तो तुम्हें नमस्कार करने स्वर्ग से आते हैं. और हम तो नहीं जानते कि बुद्ध किसी को नमस्कार करे, ऐसा कोई है. बुद्धत्व तो आखिरी बात है. बुद्ध ने आंखें खोलीं और बुद्ध ने कहा— जो भी घटित हुआ है, उसमें मैं अकेला नहीं हूं; सारा विश्व है, तो इस सबको धन्यवाद देने के लिये सिर टेक दिया है. यह एसेंशियल एस्ट्रोलाजी से बंधी हुई बात है. **इसलिए बुद्ध अपने भिक्षुओं से कहते थे कि जब भी तुम्हें कुछ भी भीतरी आनन्द मिले, तत्क्षण अनुग्रहीत हो जाना समस्त जगत के प्रति; क्योंकि तुम अकेले नहीं हो.** अगर सूरज न निकलता, अगर चांद न निकलता, अगर एक रत्ती भर घटना और घटी होती तो तुम्हें यह नहीं होने वाला था, जो हुआ है. माना कि तुम्हें आनन्द प्राप्त हुआ है, लेकिन उसमें सबका हाथ है—सारा जगत उसमें इकट्ठा है. **एक कास्मिक, जागतिक अन्तर-सम्बन्ध का नाम ज्योतिष है.** बुद्ध ऐसा नहीं कहेंगे कि मुझे हुआ है; बुद्ध इतना ही कहते हैं कि जगत को मेरे मध्य हुआ है. यह जो घटना घटी है—एनलाइटेनमेंट की—यह जो प्रकाश का आविर्भाव हुआ है, यह जगत ने मेरे बहाने जाना है. मैं सिर्फ एक बहाना हूं—

एक क्रासरोड, जहां सारे जगत के रास्ते आकर मिल गये हैं. कभी आपने ख्याल किया है कि चौराहा बड़ा भारी होता है, लेकिन चौराहा अपने आप में कुछ नहीं होता, वह जो चार रास्ते आकर मिले होते हैं, उन चारों को हटा लें तो चौराहा विदा हो जाता है. हम सब क्रिसक्रासप्वाइंट्स हैं, जहां जग की अनन्त शक्तियां आकर एक बिन्दु पर काटती हैं, वहाँ व्यक्ति निर्मित हो जाता है, इण्डीवीजुअल बन जाता है. वह जो सारभूत ज्योतिष है, उसका अर्थ केवल इतना ही है कि हम अलग नहीं हैं. एक, उस एक ब्रह्म के साथ हैं. उस एक ब्रह्माण्ड के साथ हैं और प्रत्येक घटना में भागीदार हैं.

तो बुद्ध ने कहा है कि मुझसे पहले जो बुद्ध हुए उनको नमस्कार करता हूं. और मेरे बाद जो बुद्ध होंगे उनको नमस्कार करता हूं. किसी ने पूछा, आप उनको नमस्कार करें जो आपके पहले हुए, यह समझ में आता है; क्योंकि हो सकता है, उनसे कोई जाना-अनजाना ऋण हो; क्योंकि जो आपसे पहले जान चुके हैं, उनके ज्ञान ने आपका साथ दिया हो, लेकिन अभी जो हुए ही नहीं, उनसे आपको क्या लेना-देना है, उनसे आपको कौन-सी सहायता मिली है ? तो बुद्ध ने कहा, जो हुए हैं उनसे भी मुझे सहायता मिली है, जो अभी नहीं हुए हैं, उनसे भी मुझे सहायता मिली है; क्योंकि जहां मैं खड़ा हूं, वहां अतीत और भविष्य एक हो गये हैं. वहां, जो जा चुका है वह उससे मिल रहा है, जो अभी आने को है. वहां, जो जा चुका है, उससे मिलन हो रहा है उसका, जो अभी आने को है. वहां सूर्योदय और सूर्यास्त एक ही बिन्दु पर खड़े हैं. तो मैं उन्हें भी नमस्कार करता हूं, जो होंगे. उनका भी मुझ पर ऋण है; क्योंकि अगर वह भविष्य में न हों तो मैं आज न हो सकूंगा. इसको समझना थोड़ा कठिन पड़ेगा. यह एसेंशियल एस्ट्रोलाजी की बात है. कल जो हुआ है अगर उसमें से कुछ भी खिसक जाय तो मैं न हो सकूंगा; क्योंकि मैं एक श्रंखला में बंधा हूं. यह समझ में आता है. अगर मेरे पिता न हों जगत में, तो मैं न हो सकूंगा, यह समझ में आता है. क्योंकि एक कड़ी अगर विदा हो जायेगी, तो मैं नहीं हो सकूंगा. अगर मेरे पिता के पिता न हों, तो मैं न हो सकूंगा, क्योंकि कड़ी विसर्जित हो जायगी. लेकिन मेरा भविष्य, अगर उसमें कोई कड़ी न हो तो मैं न हो सकूंगा, समझना बहुत मुश्किल पड़ेगा; क्योंकि उससे क्या लेना-देना, मैं तो हो ही गया हूं. लेकिन बुद्ध कहते हैं कि अगर भविष्य में भी जो होने वाला है, वह न हो, तो मैं न हो सकूंगा; क्योंकि भविष्य और अतीत दोनों के बीच की मैं कड़ी हूं. कहीं भी कोई बदलाहट होगी, तो मैं वैसे नहीं हो सकूंगा—जैसा हूं. कल ने भी मुझे बनाया, आने वाला कल भी मुझे बनाता है— यही ज्योतिष है. बीता कल ही नहीं, आने वाला कल भी. जा चुका नहीं, जो आ रहा, वह भी. जो सूरज पृथ्वी पर ऊगे

वह नहीं, जो ऊगेंगे वह भी. वह भी भागीदार हैं, वह भी आज के क्षण को निर्मित कर रहे हैं. क्योंकि जो वर्तमान का क्षण है, यह हो ही नहीं सकेगा अगर भविष्य का क्षण इसके आगे न खड़ा हो. उसके सहारे ही यह हो पाता है. हम सब के हाथ भविष्य के कन्धे पर रखे हुए हैं. हम सबके पैर अतीत के कन्धों पर पड़े हुए हैं. नीचे तो हमें दिखाई पड़ता है कि अगर मेरे नीचे जो खड़ा है, वह न हो, तो मैं गिर जाऊंगा. लेकिन भविष्य में मेरे जो फैले हाथ हैं, वह जो कन्धों को पकड़े हुए हैं, अगर वह भी न हों तो भी मैं गिर जाऊंगा.

जब कोई व्यक्ति अपने को इतनी आंतरिक एकता में अतीत और भविष्य के बीच जुड़ा हुआ पाता है, तब वह ज्योतिष को समझ पाता है. तब ज्योतिष धर्म बन जाता है, तब ज्योतिष अध्यात्म हो जाता है. और नहीं तो वह जो नान-एसेंशियल है, गैर-जरूरी है, उससे जुड़कर ज्योतिष सड़क की मदारीगिरी हो जाता है, उसका फिर कोई मूल्य नहीं रह जाता. श्रेष्ठतम विज्ञान भी जमीन पर पड़कर धूल की कीमत के हो जाते हैं. हम उनका क्या उपयोग करते हैं, इस पर सारी बात निर्भर है, इसलिए मैं बहुत द्वारों से एक तरफ आपको धक्का दे रहा हूं कि आपको यह खयाल में आ सके कि सब संयुक्त है. **संयुक्तता—इस जगत का एक परिवार होना या एक 'आर्गनिक बाडी' होना, एक शरीर की तरह होना है. मैं सांस लेता हूं, तो पूरा शरीर प्रभावित होता है. सूरज सांस लेता है तो पृथ्वी प्रभावित होती है. और दूर के महासूर्य हैं, वे भी कुछ करते हैं तो पृथ्वी प्रभावित होती है. तो हम भी प्रभावित होते हैं.** सब चीज—छोटा-सा रोआं तक महान सूर्यों के साथ जुड़कर कंपता है, कंपित होता है—यह ख्याल में आ जाय, तो हम सारभूत ज्योतिष में प्रवेश कर सकेंगे और सारभूत ज्योतिष की जो व्यर्थताएं हैं, उनसे भी बच सकेंगे क्षुद्रतम बातें हम ज्योतिष से जोड़कर बैठ गए हैं— अति क्षुद्रतम, जिनका कहीं भी कोई मूल्य नहीं है. और उनको जोड़ने की वजह से बड़ी कठिनाई होती है, जैसा हमने जोड़ रखा है कि एक आदमी गरीब पैदा होगा या एक आदमी अमीर पैदा होगा, तो इसका सम्बन्ध ज्योतिष से होगा. नहीं, गैर-जरूरी बात अगर आप नहीं जानते हैं, तो ज्योतिष से संबंध जुड़ा रहेगा. अगर आप जान लेते हैं तो आपके हाथ में आ जायगा.

एक बहुत मीठी कहानी आपको कहूं तो ख्याल में आये, जिन्दगी ऐसा ही बेलेंस है—ऐसा ही संतुलन है. मुहम्मद का एक शिष्य है अली. अली मुहम्मद से पूछता है कि बड़ा विवाद है सदा से कि मनुष्य स्वतन्त्र है अपने कृत्य में या परतन्त्र है. बंधा है कि मुक्त. मैं जो करना चाहता हूं, वह कर सकता हूं या नहीं कर सकता हूं. सदा से आदमी ने यह पूछा है. क्योंकि

अगर हम कर ही नहीं सकते कुछ तो फिर किसी आदमी को कहना, चोरी मत करो, झूठ मत बोलो, ईमानदार बनो, नासमझी है. एक आदमी अगर चोर होने को ही बंधा है, तो यह समझाते फिरना कि चोरी मत करो, नासमझी है. या फिर यह हो सकता है कि एक आदमी के भाग्य में बदा है कि वह यही समझाता रहे कि चोरी न करो जानते हुए कि चोर चोरी करेगा, बेइमान बेइमानी करेगा, असाधु असाधु होगा, हत्या करने वाला हत्या करेगा, लेकिन अपने भाग्य में यह बदा है कि अपने लोगों को कहते फिरो कि चोरी मत करो—एब्सर्ड है. **अगर सब सुनिश्चित है तो समस्त शिक्षाएं बेकार हैं—सब प्रॉफेट्स, सब पैगम्बर, सब तीर्थंकर व्यर्थ हैं.** महावीर से भी लोग पूछते हैं, बुद्ध से भी लोग पूछते हैं कि अगर होना है, वही होना है तो आप समझा क्यों रहे हैं, किसलिए समझा रहे हैं. मुहम्मद से भी अली पूछता है कि आप क्या कहते हैं? अगर महावीर से पूछा होता अली ने, तो महावीर ने जटिल उत्तर दिया होता. और बुद्ध से पूछा होता, तो बड़ी गहरी बात कही होती. लेकिन मुहम्मद ने वैसा उत्तर दिया था, जो अली की समझ में आ सकता था. कई बार मुहम्मद के उत्तर बहुत सीधे और साफ हैं. अक्सर ऐसा होता है, जो लोग कम पढ़े लिखे हैं, ग्रामीण हैं, उनके उत्तर सीधे और साफ होते हैं. जैसे—कबीर के, नानक के, या मुहम्मद के, या जीसस के. बुद्ध और महावीर और कृष्ण के उत्तर जटिल हैं. वह संस्कृति का मक्खन हैं. जीसस की बात ऐसी है जैसे किसी ने लट्ठ सिर पर मार दिया हो. कबीर तो कहते ही हैं— 'कबिरा खड़ा बजार में, लिये लुकाठी हाथ'. लट्ठ लिये बाजार में खड़े हैं. कोई आये, हम उसका सिर खोल दें. मोहम्मद ने कोई बहुत मेटाफिजिकल बात नहीं की, मोहम्मद ने कहा, अभी एक पैर उठाकर खड़ा हो जा. अली ने कहा, हम पूछते हैं कि कर्म करने में आदमी स्वतन्त्र है या परतन्त्र. मोहम्मद ने कहा, तू पहले एक पैर उठा. अली बेचारा एक पैर, बायां पैर उठाकर खड़ा हो गया. मुहम्मद ने कहा, अब तू दायां भी उठा ले. अली ने कहा, आप क्या बातें करते हैं. तो मुहम्मद ने कहा, अगर तू चाहता पहले, तो दाहिना भी उठा सकता था. अब नहीं उठा सकता. मुहम्मद ने कहा कि एक पैर उठाने को आदमी सदा स्वतन्त्र है. लेकिन एक पैर उठाते ही तत्काल दूसरा पैर बंध जाता है.

वह जो नान-एसेंशियल हिस्सा है हमारी जिंदगी का, गैर-जरूरी हिस्सा है, उसमें हम पूरी तरह पैर उठाने को स्वतंत्र हैं, लेकिन ध्यान रखना, उसमें उठाये गये पैर भी एसेंशियल हिस्से में बन्धन बन जाते हैं. वह जो बहुत जरूरी है वहां भी फंसाव पैदा हो जाता है. गैर-जरूरी बातों में पैर उठाते हैं और जरूरी बातों में फंस जाते हैं. मुहम्मद ने कहा, तू उठा सकता

था पहला पैर. दायां भी उठा सकता था. कोई मजबूरी न थी. लेकिन अब चूंकि तू बायां उठा चुका इसलिए दायां उठाने में असमर्थता होगी. आदमी की सीमाएं हैं. सीमाओं के भीतर स्वतन्त्रता है. स्वतन्त्रता सीमाओं के बाहर नहीं है.

बहुत पुराना संघर्ष है आदमी के चिंतन का. अगर आदमी पूरी तरह परतन्त्र है, जैसा कि ज्योतिषी साधारणतः कहते हुए मालूम पड़ते हैं, साधारण ज्योतिषी कहते हुए मालूम पड़ते हैं, सब सुनिश्चित है—जो विधि ने लिखा है वह होके रहेगा. तो फिर सारा कर्म व्यर्थ हो जाता है. और फिर जैसा कि तथाकथित तर्कवादी, बुद्धिवादी कहते हैं कि सब स्वच्छन्द है. कुछ बंधा हुआ नहीं है, कुछ होने का निश्चित नहीं है ? सब अनिश्चित है. तो जिन्दगी एक केयास और एक अराजकता और एक स्वच्छन्दता हो जाती है. फिर तो यह भी हो सकता है कि मैं चोरी करूं और मोक्ष को पाऊं. हत्या करूं और परमात्मा मिल जाय. क्योंकि जब कुछ भी बंधा हुआ नहीं है और किसी भी कदम से कोई दूसरा कदम बंधता नहीं है और जब कहीं भी कोई नियम और सीमा नहीं है.

फिर मुझे ख्याल आता है. मुल्ला नसरुद्दीन एक मस्जिद के नीचे से गुजर रहा है और एक आदमी मस्जिद के ऊपर से गिर पड़ा. नमाज या अजान पढ़ने चढ़ा था मीनार पर, ऊपर से गिर पड़ा. मुल्ला के कन्धे पर गिरा. मुल्ला की कमर टूट गयी. अस्पताल में मुल्ला भर्ती किये गये, उनके शिष्य उनको मिलने गये और शिष्यों ने कहा, मुल्ला, इससे क्या मतलब निकलता है? 'हाऊ डू यू इन्टरप्रेट,' इस घटना की व्याख्या क्या है ? क्योंकि मुल्ला हर घटना से व्याख्या निकालता था. मुल्ला ने कहा, इससे साफ-साफ जाहिर होता है कि कर्म का और फल का कोई सम्बन्ध नहीं है. कोई आदमी गिरता है, किसी की कमर टूट जाती हैं. इसलिए अब तुम कभी सैद्धान्तिक विवाद में मत पड़ना. यह बात सिद्ध होती है कि गिरे कोई, कमर किसी की टूट सकती है. वह आदमी तो मजे में है, वह उसके ऊपर सवार हो गया था. हम मर गये. न हम अजान पढ़ने चढ़े, न हमने मीनार पर कोई चढ़ाव किया था; हम अपने घर लौट रहे थे—हमारा कोई सम्बन्ध ही न था. इसलिए मुल्ला ने कहा, आज से सब सिद्धान्त की बात-चीत बन्द. कुछ भी हो सकता है, कोई कानून नहीं है. अराजकता है. नाराज था, स्वाभाविक है, उसकी कमर टूट गयी है.

दो विकल्प सीधे रहे हैं—एक विकल्प तो यह है कि ज्योतिषी, साधारणतः जैसे सड़क पर बैठने वाला ज्योतिषी कहता है; वह चाहे गरीब आदमी

का ज्योतिषी हो, चाहे अमीर का ज्योतिषी हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता. वह सड़कछापी है ज्योतिषी, जिससे कोई नानएसेंशियल पूछने जाता है, कि एलेक्शन में जीतेंगे कि हार जायेंगे. जैसे कि आपके एलेक्शन से चांद-तारों का कोई लेना-देना है. वह कहता है, सब बंधा हुआ है. कुछ इंच भर यहां-वहां नहीं हो सकता. वह भी गलत कहता है. और दूसरी तरफ तर्कवादी है, बुद्धिवादी है. वह कहता है, किसी चीज का कोई सम्बन्ध नहीं है. कुछ भी घट रहा है, सांयोगिक है, चांस है. कोई इंसीडेंस है, संयोग है. यहां कोई नियम नहीं है. सब अराजकता है. वह भी गलत कहता है. यहां नियम है. क्योंकि वह बुद्धिवादी कभी बुद्ध की तरह आनन्द से भरा हुआ नहीं मिलता. वह बुद्धिवादी धर्म और ईश्वर को और आत्मा को तर्क से इन्कार तो कर लेता है, लेकिन कभी महावीर की प्रसन्नता को उपलब्ध नहीं होता. जरूर महावीर कुछ करते हैं, जिससे उनकी प्रसन्नता फलित होती है. और बुद्ध कुछ करते हैं जिससे उनकी समाधि निकलती है. और कृष्ण कुछ करते हैं जिससे उनकी बांसुरी के स्वर अलग हैं.

स्थिति तीसरी है और तीसरी स्थिति यह है, जो बिल्कुल सारभूत है, जो बिल्कुल अन्तरतम है. वह बिल्कुल सुनिश्चित है. जितना हम अपने केन्द्र की तरफ आते हैं उतना निश्चय के करीब आते हैं. जितना हम अपनी परिधि की तरफ, सरकमफ्रेंस की तरफ जाते हैं, उतना संयोग के करीब जाते हैं. जितना हम बाहर की घटना की बात कर रहे हैं, उतनी सांयोगिक बात है. जितनी हम भीतर की बात कर रहे हैं, नियम और विज्ञान पर उतनी ही सुनिश्चित बात हो जाती है. दोनों के बीच में भी जगह है, जहां बहुत रूपांतर होते हैं. जहां जानने वाला आदमी विकल्प चुन लेता है. नहीं जानने वाला अंधेरे में वही चुन लेता है. जो भाग्य है. जो अंधेरा, जो संयोग उसको पकड़ा देता है. तीन बातें हुईं. ऐसा क्षेत्र है जहां सब सुनिश्चित है, उसे जानना सारभूत ज्योतिष को जानना है. ऐसा क्षेत्र है जहां सब अनिश्चित है, उसे जानना व्यावहारिक जगत को जानना है. और ऐसा क्षेत्र है जो दोनों के बीच में है, उसे जानकर आदमी जो नहीं होना चाहिए उससे बच जाता है, जो होना चाहिए उसे कर लेता है. और अगर परिधि पर और परिधि और केन्द्र के मध्य में आदमी इस भांति जिये कि केन्द्र पर पहुंच पाये, तो उसकी जीवन की यात्रा धार्मिक हो जाती है. और अगर इस भांति जिये कि केन्द्र पर कभी न पहुंच पाये, तो उसके जीवन की यात्रा अधार्मिक हो जाती है. जैसे, एक आदमी चोरी करने खड़ा है. चोरी करना कोई नियति नहीं है. चोरी करनी ही पड़ेगी, ऐसा कोई सवाल नहीं है. स्वतंत्रता पूरी मौजूद है. हां, करने के बाद एक पैर उठ जायेगा, दूसरा पैर फंस जायेगा. करने के बाद न करना

मुश्किल हो जायेगा. करने के बाद बचना मुश्किल हो जायेगा. किये हुए का सारा का सारा प्रभाव व्यक्तित्व को ग्रसित कर लेगा. लेकिन, जब तक नहीं किया है तब तक विकल्प मौजूद है. हां और ना के बीच में आदमी का चित्त डोलता है. अगर वह ना कर दे, तो केन्द्र की तरफ आ जायेगा. अगर वह हां कर दे, तो परिधि पर चला जायेगा. वह जो मध्य में चुनाव, वहां अगर वह गलत को चुन ले तो परिधि पर फेंक दिया जाता है और अगर सही को चुन ले तो केन्द्र की तरफ आ जाता है—उस ज्योतिष की तरफ जो हमारे जीवन का सारभूत है.

कुछ बातें मैंने कहीं. आज मैंने एक बात आपसे कही और वह यह कि सूर्य के हम फैले हुए हाथ हैं. सूर्य से जन्मती है पृथ्वी, पृथ्वी से जन्मते हैं हम. हम अलग नहीं हैं, हम जुड़े हैं. हम सूर्य की ही दूर तक फैली हुई शाखाएं और पत्ते हैं. सूर्य की जड़ों में जो होता है वह हमारे पत्ते के रोएं-रोएं, रेशे-रेशे तक फैल जाता है और कम्पित कर जाता है. यदि यह ख्याल में हो तो हम जगत के बीच एक पारिवारिक बोध को उपलब्ध हो सकते हैं. तब हमें स्वयं की अस्मिता और अहंकार में जीने का कोई प्रयोजन नहीं है. और ज्योतिष की सबसे बड़ी चोट अहंकार पर है. अगर ज्योतिष सही है, तो अहंकार गलत है, ऐसा समझें. और अगर ज्योतिष गलत है, तो फिर अहंकार के अतिरिक्त कुछ सही होने को नहीं बचता. अगर ज्योतिष सही है तो जगत सही है और मैं गलत हूं एक ढेले की तरह, जगत का एक टुकड़ा ही, एक हिस्सा ही. और कितना नाचीज टुकड़ा है, जिसकी कोई गणना भी नहीं हो सकती. अगर ज्योतिष सही है तो मैं नहीं हूं. शक्तियों का एक प्रवाह है, उसी में एक छोटी लहर मैं हूं. किसी बड़ी लहर पर सवार, कभी-कभी भ्रम पैदा हो जाता है कि मैं भी हूं. वह बड़ी लहर ख्याल में नहीं रह जाती और बड़ी लहर भी किसी सागर पर सवार है. उसका तो बिल्कुल ख्याल नहीं रह जाता. नीचे से सागर हाथ अलग कर लेता है. बड़ी लहर बिखरने लगती है, बड़ी लहर बिखरती है, मैं खो जाता हूं. अकारण दुख ले लेता हूं कि मिट जाऊं, क्योंकि अकारण मैंने सुख लिया था कि हूं. अगर उसी वक्त देख लेता कि मैं नहीं हूं, बड़ी लहर है, बड़ा सागर है. सागर की मर्जी से उठता हूं, सागर की मर्जी से खो जाता हूं. अगर ऐसी भाव दशा बन जाती है कि अनन्त की मर्जी का मैं एक हिस्सा हूं तो कोई दुख न था. हां, वह तथाकथित सुख भी फिर नहीं हो सकता, जो हम लेते रहते हैं. मैंने जीता, मैंने कमाया, वह सुख भी नहीं रह जायेगा. वह दुख भी नहीं रह जायेगा कि मैं मिटा, मैं बर्बाद हुआ, मैं डूब गया, नष्ट हो गया, हार गया, पराजित हुआ, वह दुख ही नहीं रह जायेगा. और जब यह दोनों सुख और दुख नहीं रह जाते तब हम उस सारभूत जगत में प्रवेश करते हैं जहां आनंद

है. ज्योतिष आनन्द का द्वार बन जाता है. अगर हम ऐसा देखें कि वह हमारी अस्मिता को गलाता है, हमारा अहंकार बिखारता है, हमारी इगो को हटा देता है. लेकिन जब हम बाजार में, सड़क पर ज्योतिषी के पास जाते हैं तो अपने अहंकार की सुरक्षा के लिए पूछने, कि घाटा तो नहीं लगेगा यह लाटरी-मिल जायेगी कि नहीं मिलेगी, यह धन्धा हाथ में लेते है, सफलता निश्चितहै? अहंकार के लिए हम पूछने जाते हैं और मजा यह है कि ज्योतिष पूरा का पूरा अहंकार के विपरीत है. **ज्योतिष का अर्थ यह है, आप नहीं हो, जगत है. आप नहीं हो, ब्रह्माण्ड है.** विराट शक्तियों का प्रभाव है, आप कुछ भी नहीं .है इस ज्योतिष की तरफ ख्याल आये, और तभी आ सकता हैं जब हम इस विराट जगत के बीच अपने को एक हिस्से की तरह देखें. इसलिए मैंने कहा कि सूर्य से किस भांति सारा का सारा संयुक्त और जुड़ा हुआ है. अगर सूर्य से हमें पता चल जाय कि हम जुड़े हुए हैं, तो फिर हमें पता चलेगा कि सूर्य और महासूर्यों से जुड़ा हुआ है. कोई चार अरब सूर्य हैं और वैज्ञानिक कहते हैं, इन सभी सूर्यों का जन्म किसी महासूर्य से हुआ है. अब तक हमें उसका कोई अन्दाज नहीं है, वह कहां होगा ? जैसे पृथ्वी अपनी कील पर घूमती है है और साथ ही सूरज का चक्कर लगाती है. ऐसे ही सूरज अपनी कील पर घूमता है और किसी बिन्दु का चक्कर लगा रहा है. उस बिन्दु का ठीक-ठीक पता नहीं है कि वह बिन्दु क्या है, जिसका सूरज चक्कर लगा रहा है. विराट चक्कर जारी है. जिस बिन्दु का सूरज चक्कर लगा रहा है वह बिन्दु और सूरज का पूरा का पूरा सौर परिवार भी किसी और महाबिन्दु के चक्कर में संलग्न हैं. मन्दिरों में परिक्रमा बनी है. वह परिक्रमा इसका प्रतीक है कि इस जगत में सारी चीजें किसी की परिक्रमा कर रही हैं. प्रत्येक अपने में घूम रहा है और फिर किसी की परिक्रमा कर रहा है. फिर वे दोनों मिलकर किसी और बड़े की परिक्रमा करते हैं. फिर वे तीनों मिलकर और किसी की परिक्रमा करते हैं. वह जो अल्टीमेट है, जिसकी सभी परिक्रमा कर रहे हैं, उसको ज्ञानियों ने ब्रह्म कहा है. उस अंतिम को, जो किसी की परिक्रमा नहीं कर रहा है, जो अपने में भी नहीं घूम रहा है और किसी की परिक्रमा भी नहीं कर रहा है. ध्यान रखें, जो अपने में घूमेगा वह किसी की परिक्रमा जरूर करेगा, जो अपने में भी नहीं घूमेगा वह फिर किसी की परिक्रमा नहीं करता. वह शून्य और शान्त है. वह धुरी, वह कील जिस पर सारा ब्रह्माण्ड घूम रहा है, जिससे सारा ब्रह्माण्ड फैलता है और सिकुड़ता है. हिन्दुओं ने तो सोचा है कि जैसे कली फूल बनती है, फिर बिखर जाती है, ऐसे ही पूरा जगत खिलता है, फैलता है, एक्सपेंड होता है. फिर प्रलय को उपलब्ध हो जाता है. जैसे दिन होता है

और रात होती है ऐसे ही सारा जगत का दिन है और फिर सारे जगत की रात हो जाती है.

जैसा मैंने कहा कि ग्यारह वर्ष की एक लय है, नब्बे वर्ष की एक लय है. ऐसा हिन्दू विचार का खयाल है कि अरबों-खरबों वर्ष की भी एक लय है. उस लय में जगत उठता है, जवान होता है. पृथ्वियां पैदा होती हैं, चाँद तारे फैलते हैं. बसती हैं बस्तियां, लोग जन्मते हैं. करोड़ों-करोड़ों प्राणी पैदा होते हैं. और कोई अकेली पृथ्वी पर हो जाते हैं, ऐसा नहीं. अब वैज्ञानिक कहते हैं कि कम से कम पचास हजार ग्रहों पर जीवन होना चाहिए, कम से कम. यह मिनिमम है, इतना तो होगा ही. इससे ज्यादा हो सकता है. इतने बड़े विराट जगत में अकेली पृथ्वी पर जीवन हो यह संभव नहीं मालूम होता. पचास हजार ग्रहों पर, पचास हजार पृथ्वियों पर जीवन है. अनंत फैलाव है, फिर सब सिकुड़ जाता है. यह पृथ्वी सदा नहीं थी, सदा नहीं होगी. जैसे मैं सदा नहीं था, सदा नहीं होऊंगा, वैसे यह पृथ्वी सदा नहीं थी, सदा नहीं होगी. यह सूरज भी सदा नहीं था, सदा नहीं होगा. ये चांद-तारे भी सदा नहीं थे, सदा नहीं होंगे. इनके होने और न होने का बर्तुल घूमता रहता है. उस विराट पहिये में हम भी किसी एक पहिये की धुरी पर न होने जैसे कहीं हैं, और हम सोचते हों कि हम अलग हैं, तो हमारी हाल त वैसी ही है जैसे कोई आदमी ट्रेन में बैठा हो.

मैंने सुना है, एक आदमी एक हवाई जहाज पर सवार हुआ. और जल्दी पहुंच जाय इसलिए हवाई जहाज के भीतर चलने लगा. जल्दी पहुंच जाने के खयाल से, स्वाभाविक तर्क कि अगर जल्दी चलियेगा तो जल्दी पहुंच जाइएगा. यात्रियों ने उसे पकड़ा और कहा कि आप क्या कर रहे हैं ? उसने कहा कि मैं थोड़ा जल्दी में हूं, जमीन पर जो उसका तर्क था. वह पहली दफे हवाई जहाज में सवार हुआ. जमीन पर वह जानता था कि जल्दी चलिये तो जल्दी पहुंच जाते हैं. हवाई जहाज पर भी वह जल्दी चल रहा था. इसका बिना खयाल किए कि उसका चलना अब इर्रेलेवेंट है, अब असंगत है. अब हवाई जहाज चल ही रहा है. वह चलकर सिर्फ अपने को थका ले सकता है. जल्दी नहीं पहुंचेगा. यह हो सकता है कि पहुंचते-पहुंचते इतना थक जाय कि उठ भी न पाये. उसे विश्राम कर लेना चाहिए. उसे आंख बन्द करके लेट जाना चाहिए.

धार्मिक व्यक्ति मैं उसे कहता हूं, जो इस जगत के विराट गति के भीतर विश्राम को उपलब्ध है. जो जानता है विराट चल रहा है, जल्दी नहीं

है. मेरी जल्दी से कुछ होगा नहीं. अगर मैं इस विराट की लयबद्धता में एक बना रहूं तो वही काफी है. वही आनन्दपूर्ण है. ज्योतिष के लिए मैं इसीलिए आपसे इतनी बातें कहा हूं कि यह खयाल में आ जाय तो ज्योतिष आपके लिए अध्यात्म का द्वार सिद्ध हो सकता है.

तुम बिन कौन उबारे !

तुम बिन कौन उबारे मोहे-प्रभु
निकल न पाये
मोहजाल से
लाख जतन कर हारे !

बीत गये युग सांझ-सकारे
कब से पड़ा हूं तुम्हरे द्वारे
'नाथ' तू ही जो पार उतारे
हम तो जीवन हारे !
तुम बिन कौन उबारे !!

मुक्ति मिली ना जनम-जनम में
मन की प्यास बुझे दरशन में
आया हूं प्रभु तव चरनन में
हर लो पाप हमारे !
तुम बिन कौन उबारे !!

लौ जिस-जिसने तुमसे लगाई
तुमने उसकी बिगड़ी बनाई
रूठे हो क्यों 'नीश-कन्हाई
हे ! दुखियों के सहारे !
तुम बिन कौन उबारे !!

—'आकुल' राजेन्द्र

नव-संन्यास अंतर्राष्ट्रीय के बढ़ते चरण

'रजनीश-मित्र मंडली' : जबलपुर : एक झलक

४ फरवरी १९७२ की संध्या. एक लम्बी प्रतीक्षा के बाद मोटर स्टैण्ड पर पुनः प्रतीक्षा. बस लेट हो गई है. तब तक क्या करें जबलपुर के संन्यासी एवं प्रेमी जन ! मोटर स्टैण्ड पर कीर्तन शुरू हो गया. प्रेमियों के भीतर का आनन्द बाहर उमड़ पड़ा. तभी तो कीर्तन कम, नृत्य अधिक, शब्द कम, पुलक अधिक. दर्शक जमा हो गए. कौतूहल वश घेर लिये. कुछ देर बाद बस का आना एवं जबलपुर के संन्यासियों का भगवान श्री रजनीश की जय बोलते हुए मन्डली का स्वागत करना. कोई किसी के गले लग गया है, कोई किसी के गले में फूल-माला पहना रहा है तो कोई फुर्ती से फूल-माला पहनाने वाले के हाथ से लेकर पहनाने वाले के ही गले में माला डाल दे रहा है. कैसा मधुर मिलन है. यही है वह मण्डली जिसके लिए अजमेर के स्वामी परमानन्द भारती ने एक पत्र में लिखा था: "कुछ लुटेरे मेरे नगर में आये हुए हैं जो कि बुरी तरह लूटे जा रहे हैं अथवा कौन जाने लुटाये जा रहे हैं"...कोई पूछता है विदेशी मित्र दो ही आये हैं क्यों ? मालूम होता है तीन मित्रों को सिवनी से बम्बई वापस चले जाना पड़ा था कुछ व्यक्तिगत कार्यों से. कारें चल पड़ीं श्री नाथ ताल स्थित श्री खण्डेलवाल जी के निवास की ओर जहां अतिथि-मित्रों के ठहरने की व्यवस्था है. आज कोई कार्यक्रम नहीं है. थोड़ा सा कार्यक्रम की रूप रेखा देखना...स्नान...भोजन...विश्राम.

५ फरवरी की प्रातः ८ बजे. रेलवे के डिवीज़नल मेडिकल आफीसर डॉ० ए० यू० बिजलानी के निवास पर उनके बड़े लान में 'सक्रिय ध्यान' के प्रयोग. पूरी शक्ति लगाएं...पूरी शक्ति...९९ प्रतिशत से नहीं चलेगा...१०० प्र० श० डूब जाना है. आज ५० साधक ध्यान के प्रयोग में सम्मिलित हुए. दर्शक ज्यादा रहे....मध्यान्ह ४ बजे नगर संकीर्तन, घमापुर चौराहे से राम-मंदिर तक. स्वामी चैतन्य भारती नहीं आये हैं. उन्हें तेज़ बुखार है. उर्मिला जी के निवास पर विश्राम कर रहे हैं व उपचार ले रहे हैं. खैर...कीर्तन

शुरू हो गया है. सड़क का यातायात अवरूद्ध हो चला है. सड़क के दायें-बायें स्थित मकानों के छज्जों व छतों से स्त्री-पुरुष-बच्चे सभी भौंचक्के से झांक रहे हैं. कोई कहता है: क्या ये 'हरे कृष्ण आन्दोलन' से संबंधित लोगों की टोली है ? तभी मा आनन्द मधु माइक हाथ में लेती हुई बोलती हैं 'भगवान श्री रजनीश की.' आसमान गूंज जाता है: 'जय.' मा मधुर आवाज़ में आगे बोलती हैं: आदरणीय नगर जनो, आप के ही नगर के भगवान श्री रजनीश के संन्यासी मित्र बाहर से आपके नगर में पधारे हैं...उनका कार्यक्रम इस प्रकार है...आप सब सादर आमंत्रित हैं... भगवान श्री रजनीश की: 'जय.' राम मंदिर पहुंच कर कीर्तन समाप्त.

३ से ५बजे पत्रकार वार्ता (Press-Conference) सत्कार होटल में. लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक उपस्थित हैं. मा आनंद मधु ने पत्रकारों के समक्ष भगवान श्री रजनीश द्वारा प्रेरित नव संन्यास की अभिनव दृष्टि को स्पष्ट किया तथा 'नव संन्यास अंतर्राष्ट्रीय' की गति विधियों एवं भावी कार्यक्रमों से परिचित कराया. तत्पश्चात् पत्रकार मित्रों ने मा से अनेक प्रश्न किये. एक प्रश्न था: "क्या नव-संन्यास के अंतर्गत दीक्षित हुए लोगों में इस्लाम धर्म के मानने वाले भी हैं?" मां का उत्तर था: "हां, इस्लाम धर्म के लोग भी आये हैं: हिन्दू, जैन, सिख, ईसाई-पारसी सभी सम्प्रदायों से मित्र आये हैं. आदि...आदि....

संध्या ८ बजे पं० माखन लाल चतुर्वेदी भवन में मा आनन्द मधु के प्रवचन. मा आनन्द मधु कहती हैं: 'प्यारे मित्रो, इस नगर में हम क्या बोल सकते हैं. जहां कि स्वयं भगवान श्री रजनीश ने सैकड़ों बार अपनी अमृतमय वाणी से आप को नहलाया-डुबोया है. हम तो जबलपुर तीर्थ में आये हुए हैं जो कि भगवान श्री की लीला स्थली है. हम तो इस नगर के प्रति अनुग्रह व्यक्त करने आये हैं जिसने सारी मानवता को रजनीश जैसा रत्न दिया.... कई मित्रों की आंखें डब डबा आई हैं, कई की रूमालें गीली हो गई हैं.... प्रवचन के बाद ६ मिनट का शिथिल ध्यान.

आज संध्या ८ बजे जब प्रवचन यहां चल रहा था, ठीक उसी समय स्वामी अमृत वैराग्य राम मंदिर में सम्बोधित कर रहे थे.

६ फरवरी को पुनः डॉ० बिजलानी के निवास पर ध्यान के प्रयोग, प्रभु-कृपा-चिकित्सा एवं २ से ३ बजे व्यक्तिगत मुलाकातें, ४ से ५ बजे 'नगर संकीर्तन' सदर के प्रमुख मार्गों पर एवं संध्या ८ बजे पं० माखन लाल चतुर्वेदी भवन में स्वामी चैतन्य भारती के प्रवचन. स्वामी जी का प्रवचन बेहद पसंद

किया गया. संध्या ७।। बजे जेक्शन्स होटल में 'लायन्स क्लब' को सम्बोधित किया मा आनन्द मधु ने. विषय था 'ध्यान एवं धर्म' (Religion & Meditation) 'लायंस क्लब' के सदस्यों में प्रमुखतः सभी वर्गों के सदस्य थे. मा ने उपर्युक्त विषय पर सारगर्भित भाषण दिया एवं शिथिल ध्यान का प्रयोग भी करवाया.

७ फरवरी की प्रातः डॉ० बिजलानी के निवास पर सक्रिय ध्यान. प्रभु-कृपा-चिकित्सा. ४ से ५।। नगर संकीर्तन शहर के प्रमुख मार्गों पर अर्थात् करम चंद चौक से प्रारंभ होकर तुलाराम चौक, अंधेर देव, फव्वारा, कमानिया, गंजीपुरा व सुपर मार्केट पर समाप्त. ८ बजे 'पं० माखन लाल चतर्वेदी भवन' में पुनः प्रवचन.

८ फरवरी को 'अमृत धाम' देवताल में ध्यान के प्रयोग आदि कार्य-क्रम. 'अमृत धाम' में अपने विचार व्यक्त करते हुए नगर कांग्रेस कमेटी के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर बड़ेरिया के कहा: "भगवान श्री रजनीश ने नगर का गौरव बढ़ाया है." और कि "भगवान श्री रजनीश के हर कार्य में मेरा पूर्ण सहयोग रहेगा."

९ फरवरी को शहीद स्मारक भवन के लान पर ध्यान के प्रयोग. १००-१५० मित्र ध्यान में सम्मिलित हुए. पांच-सात सौ दर्शक रहे. आज उन स्थानों पर कीर्तन किया गया तथा चित्र लिए गये जहां भगवान श्री कभी रह चुके हैं, पढ़ चुके हैं अथवा पढ़ा चुके हैं. संन्यासी जब कमला नेहरू नगर व नेपियर टाउन स्थित योगेश भवन पहुंचे तो उनमें से कोई, जो इन स्थानों पर भगवान श्री का निकटता से स्नेह पा चुके हैं उनकी आंखें छलछला आईं, अनेक हिचकियां ले-लेकर रो पड़े. रात्रि ७।। बजे शहीद स्मारक भवन में धर्म क्रांति सम्मेलन का सफल आयोजन. मा आनन्द मधु व स्वामी चैतन्य भारती के अतिरिक्त नगर के प्रतिष्ठित पत्रकार श्री भगवतीधर बाजपेयी एवं हरिजन सेवक समाज के जिलाध्यक्ष श्री हरिहर जी व्यास ने अपने विचार व्यक्त किये. मुझे आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता थी कि सब भगवान श्री रजनीश के पक्ष में बोलते थे. श्री बाजपेयी ने कहा: "अब रजनीश जी को अस्वीकार नहीं किया जा सकता जबकि उनके पीछे विभिन्न देशों के अच्छे सुशिक्षित वर्ग से हजारों-हजार लोग चल रहे हैं. यह सब अकारण नहीं हो सकता." उन्होंने आगे कहा: "यह हमारे नगर के लिए गौरव की बात है." मुझे सहज ही भगवान श्री के वे वचन स्मरण हो आये जो उन्होंने जबलपुर से बम्बई जाते समय अपने अभिनन्दन समारोह के अवसर पर कहे थे. उन्होंने कहा था: "शायद मैं

लौटकर आऊं तो ज्यादा काम का हो सकूं शायद तब आपको मुझे समझने में सरलता हो."

प्रवचन-समाप्ति पर जबलपुर की मा अमृत बोधि ने एक बड़ा हृदय-स्पर्शी विदा-गीत प्रस्तुत किया. अन्त में नव-संन्यास अंतर्राष्ट्रीय की मध्यप्रदेश शाखा की ओर से मण्डली के प्रति आभार प्रकट करते हुए स्वामी अगेह भारती ने कहा : "मैं मण्डली का धन्यवाद करता हूं व हार्दिक आभार प्रकट करता हूं कि वह हमारे नगर में आई और उसने वह करके दिखाया जो स्वयं भगवान श्री नहीं कर सके थे. (बहुत कुछ है जो शायद छोटे लोगों से ही हो पाता है) मण्डली ने हमें नये सिरे से सोचने-समझने का अवसर दिया, एक खयाल दिया कि हम फिर से समझने का यत्न करें कि आखिर क्या है रजनीश में जिनसे मिलकर कोई इतने आनन्द से भर जाता है कि उसे बांटने के लिए सड़कों पर नृत्य करता है. उसको उनमें ऐसा क्या दिखता है कि वह सब कुछ को भूलकर गली-गली घूमता उनका संदेश देता फिरता है. मैं अपने नगर-वासियों से एक बात अपनी ओर से कहना चाहता हूं. वह यह कि इस मण्डली का एक भी कार्यक्रम ऐसा नहीं हुआ—चाहे वह नगर संकीर्तन हो, चाहे प्रवचन, चाहे ध्यान—जिसमें कि मा आनन्द मधु ने यह न कहा हो कि यह नगर तीर्थ है, आप भाग्यशाली हैं कि आप यहां बसते हैं. पत्रकार वार्ता के समय मा ने कहा कि मैं इस नगर में बसने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रणाम किये जाने योग्य समझती हूं. तो मैं अपने नगरवासियों से विनती करता हूं कि वे इन वचनों को सोये-सोये न सुनें, वरन् जागें. ताकि बाद में हमें यह न कहना पड़े कि हम नहीं, प्रणाम किये जाने योग्य तो आप ही हैं जो प्रभु को पहचाना और उनके संदेश को दुनिया में पहुंचाया. मुझे पूरी आशा है कि जहां अनेक पुरानी बातें गलत सिद्ध होती जा रही हैं वहीं "दिये तले अंधेरा" वाली पुरानी कहावत भी हमारे नगर में गलत सिद्ध हो जायगी. ऐसी आशा इसलिए भी बंधती है कि जिन्होंने भगवान श्री के यहां रहते कभी उन्हें सम्मान नहीं दिया, स्वीकृति नहीं दी, सहयोग नहीं दिया, उन्हें सुना नहीं, उल्टे आलोचना की, वे भी आज उनके शिष्यों को सम्मान व सहयोग दे रहे हैं. हमारे नगर में उन्हें समझने वालों की संख्या निरंतर बढ़ रही है, ऐसा समझने का एक कारण यह भी है कि गत चार दिनों में ३८ नये मित्र (स्त्री-पुरुष) संन्यास ग्रहण किये. मैं नगरवासियों के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूं कि वे प्रवचन के समय अपूर्व शांति बनाए रखे और सारा कार्यक्रम Pin-Drop-silence में सम्पन्न हुआ.

१० फरवरी को मण्डली कटनी के लिए विदा हुई. अब तो रेलवे स्टेशन पर गेरुए ही गेरुए दिखलाई पड़ रहे हैं. सब भाव-विभोर हैं विदा के

इस क्षण. जो इतना आनन्द लुटाते थे वे ही आज चले जा रहे थे ! फिर आने के आमंत्रण एवं आश्वासन के साथ विदा. ट्रेन चल दी. 'भगवान श्री रजनीश की' : 'जय'.

एक संध्या मीटिंग में न्यूयार्क के स्वामी अमृत पथिक हिन्दी में लगभग २० मिनट तक बोलते रहे कि मैं भगवान श्री के सम्पर्क में कैसे आया. उन्होंने बताया कि भगवान श्री से मिलकर जिस आनन्द को मैं अनुभव कर रहा हूं उसे शब्दों में बताये जाने का कोई उपाय नहीं है. अक्सर वे अभिव्यक्ति की असमर्थता पर (हिन्दी भाषा के कारण नहीं वरन् अनुभूतियों की गहराई के कारण) हंस पड़ते थे. उन्होंने अपने गेरुए वस्त्रों की ओर संकेत करते हुए कहा : 'इन कपड़ों के पहले मैं घुलाम था, अब बहुत स्वतन्त्र अनुभव करता हूं. एक दिन इनके साथ बड़ी मजे की बात हुई. स्वामी दयाल भारती ने पूछा : 'What is your qualification ?' (अर्थात् आपकी शैक्षणिक योग्यता क्या है?) स्वामी अमृत पथिक ने हिन्दी में कहा : "मैं कालेज में पढ़ा इसलिए बेवकूफ हो गया."

८फरवरी को अमरीका की मा योग आस्था व इंगलैण्ड के स्वामी योग समर्पण भी आ गए. मा योग आस्था ने बताया कि वे भारत दर्शन-शास्त्र की शिक्षा हेतु आई थीं, परन्तु भगवान श्री से मिलने के बाद अब कोई भी डिग्री लेने की इच्छा नहीं है. डिग्री की बात ही अब तो हास्यास्पद लगती है. ... इटली के स्वामी मंगलतीर्थ को पीलिया (Jaundice) हो गया और वे नर्सिंग होम में भर्ती थे. मित्र मिलने जाते तो वे अपने प्रेम को इस तरह प्रगट करते—"मैं भाग्यशाली हूं कि जबलपुर में बीमार पड़ा. कितने मित्र हैं यहां ! कितने प्रेमी नित्य प्रति मिलने व देखभाल के लिए आते हैं.

अंत में, थोड़ी-सी चर्चा जबलपुर के मित्रों की : वैसे तो जबलपुर के सभी प्रेमियों ने हर तरह से सहयोग किया परन्तु श्री भीकमचन्द जी के अथक श्रम व श्री खण्डेलवाल जी के सपरिवार सहयोग की विशेषरूप से सराहना करता हूं. अब अधिक बोर न करके, रजनीशम् शरणम् गच्छामि.

—स्वामी अगेह भारती
जेड-२१७ । सी, अपर लाइन्स
जबलपुर (म०प्र०)

संन्यास की सुवास :

डा० सेठ गोविंददास के जीवन में

भारत के वरिष्ठ राजनीतिज्ञ, सम्प्रति संसद सदस्य एवं मूर्धन्य साहित्यकार डा० सेठ गोविन्ददास भगवान श्री रजनीश की अस्तित्वगत अंतर्जीवन-दृष्टि से पिछले अनेक वर्षों से प्रभावित रहे हैं.

इसका प्रत्यक्ष प्रमाण अभी स्वामी चैतन्य भारती संकीर्तन मंडली के नगर-भ्रमण के समय मिला. उन्होंने नव-संन्यास के अंतर्गत मा आनन्द मधु की साक्षी में भगवान श्री द्वारा प्रेरित साधुता का संकल्प लिया और उनका नवीन नाम हुआ : 'साधु-गोविंद वल्लभ.'

❀❀❀

नई ज्योतियां ! दिव्य वाणी ! जीवन संगीत से आलोकित !

नई साज सज्जा में

भगवान श्री रजनीश के विचारों की आध्यात्मिक

त्रैमासिक संकलन पत्रिका

ज्योति शिखा

संपादक—श्री महीपाल मूल्य ८) वार्षिक

(निवेदन : कागज, प्रिंटिंग, पोस्टेज आदि में हुई वृद्धि के कारण विवश होकर हमें वार्षिक शुल्क में वृद्धि करना पड़ी है।)

संपर्क : जीवन जागृति केन्द्र, ३१, इजरायल मोहल्ला, भगवान भुवन, मस्जिद बंदररोड, बम्बई–९

Phone : 327618

५. **पुस्तकों की बिक्री**-पुस्तकों को अधिक से अधिक बेचकर घर-घर में आप छोटी-छोटी पुस्तक पहुंचा सकते हैं. इस तरह भी आप इस पवित्र कार्य में सहयोग दे सकते हैं.

६. **प्रकाशन**-आपके गांव में आने वाले तथा दैनिक, साप्ताहिक व मासिक पत्र व पत्रिकाओं में श्री रजनीश के प्रवचन पुस्तकों से चूनकर छपवा सकते हैं, जिससे कि अधिक से अधिक लोगों तक उनके विचारों की ज्ञान गंगा पहुंच सके.

७. **पर्यटन**-हर महिने श्री रजनीश परिवार के मित्रों का पर्यटन आप अपने आस-पास के कोई धार्मिक स्थल या पिकनिक स्पाट पर रख सकते हैं और इस तरह सब लोग एक साथ मिलकर ध्यान, कीर्तन टेप-कार्यक्रम, अभ्यास वर्तुल (स्टडी सर्कल) जैसे कार्यक्रम रख सकते हैं.

८. **कीर्तन मंडली**-कम से कम माह में एक बार स्थानीय मन्दिर या किसी भी स्थल पर सब मित्र मिलकर कीर्तन का कार्यक्रम रख सकते हैं.

९. **प्रभु-चिकित्सा**-हर गांव व हर मोहल्ले में प्रभु-चिकित्सा का प्रयोग भी बड़ी सरलता से प्रारंभ किया जा सकता है. और उससे लोगों को अधिकाधिक लाभ पहुंचाया जा सकता है.

इसके अलावा बहुत से कार्यक्रम आप अपनी बुद्धि व क्षमता से कर सकते हैं. कुछ ऐसे नये प्रयोए भी किये जा सकते हैं, जो इस महायज्ञ को आगे बढ़ाने में लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं.

आप सबका संपूर्ण सहयोग व सक्रिय उत्साह ही केन्द्र को शक्ति व क्षमता प्रदान कर सकता है, जिससे व्यक्ति को शान्ति व सारे समाज को एक नई क्रान्ति की दिशा दी जा सकती है.

संपर्क सूत्र :

साधु ईश्वर समर्पण,
मंत्री : जीवन जागृति केन्द्र,
३१, इजरायल मोहल्ला,
भगवान भुवन, मस्जिद बंदर रोड,
बंबई : ९ फोन : ३२७६१८

स्वामी सत्य बोधि सत्व,
जीवन-जागृति केन्द्र,
खाडिया चार रास्ता,
अहमदाबाद–१
फोन : २४०८३

"परमात्मा तक पहुंचने के लिए संसार को बनाओ सीढ़ी. संसार को दुश्मन मत बनाओ, बनाओ सीढ़ी. चढ़ो उस पर, उठो उससे. उससे ही उठकर परमात्मा को छुओ. और संसार सीढ़ी बनने के लिए है."

● रजनीश के प्रणाम

बुलबुल

अप्रेल १९७२